राष्ट्रिय संस्कृत संस्थानम्
नवदेहली

गङ्गानाथ झा केन्द्रीय संस्कृत विद्यापीठ ग्रन्थमाला

॥ ४३ ॥

पंजाबी-संस्कृत-पाठमाला

द्वितीय भाग

शिवकुमार मिश्र

शैलकुमारी मिश्रा

बनमाली बिश्वाल

पंजाबी-संस्कृत-पाठमाला

द्वितीय भाग

ਪੰਜਾਬੀ-ਸੰਸਕ੍ਰਿਤ-ਪਾਠਮਾਲਾ

ਦੂਤਿਅ ਭਾਗ

प्रधान सम्पादक

डॉ० गयाचरण त्रिपाठी

आचार्य

लेखक

डॉ० शिवकुमार मिश्र

प्रोफेसर

डॉ० शैलकुमारी मिश्र

वरिष्ठ प्रवक्ता

डॉ० बनमाली बिश्वाल

वरिष्ठ प्रवक्ता

श्रीगङ्गानाथ-झा-केन्द्रीय-संस्कृत-विद्यापीठ

चन्द्रशेखर आज़ाद पार्क, इलाहाबाद-२११००२

१९९६

Rashtriya Sanskrit Sansthan

(Under the auspices of the Ministry of Human Resources Development, Govt. of India)

New Delhi

•

Ganganatha Jha Kendriya Sanskrit Vidyapitha

TEXT SERIES

No. 43

•

General Editor

Dr. G. C. Tripathi

•

Punjābi-Sanskrit-Pāṭhamālā

Part II

by

Prof. Dr. S. K. Mishra

Dr. Shail Kumari Mishra

Dr. Banamali Biswal

ALLAHABAD

1996

राष्ट्रियसंस्कृतसंस्थानम्
(केन्द्रीयमानवसंसाधनविकासमन्त्रालयस्याङ्गभूतम्)
देहली

गङ्गानाथझाकेन्द्रीयसंस्कृतविद्यापीठग्रन्थमाला
त्रिचत्वारिंशत्प्रसूनम्

—•—

प्रधानसम्पादकः
डॉ० गयाचरण त्रिपाठी

—•—

पंजाबी-संस्कृत-पाठमाला

द्वितीयो भागः

—•—

लेखकाः
प्रो० डॉ० शिवकुमार मिश्रः
डॉ० शैलकुमारी मिश्रा
डॉ० बनमाली बिश्वालः

—•—

गङ्गानाथझाकेन्द्रीयसंस्कृतविद्यापीठम्
चन्द्रशेखर आज़ाद पार्क,
प्रयागः–२११००२
१९९६

प्रकाशकः
डॉ० गयाचरण त्रिपाठी
प्राचार्यः
गङ्गानाथझाकेन्द्रीयसंस्कृतविद्यापीठम्
चन्द्रशेखर आज़ाद पार्क
इलाहाबाद-२११००२

●

●

मूल्यम्

978-93-83135-70-1

●

मुद्रकः
शाकुन्तल-मुद्रणालयः
३४, बलरामपुर हाउस
इलाहाबाद-२११००२

FOREWORD

We are happy to place in the hands of the learners of Sanskrit the second and the last Volume of our Punjabi Sanskrit Pāṭhamālā which marks the end of a Pilot Project which we undertook some sixteen years ago with a view to develop a simplified method of learning/teaching Sanskrit Language and Grammar. As explained in the earlier volumes of this series, the main idea behind this Project was to evolve specialised courses of Sanskrit for various linguistic regions of India. The guiding principle behind this Project was the observation that the teachers and the students of the various linguistic groups in India face different kinds of problems with regard to the vocabulary and the grammatical structure of Sanskrit, but, at the same time, have certain advantages over the others, both of which facts owe their origin to the vocabulary and the structure of the language spoken by the students.

It was, therefore, decided first to prepare a Glossary the words of Sanskrit origin in a particular language and then to evolve a Sanskrit course using these words as the basic vocabulary of the course to be prepared for that linguistic region. Punjabi was chosen for the pilot project and a Punjabi-Sanskrit Glossary was published by the Vidyapeetha in the year 1987. This Glossary which was released by Dr. Shankar Dayal Sharma, the present President of India, has been highly acclaimed by the scholars. The first Volume of the Pāṭhamālā based on the vocabulary of this Glossary was published in 1992 and this is the second and the final Volume of the series.

Both the Pāṭhamālās contain together sixtytwo lessons and attention has been paid for a proper gradation

of the subject matter and the language. The various grammatical elements of Sanskrit have been explained in a very simple, coherent and mutually related manner and the characteristics of the mother tongue of the learner have always been kept in mind. Sometimes the rules of Sanskrit grammar have also been explained in relation to the Punjabi language. The total duration of the course (of both parts) is of 124 hours, spread out over a maximum of 4 months' period. Good resultshave been achieved wherever the lessons of these Pāṭhamālās have been used by way of experiment on the students of secondary (8th-9th) classes. We hope that these Pāṭhamālās can also be used for self study by intelligent students of mature age.

With the publication of this Volume of Pāṭhamālā, the pilot project for the simplification of Sanskrit grammar entrusted to our Linguistics Department is over and it is now for the scholars to assess its utility. I feel extremely grateful to Prof. Shiv Kumar Mishra who has successfully completed this project taking great pains in collaboration with his colleagues Dr (Smt) Shail Kumari Mishra and Dr. Banmali Biswal, both Senior Lecturers in the Vidyapeetha. It is a matter of great satisfaction that this academic endeavour has now come to an end. Congratulating the Research Officers involved in the completion of this Project, I cherish the hope that this project may inspire many such projects in future so that Sanskrit may be learnt in a simplified manner tailored to the needs of and the linguistic capabilities of its learners.

The Proprietors of the Shakuntal Mudranalaya deserve my special thanks for arranging to print Punjabi matter here in Allahabad by procuring types from Punjab and Delhi through compositors especially trained for this purpose.

Allahabad
Date : 22-3-96

G. C. Tripathi
Principal

प्राक्कथन

पंजाबी-भाषा-भाषी शिक्षित प्रौढ़ों को सरल पद्धति से संस्कृत-शिक्षण की प्रस्तुत योजना के उद्‌घाटन-समारोह में मुख्य अतिथि के रूप में वक्तव्य देते हुए तत्कालीन लोकसभाध्यक्ष माननीय बलराम जाखड़ ने कहा था कि 'योजनाएँ आरम्भ तो होती हैं, पर अधिसंख्य अपूर्ण ही रह जाती हैं'। हमें हर्ष है कि पंजाबी-संस्कृत-पाठमाला-द्वितीय-भाग के इस प्रकाशन के साथ गुरुवाणी से देववाणी-शिक्षण की यह योजना परिपूर्ण हुई है। प्रेमी पाठकों को स्मरण दिलाऊँ कि संस्कृत-शिक्षण की इस योजना की पूर्व कड़ी के रूप में 'पंजाबी-संस्कृत-शब्दकोश' एवं 'पंजाबी-संस्कृत-पाठमाला-प्रथमभाग' का प्रकाशन पूर्व ही हो चुका है।

सरल विधि से संस्कृत-शिक्षण के लिए प्रचलित अनेक पाठचर्याओं, पाठचक्रमों एवं उन पर निर्मित संस्कृत-पाठ्य-पुस्तकों अथवा पाठमालाओं के साथ प्रस्तुत योजना के पाठचक्रम पर निर्मित 'पंजाबी-संस्कृत-पाठमाला' के उभय भागों की तुलना करने पर सुधी पाठकों को यह समझते देर नहीं लगेगी कि इन पाठमालाओं की क्या विशेषताएं हैं तथा किन अर्थों में ये पाठमालाएं, प्रचलित अन्य पुस्तकों/पाठमालाओं से भिन्न हैं। इस संदर्भ में पाठमाला के प्रथम-भाग की भूमिका में विस्तार से चर्चा की जा चुकी है। इस पर यहाँ कुछ कहना पिष्टपेषण-मात्र होगा। जिज्ञासु पाठक उभय भागों को मिलाकर पढ़ें। इस पाठचक्रम में प्रथम (आरंभिक) स्तर एवं द्वितीय (उच्च) स्तर पर 62 काल-खण्डों में समाप्य, 31+31 कुल 62 पाठ बनाये गये हैं, जिनमें 100 व्याकरण-विन्दु क्रम से सिखलाये गये हैं। प्रत्येक काल-खण्ड दो घण्टे की अवधि का होगा। इस प्रकार यह शिक्षण-योजना कुल 62 काल-खण्डों, 62 पाठों तथा 124 घण्टों में सम्पन्न किये जाने की अपेक्षा रखती है।

साररूप में कहा जा सकता है कि प्रस्तुत पाठमालाओं की सर्वोपरि विशेषता इनकी शब्दावली एवं व्याकरण-बिन्दुओं का सम्पूर्णतया नियन्त्रित

व श्रेणीकृत होना है, जो संस्कृत-शिक्षण के मूल उद्देश्यों की संप्राप्ति में साक्षात् उपयोगी है। इनके सकल अभ्यास और प्रश्न उद्देश्याधारित हैं। इन पाठों के द्वारा शिशिक्षुओं को मात्र भाषातत्त्वों (Linguistic contents) का ज्ञान कराया गया है। भाषा-ज्ञान के पश्चात् संस्कृत-साहित्य का ज्ञान तो वे स्वतः प्राप्त कर सकेंगे। इन पाठों में 'सरलतम से कठिनतम' शिक्षण-विधि का पदे पदे निर्वाह करने का यत्न किया गया है। कहना नहीं होगा कि संस्कृत-शिक्षण की जो विधि या सरणि प्रथम-भाग में अपनायी गई है, उसी का अनुसरण द्वितीय-भाग में भी किया गया है। सोपान-क्रम सन्तुलित एवं वैज्ञानिक है अत एव सुकर व सुखद बन पड़ा है। द्वितीय-भाग में प्रथम की अपेक्षा अभ्यास तथा प्रश्न अधिक हैं। हमारा विश्वास है कि 'संस्कृत-भाषा जटिल है' इस प्रवाद का परिहार किया जा सकेगा और शिशिक्षु बिना आंसू के संस्कृत सीख सकेंगे।

पंजाबी-संस्कृत-पाठमाला-प्रथम-भाग की भूमिका के पृष्ठ–xiii पर प्रस्तुत शिक्षण-योजना/पाठचक्रम के कतिपय उद्देश्य दर्शाए गए हैं। इन पाठमालाओं के द्वारा उनमें से अधिसंख्य उद्देश्य की संप्राप्ति की जा सकेगी, ऐसा हमारा विश्वास है। स्थानीय गुरुगोविन्द सिंह खालसा कन्या इण्टर कालेज की अष्टमी एवं नवमी कक्षा की छात्राओं का (जिनका संस्कृत विषय नहीं है) प्रस्तुत पाठमालाओं द्वारा नमूने के तौर पर संस्कृत-शिक्षण कराया गया। परिणाम उत्साहवर्धक रहा। आवश्यकता है इन पाठमालाओं द्वारा वाञ्छित काल तक संस्कृत-शिक्षण की।

आभार

हमारा भाषानुभाग, दिल्ली के प्रोफेसर श्री श्रीधर वासिष्ठ का हार्दिक आभार स्वीकार करता है, जिन्होंने इस ग्रन्थ के हिन्दी-भाग का पंजाबी भाषा में अनुवाद किया है तथा इसके पाठों का संस्कृत-भाषा-शिक्षण की दृष्टि से निरीक्षण भी किया है। देश-विदेश के शिक्षा एवं भाषा-जगत् के विख्यात हस्ताक्षर एवं इस विद्यापीठ के प्राचार्य, परम आदरणीय, डॉ० गयाचरण त्रिपाठी के प्रति भाषानुभाग श्रद्धावनत है, जिनके कुशल निर्देशन और शासन में पंजाबी भाषा-भाषी शिक्षित प्रौढ़ों की यह सम्पूर्ण योजना अंकुरित, पल्लवित, कुसुमित, विकसित व परिपूर्ण हुई। अपने सहयोगियों—डॉ० श्रीमती शैलकुमारी मिश्रा एवं डॉ० बनमाली बिश्वाल—

दोनों ही वरिष्ठ प्रवक्ताओं के प्रति आभार के दो टकसाली शब्द कहकर पाठमाला के उभय भागों की निर्मिति में विहित उनकी वैदुष्यपूर्ण शैक्षिक मनोवैज्ञानिक दृष्टि व अविरत श्रम का अवश्य ही अवमूल्यन करना नहीं चाहूँगा। सौहार्द्रपूर्ण सहयोग तथा श्रम एवं सावधानी से पुस्तक-मुद्रण के लिए हम शाकुन्तल मुद्रणालय के प्रबन्धक श्री उपेन्द्र त्रिपाठी के भी हृदय से आभारी हैं।

एक प्रेमी समीक्षक ने इस योजना के मूल उद्देश्यों से सर्वथा हटकर प्रथम-भाग में प्रयुक्त पंजाबी भाषा के कतिपय विवादास्पद शब्दों के लेखन व प्रचलन पर टिप्पणी करते हुए सम्पूर्ण योजना को बन्द कराने तक का सुझाव दे डाला था। पर हम 'दिङ्नागानां पथि परिहरन् स्थूल-हस्तावलेपान्' की नीति का परिपालन करते हुए अपने लक्ष्य की ओर और भी उत्साह से बढ़ते रहे। उत्साह बढ़ाने के लिए हम उनके भी ऋणी हैं।

'गच्छतस्स्खलनं क्वापि भवत्येव प्रमादतः' को आगे रखकर हम सुधी पाठकों को स्वस्थ सम्मतियों की अवश्य ही प्रतीक्षा करेंगे।

गङ्गानाथ झा केन्द्रीय संस्कृत विद्यापीठ
चन्द्रशेखर आजाद पार्क
इलाहाबाद

प्रो० शिवकुमार मिश्र
अध्यक्ष
भाषानुभाग

विषय-सूची

संकेत-सूची

गु० मु०	=	गुरुमुखी
दे० ना०	=	देवनागरी
पुं०	=	पुंल्लिङ्ग
नपुं०	=	नपुंसकलिङ्ग
स्त्री०	=	स्त्रीलिङ्ग
प्र०	=	प्रत्यय
सर्व०	=	सर्वनाम
प्र० पु०	=	प्रथम पुरुष
म० पु०	=	मध्यम पुरुष
वि० लिङ्	=	विधिलिङ्
उ० पु०	=	उत्तम पुरुष
ए० व०	=	एकवचन
ब० व०	=	बहुवचन
पृ० सं०	=	पृष्ठ संख्या

प्र०	=	प्रथमा
द्वि०	=	द्वितीया
तृ०	=	तृतीया
च०	=	चतुर्थी
पं०	=	पञ्चमी
ष०	=	षष्ठी
स०	=	सप्तमी
सं०	=	सम्बोधन

द्वात्रिंशः पाठः

ਸ਼ਤਰੀ ਪ੍ਰਤੇ ਇਸਤਰੀ॰ ਦੁਤੀਆ ਅਤੇ ਤ੍ਰਿਤੀਆ ਵਿਭਕਤੀ।

शतृ प्रत्यय स्त्री॰ द्वितीया और तृतीया विभक्ति।

पतिगृहं गच्छन्तीं शकुन्तलां कण्वः प्रबोधयति।

पठतीः ताः छात्राः अध्यापकः उपादिशत्।

रङ्गशालायां नृत्यन्तीं नर्तकीं दर्शकाः प्रशंसन्ति।

काश्यां वैदेशिकाः पर्यटकाः गङ्गायां तरतीः नौकाः पश्यन्ति।

पूजावसरे हसन्तीं बालिकां माता वारयति।

गायतीः शिष्याः आचार्यः स्वरं शिक्षयति।

राजपथे धावन्तीं भागिनेयीं मातुलः आह्वयति।

पततीः लताः दृष्ट्वा खगाः नीडान् विहाय उड्डीयन्ते।

चरन्त्या धेनुना क्षेत्रं प्रविश्य शस्यं विनष्टम्।

वने चरन्तीभिः अजाभिः शृगालः दृष्टः।

गच्छन्त्या मया मार्गे पतितः भिक्षुकः दृष्टः।

ताभिः तरन्तीभिः बालिकाभिः यमुनापारं कृतम्।

कम्पन्त्या हरितया लतया उद्यानस्य शोभावृद्धिः भवति।

खेलन्तीभिः छात्राभिः छात्राः पराजिताः।

कुप्यन्त्या देवतया पुरुषः अभिशप्तः।

गायन्तीभिः गायिकाभिः वीणा वादिता।

ਸ਼ਬਦਕੋਸ਼ (शब्दकोशः)—

प्र-बुध् (णिच्)	समझाना	ਸਮਝਾਣਾ
पर्यटक	यात्री	ਮੁਸ਼ਾਫਿਰ
उप-दिश्	उपदेश देना	ਉਪਦੇਸ਼ ਦੇਣਾ
रङ्गशाला	नाट्यगृह	ਸਟੇਜ
वैदेशिक	विदेशी	ਵਿਦੇਸ਼ੀ
भागिनेयी	भांजी	ਭਾਣਜੀ
मातुल	मामा	ਮਾਮਾ
उत्-डीङ्	उड़ना	ਉਡਨਾ
शस्य	फसल	ਅਨਾਜ
शृगाल	सियार	ਗੀਦੱੜ
कुप्	क्रोध करना	ਗੁੱਸਾ ਕਰਨਾ
अभिशप्त	शाप से ग्रस्त	ਜਿਸਨੂੰ ਸਰਾਫ ਦਿੱਤਾ ਹੋਇਆ

ਨਿਰਦੇਸ਼ (निर्देशः)—

1. ਕਿਸੇ ਵੀ ਧਾਤ ਨਾਲ ਸ਼ਤਰੀ ਪ੍ਰਤੇ ਦਾ 'ਅੱਤ' ਬਚਦਾ ਹੈ। ਪੁਲਿੰਗ ਵਿੱਚ 'ਅੱਤ' ਦਾ 'ਅੰਨ' ਤੇ ਇਸਤਰੀ ਲਿੰਗ ਵਿੱਚ 'ਅੰਤੀ' ਤੇ ਨਪੁੰਸਕ ਲਿੰਗ ਵਿੱਚ 'ਅੱਤ' ਬਾਕੀ ਰਹਿ ਜਾਂਦਾ ਹੈ।
किसी भी धातु के साथ शतृ प्रत्यय का 'अत्' अवशिष्ट रहता है। पुंलिङ्ग में 'अत्' का 'अन्', स्त्रीलिङ्ग में 'अन्ती' तथा नपुंसकलिङ्ग में 'अत्' शेष रह जाता है।

गम्	+	शतृ	पुं०	—	गच्छन्
"		"	स्त्री०	—	गच्छन्ती
"		"	नपुं०	—	गच्छत्
लिख्	+	शतृ	पुं०	—	लिखन्
"		"	स्त्री०	—	लिखन्ती
"		"	नपुं०	—	लिखत्

ਵਿਆਕਰਣ (व्याकरणम्)—

शतृ० स्त्री०

	ए० व०	व० व०
द्वितीया वि०	गच्छन्तीम्	गच्छतीः
तृतीया वि०	गच्छन्त्या	गच्छन्तीभिः

ਅਭਿਆਸ (अभ्यासः)—

1. ਹੇਠ ਲਿਖੀ ਧਾਤੂਆਂ ਵਿੱਚੋਂ ਸ਼ਤਰੀ ਪ੍ਰਤੇ ਵਾਲੇ ਇਸਤਰੀ ਲਿੰਗ ਸ਼ਬਦ ਬਣਾ ਕੇ ਦੁਤੀਆ ਵਿਭਕਤੀ ਇੱਕ ਬਚਨ ਵਿੱਚ ਰੂਪ ਲਿਖੋ—
निम्नलिखित धातुओं से शतृ प्रत्ययान्त स्त्रीलिग शब्द बनाकर द्वितीया विभक्ति एकवचन में रूप लिखें—
पठ्, गम्, रुद्, खाद्, धाव्, चर्, वह्।

2. ਬ੍ਰੈਕਟ ਵਿੱਚ ਦਿੱਤੇ ਗਏ ਧਾਤੂਆਂ ਵਿੱਚੋਂ ਸ਼ਤਰੀ ਪ੍ਰਤੇ ਵਾਲੇ ਠੀਕ ਪਦ ਬਣਾ ਕੇ ਖਾਲੀ ਸਥਾਨ ਭਰੋ—
कोष्ठक में दिये गये धातुओं से शतृ प्रत्ययान्त उपयुक्त पद बनाकर रिक्त स्थान भरें—
(रुद्) ··· ··· ··· ··· मातरं पुत्रः प्रबोधयति।
(नृत्) ··· ··· ··· ··· स्वसारं भ्राता प्रशंसति।
(हस्) ··· ··· ··· ··· पत्नीं पतिः कारणं पृच्छति।
(चर्) ··· ··· ··· ··· धेनुभिः मार्गः भ्रष्टः।
(भज्) ··· ··· ··· ··· वालिकाभिः देवी पूजिता।

3. ਬ੍ਰੈਕਟ ਵਿੱਚ ਦਿੱਤੇ ਹੋਏ ਠੀਕ ਪਦਾਂ ਨਾਲ ਖਾਲੀ ਸਥਾਨ ਭਰੋ—
कोष्ठक में दिये गये उपयुक्त पद से रिक्त स्थान भरें—
(1) ··· ··· ··· ··· गायिकां पश्य (गायन्तीं / गायन्त्या)।
(2) ··· ··· ··· ··· धेनुना पत्राणि खादितानि (भ्रमन्ती/भ्रमन्त्या)।

(3) ··· ··· ··· ··· नौकया जनाः पारम् अगच्छन्
(तरन्त्या / तरन्तीम्)

(4) ··· ··· ··· ··· छात्राभिः पथिकः अध्वा पृच्छ्यते
(गच्छन्तीं / गच्छन्तीभिः)

4. ਹੇਠ ਲਿਖੇ ਸ਼ਬਦਾਂ ਦੀ ਵਿਭਕਤੀ ਪਛਾਣੋ—
निम्नलिखित पदों की विभक्ति पहचानिए—
वदन्त्या, खादतीः, चलन्ती, हसन्तीभिः, स्वपन्त्या, चरन्तीभिः, पश्यन्तीं, पिवतीः ।

5. ਹੇਠ ਲਿਖੇ ਪਦਾਂ ਦੀ ਮੂਲ ਧਾਤੋਂ ਲਿਖੋ—
निम्नलिखित पदों की मूल धातुओं का निर्देश करें—
पिवन्तीं, पचन्त्या, गच्छन्तीः, स्वपन्तीभिः, भजन्तीं, पश्यन्तीभिः, रुदतीः, तिष्ठन्त्या ।

6. ਹੇਠ ਲਿਖੇ ਸ਼ਤਰੀ ਪ੍ਰਤੇ ਵਾਲੇ ਸ਼ਬਦਾਂ ਦਾ ਤ੍ਰਿਤੀਆ ਵਿਭਕਤੀ ਇੱਕ ਬਚਨ ਦਾ ਰੂਪ ਬਣਾ ਕੇ ਵਾਕਾਂ ਵਿੱਚ ਪ੍ਰਯੋਗ ਕਰੋ—
निम्नलिखित शतृ प्रत्ययान्त शब्दों का तृतीया विभक्ति एकवचन में रूप वनाकर वाक्य में प्रयोग करें—
वदन्ती, स्मरन्ती, सेवन्ती, कुर्वतीः, वन्दन्ती, पठन्ती, नृत्यन्ती ।

7. ਹੇਠ ਲਿਖੇ ਦੂਤੀਆ ਵਿਭਕਤੀ ਵਾਲੇ ਪਦਾਂ ਨੂੰ ਤ੍ਰਿਤੀਆ ਵਿਭਕਤੀ ਵਾਲੇ ਪਦਾਂ ਵਿੱਚ ਬਦਲੋ—
निम्नलिखित द्वितीया विभक्त्यन्त पदों को तृतीया विभक्त्यन्त पदों में परिवर्तित करें—
चलतीः, लिखन्तीं, गच्छतीः, पिवन्तीं, ददतीं, तरन्तीम् ।

8. ਹੇਠ ਲਿਖੇ ਪਦਾਂ ਦਾ ਬਚਨ ਬਦਲ ਕੇ ਵਾਕਾਂ ਵਿੱਚ ਪ੍ਰਯੋਗ ਕਰੋ—
निम्नलिखित पदों का वचन-परिवर्तन करके वाक्यों में प्रयोग करें—

उपदिशन्तीभिः, कुप्यन्त्या, स्मरन्तीं, श्रृण्वतीः, खेलतीः, पृच्छन्तीभिः, प्रबोधयन्त्या, उपविशतीः ।

9. ਆਪਣੀ ਭਾਸ਼ਾ ਵਿੱਚ ਅਨੁਵਾਦ ਕਰੋ—

अपनी भाषा में अनुवाद करें—

वेगेन गच्छन्तीं सुषमां माता आह्वयति ।

रक्षकः उद्याने क्रीडतीः बालिकाः अभिकुप्यति ।

संस्कृतं पठन्तीभिः छात्राभिः आन्दोलनं कृतम् ।

गीतं गायन्त्या मात्रा पुत्रः प्रबोधितः ।

गायन्तीं गायिकां दर्शकाः प्रशंसन्ति ।

10. ਸੰਸਕ੍ਰਿਤ ਵਿੱਚ ਅਨੁਵਾਦ ਕਰੋ—

ਦੂਰਦਰਸ਼ਨ ਵਿੱਚ ਧਾਰਾਵਾਹਿਕ ਵੇਖਦੀ ਹੋਈ ਕੁੜੀ ਨੂੰ ਮਾਂ ਸੱਦਦੀ ਹੈ ।

ਗਾਣਾ ਗਾਂਦੀ ਹੋਈ ਲੜਕੀ ਨੇ ਨਾਚ ਕੀਤਾ ।

ਤੈਰਦੀ ਹੋਈ ਕੁੜੀਆਂ ਨੇ ਨਦੀ ਪਾਰ ਕੀਤੀ ।

ਖਿਲਦੀ ਹੁਈ ਕਲੀਆਂ ਨੂੰ ਨਾ ਤੋੜੋ ।

ਘਾਹ ਖਾਂਦੀ ਹੋਈ ਗਾਂ ਨੂੰ ਅਸੀਂ ਵੇਖਿਆ ।

संस्कृत में अनुवाद करें—

दूरदर्शन में धारावाहिक देखती हुई कन्या को माँ बुलाती है ।

गाना गाती हुई बालिका ने नृत्य किया ।

तैरती हुई बालिकाओं ने नदी पार की ।

खिलती हुई कलियों को मत तोड़ो ।

घास खाती हुई गाय को हमने देखा ।

यदीच्छसि वशीकर्तुं जगदेकेन कर्मणा ।
परापवादशस्येभ्यः चरन्तीं गां निवारय ।।

त्रयस्त्रिंशः पाठः

ਸ਼ਤਰੀ ਪ੍ਰਤੇ (ਪੁਲਿੰਗ ਇਸਤਰੀ ਲਿੰਗ) ਸ਼ਬਦਾ ਦਾ ਹੋਰ
ਵਿਭਕਤੀਆਂ ਵਿੱਚ ਪ੍ਰਚਲਿਤ ਰੂਪ ।

शतृ प्रत्ययान्त (पुं० स्त्री०) शब्दों का अन्य
विभक्ति में प्रचलित रूप ।

आश्रमे जपते मुनये नमः ।
वेदं पठद्भ्यः ब्राह्मणेभ्यः यजमानः धनं ददाति।
वने अटतः व्याघ्रात् मृगः बिभ्यति ।
वायुना प्रकम्पितेभ्यः वृक्षेभ्यः पक्वानि फलानि पतन्ति।
क्षेत्रे कार्यं कुर्वतः श्रमिकस्य स्वेदबिन्दून् पश्य ।
पर्यटतां यात्रीणाम् इमानि वस्तुजातानि सन्ति ।
हसति शिशौ जनाः अतिशयं मोदन्ते।
धावत्सु छात्रेषु मोहिन्दरः श्रेष्ठः धावकः ।
रे वीथिषु पलायन् चौर ! तिष्ठ, तिष्ठ ।
अस्तंगतः सूर्यः । भोः गां चारयन्तः गोपालाः! गृहं गच्छत।
श्वसुरालयं गच्छन्त्यै दुहितायै माता वस्त्रादिकं प्रयच्छति।
प्राङ्गणे कूजन्तीभ्यः चटकाभ्यः गृहस्वामिनी अन्नं विकरति।
कुप्यन्त्याः प्रशासिकायाः कर्मचारिणः भीताः सन्ति।
कम्पन्तीभ्यः लताभ्यः पुष्पाणि झीर्यन्ति ।
नृत्यन्त्याः तस्याः नृत्याङ्गनायाः नाम स्वर्णरेखा अस्ति।
प्रवहन्तीनां नदीनां जलं स्वच्छं भवति ।

तीव्रेण प्रवहन्त्यां धारायां नौका न्यमज्जत् ।
क्षेत्रे बीजानि वपन्तीषु श्रमिकासु कृष्णा कुशला ।
हे कार्यं कुर्वन्त्यः श्रमिकाः ! समयः संजातः, सम्प्रति गृहं गच्छत ।
हे कुप्यन्ति मानिनि ! कोपाद् विरम ।

ਸ਼ਬਦਕੋਸ਼ (शब्दकोशः)—

यजमान	यज्ञकर्ता	ਜੱਗ ਕਰਨ ਵਾਲਾ
अट्	घूमना	ਘੁੰਮਣਾ
प्र–कम्प्	कांपना	ਕੰਬਣਾ
स्वेद–बिन्दु	पसीने की बूंद	ਪਸੀਨੇ ਦੀ ਬੂੰਦ
वीथी	गली	ਗਲੀ
अस्तंगत	अस्त	ਅਸਤ ਹੋਇਆ
दुहिता	पुत्री	ਧੀ
प्र–यच्छ्	देना	ਦੇਣਾ
वि–कृ (किर्)	विखेरना	ਵਿਖੇਰਨਾ
प्राङ्गण	आंगन	ਅੰਗਣ
चटका	चिड़िया (गौरैया)	ਚਿੜੀ
झृष्	(फूलों या पत्तों का) झरना या गिरना	ਫੁੱਲਾਂ ਦਾ ਝੜਨਾਂ ਜਾਂ ਡਿੱਗਣਾ
नि–मस्ज् (निमज्ज)	डूबना	ਡੁੱਬਣਾ
वप्	बोना	ਵੀਜਣਾ

ਨਿਰਦੇਸ (निर्देशः)—

1. ਸ਼ਤਰੀ ਪ੍ਰਤੇ ਵਾਲੇ ਸ਼ਬਦਾਂ ਦੇ ਰੂਪ ਪੁਲਿੰਗ ਵਿੱਚ ਹਲੰਤ ਸ਼ਬਦ 'ਭਵਤ' ਦੀ ਤਰ੍ਹਾਂ ਅਤੇ ਇਸਤਰੀ ਲਿੰਗ ਵਿੱਚ 'ਨਦੀ' ਦੀ ਤਰ੍ਹਾਂ ਚਲਦੇ ਹਨ ।
शतृ प्रत्ययान्त शब्दों के रूप पुंलिग में हलन्त शब्द 'भवत्' के समान तथा स्त्रीलिंग में 'नदी' के समान चलता है ।

ਵਿਆਕਰਣ (व्याकरणम्)—

पठत्—पुंलिंग

	ए० व०	ब० व०
च०	पठते	पठद्भ्यः
पं०	पठतः	पठद्भ्यः
ष०	पठतः	पठताम्
सं०	पठति	पठत्सु
सम्बो०	हे पठन्	हे पठन्तः !

पठत्—स्त्रीलिंग

	ए० व०	ब० व०
च०	पठन्त्यै	पठन्तीभ्यः
पं०	पठन्त्याः	पठन्तीभ्यः
ष०	पठन्त्याः	पठन्तीनाम्
स०	पठन्त्याम्	पठन्तीषु
सम्बो०	हे पठन्ति !	हे पठन्त्यः !

ਅਭਿਆਸ (अभ्यासः)—

1. ਹੇਠ ਲਿਖੇ ਪਦਾਂ ਦੇ ਮੂਲ ਧਾਤੂ ਪਛਾਣੋ—
   निम्नलिखित पदों की मूल धातु पहचानिए—
   अध्यापयतः, प्रवहन्त्याम्, यच्छन्त्यै, नमस्कुर्वतीभ्यः, कुर्वतीषु, श्रृण्वत्सु, चारयन्त्यः, अटताम् ।

2. ਹੇਠ ਲਿਖੇ ਪਦਾਂ ਦੀ ਵਿਭਕਤੀ ਅਤੇ ਬਚਨ ਪਛਾਣੋ—
   निम्नलिखित पदों की विभक्ति तथा वचन पहचानें—
   हसत्सु, गच्छताम्, खेलन्तीभ्यः, स्वपन्तीषु, हसते, पठन्तः, जपद्भ्यः, भजन्तीनाम् ।

3. ਬ੍ਰੈਕਟ ਵਿੱਚ ਦਿੱਤੇ ਨਿਰਦੇਸ਼ ਦੇ ਅਨੁਸਾਰ ਹੇਠ ਲਿਖੇ ਸ਼ਬਦਾਂ ਦੇ ਰੂਪ ਲਿਖੋ—

कोष्ठक में दिये गये निर्देश के अनुसार निम्नलिखित शब्दों के रूप लिखिये—

स्खलन्ती	(चतुर्थी बहुवचन)
स्मरन्	(पञ्चमी एकवचन)
धावन्	(प्रथमा बहुवचन)
जपन्ती	(पञ्चमी बहुवचन)
खादन्	(षष्ठी बहुवचन)
नमन्ती	(सप्तमी बहुवचन)
पठन्	(सम्बोधन बहुवचन)
गच्छन्ती	(षष्ठी एकवचन)

4. ਹੇਠ ਲਿਖੇ ਪਦਾਂ ਨੂੰ ਵਾਕਾਂ ਵਿੱਚ ਪ੍ਰਯੋਗ ਕਰੋ—

निम्नलिखित पदों का वाक्यों में प्रयोग करें—

वदन्तं, खादते, पिबन्तीं, हसति, पचन्त्यै, कुप्यन्त्याः, चलत्सु, लिखन्तीनाम् ।

5. ਬ੍ਰੈਕਟ ਵਿੱਚ ਲਿਖੇ ਨਿਰਦੇਸ਼ ਦੇ ਅਨੁਸਾਰ ਹੇਠ ਦਿੱਤੇ ਧਾਤੂਆਂ ਦਾ ਸ਼ਤਰੀ ਪ੍ਰਤੇ ਵਾਲਾ ਰੂਪ ਲਿਖੋ—

कोष्ठक में लिखे गये निर्देश के अनुसार निम्नलिखित धातुओं का शतृ प्रत्ययान्त रूप लिखें—

जप्	(पञ्चमी ए० व०, पुं)
गम्	(सम्बोधन ए० व०, स्त्री०)
खाद्	(चतुर्थी ए० व०, पुं०)
भ्रम्	(षष्ठी ब० व०, स्त्री०)
नम्	(सप्तमी ए० व०, स्त्री०)

क्रीड्	(प्रथमा ए० व०, स्त्री०)
पा	(प्रथमा ब० व०, पुं०)
कृ	(तृतीया ए० व०, स्त्री०)

6. ਹੇਠ ਲਿਖੇ ਪਦਾਂ ਦਾ ਉਸੀ ਲਿੰਗ ਅਤੇ ਉਸੀ ਵਿਭਕਤੀ ਵਿੱਚ ਵਚਨ ਬਦਲੋ—
निम्नलिखित पदों का उसी लिङ्ग तथा उसी विभक्ति में वचन-परिवर्तन कीजिए—
खादन्त्यै, वदद्भ्यः, चलतां, भ्रमन्तीषु, पठति, हसति, शृण्वन्तः, संतरत्सु, पठतः ।

7. ਬ੍ਰੈਕਟ ਵਿੱਚ ਦਿੱਤੀ ਧਾਤੂਆਂ ਤੋਂ ਸ਼ਤਰੀ ਪ੍ਰਤੇ ਵਾਲੇ ਜੋਗ ਰੂਪ ਬਣਾਕੇ ਖ਼ਾਲੀ ਸਥਾਨ ਭਰੋ—
कोष्ठक में दी गई धातुओं से शतृ प्रत्ययान्त उपयुक्त रूप बनाकर रिक्त स्थान भरें—

... ... छात्राणां कः अधिनायकः (क्रीड्) ?
... ... बालकेषु रमेशः ज्येष्ठः (पठ्) ।
... ... व्याघ्रेभ्यः को न बिभेति (गर्ज्) ?
... ... कन्यायां माता स्निह्यति (हस्) ।
... ... बालिकाभिः सह मम पुत्री आगच्छति (धाव्) ।

8. ਬ੍ਰੈਕਟ ਵਿੱਚ ਦਿੱਤੇ ਹੋਏ ਪਦਾਂ ਵਿਚੋਂ ਠੀਕ ਪਦ ਨਾਲ ਖ਼ਾਲੀ ਸਥਾਨ ਭਰੋ—
कोष्ठक में दिये गये पदों में से उपयुक्त पद से रिक्त स्थान भरें—

... ... वानराय फलं देहि (पश्यतां / पश्यते) ।
... ... बालिकासु का श्रेष्ठा (पठन्तीषु/पठन्त्याम्) ?
... ... छात्रेषु कः शीघ्रं लिखति (लिखन्तीषु/लिखत्सु) ?
... ... रमायाः भ्राता अत्रास्ति (गायन्त्याः/गायन्तीः) ।
... ... सिंहाद् जनाः बिभ्यति (भ्रमतः / भ्रमन्तम्) ।

9. ਆਪਣੀ ਭਾਸ਼ਾ ਵਿੱਚ ਅਨੁਵਾਦ ਕਰੋ—

अपनी भाषा में अनुवाद करें—

खादत्सु अस्मासु सतीशः अत्यल्पं खादति ।

रुदतः बालकस्य माता आगच्छति ।

नृत्यन्त्याः नायिकायाः भ्राता तत्र उपविशति ।

चरन्तीभ्यः गोभ्यः गोपालकः जलं ददाति ।

जलं पिबन्तं व्याघ्रं दृष्ट्वा मृगाः पलायिताः ।

10. ਸੰਸਕ੍ਰਿਤ ਵਿੱਚ ਅਨੁਵਾਦ ਕਰੋ—

ਕਮਲਾ ਜਾਂਦੇ ਹੋਏ ਮੁੰਡਿਆਂ ਨੂੰ ਵੇਖ ਰਹੀ ਹੈ ।

ਗਾਂਦੀ ਹੋਈ ਕੀਰਤੀ ਦੀ ਅਵਾਜ ਮਿੱਠੀ ਹੈ ।

ਹੱਸਦੇ ਹੋਏ ਲੋਕਾਂ ਦਾ ਕਸੂਰ ਨਹੀਂ ਹੈ ।

ਨੱਚਦੀ ਹੋਈ ਗੀਤਾ ਨੂੰ ਗੁਰੂ ਨਾਚ ਸਿਖਾਂਦਾ ਹੈ ।

ਖੇਲਦੀ ਹੋਈ ਕਮਲੇਸ਼ ਨੂੰ ਉਸਦੀ ਮਾਂ ਸੱਦਦੀ ਹੈ ।

संस्कृत में अनुवाद करें—

कमला जाते हुए बालकों को देख रही है ।

गाती हुई कीर्ति का स्वर मधुर है ।

हँसते हुए लोगों का दोष नहीं है ।

नाचती हुई गीता को गुरु नृत्य सिखाता है ।

खेलती हुई कमलेश को उसकी माँ बुलाती है ।

गच्छतस्तिष्ठतो वापि जाग्रतः स्वपतोऽपि वा ।
यन्न भूतहितार्थाय तत्पशोरिव चेष्टितम् ।।

ਚਤੁਸ੍ਤ੍ਰਿੰਸ਼ਃ ਪਾਠ

'ਕਤਾ' ਪ੍ਰਤੇ (ਪੁੱਲਿੰਗ, ਨਪੁੰਸਕਲਿੰਗ, ਸਤਰੀਲਿੰਗ) ਦੁਤੀਆਦਿ ਵਿਭਕਤੀ।

'क्त' प्रत्यय (पुं०, नपुं०, स्त्री०) द्वितीयादि विभक्ति ।

अङ्गीकृतं कार्यं सुकृतिनः परिपालयन्ति ।
पूर्वंपठितं पाठम् अवश्यम् आलोचय ।
सरिता कमलपत्रेषु स्थितान् जलकणान् पश्यति ।
सुकृतेन कर्मणा सुफलम् अधिगतम् ।
विदेशं गतैः व्यापारिभिः विपुलं धनम् अर्जितम् ।
द्वारे स्थिताय याचकाय अन्नं देहि ।
गृहम् आगतेभ्यः अतिथिभ्यः आसन्दिकाः दातव्याः ।
हिमाच्छादितात् पर्वतात् नद्यः निर्गच्छन्ति ।
दुःखेन प्राप्तानां वस्तूनां रक्षा यत्नेन कर्तव्या ।
गतस्य विषयस्य नैव चिन्ता कर्तव्या ।
अपगतेषु रत्नेषु तस्य भाजने कः मोहः ?
सतीशः पूर्वदृष्टां पत्रलेखां नाटिकां पुनः पश्यति ।
नवविवाहितया स्नुषया इयं रङ्गवल्ली निर्मिता ।
गृहे निर्मिताभिः पुत्तलिकाभिः बालिकाः क्रीडन्ति ।
मन्दिरे स्थापितायै देवतायै इमानि पूजनद्रव्याणि सन्ति ।
विवाहोत्सवे आगताभ्यः सुमङ्गलीभ्यः
सिन्दूरादिकम् आनय ।
सुनीता नमिताभ्यः लताभ्यः कुसुमानि चिनोति ।
उत्कलप्रदेशात् समागतायाः पद्मजायाः इदं गृहम् ।

कुसुमितानां शाखानाम् आभ्यन्तरात् रामेण सीता दृष्टा ।
पुराणेषु लिखितानां कथानाम् आशयः ग्रहीतव्यः ।
निमज्जितायां नौकायां विंशतिः यात्रिणः आरूढाः आसन् ।
प्रकाशितासु रचनासु भास्करस्य रचना श्रेष्ठा ।
गृहम् आगतं मित्रं दृष्ट्वा मनसि प्रसन्नता अभवत् ।

ਸ਼ਬਦਕੋਸ਼ (शब्दकोशः)—

अङ्गीकृत	स्वीकार किया गया	ਸਵੀਕਾਰ ਕਿਤਾ ਗਿਆ
सुकृतिन्	सत्कार्य करने वाले व्यक्ति	ਚੰਗਾ ਕੰਮ ਕਰਨ ਵਾਲੇ ਲੋਕ
आ-लोच्	आलोचना करना	ਵਿਚਾਰਨਾ
अधि-गम्	प्राप्त करना	ਪ੍ਰਾਪਤ ਕਰਨਾ
अर्जित	अर्जन किया हुआ	ਕਮਾਇਆ ਹੋਇਆ
आसन्दिका	आसन (कुर्सी)	ਆਸਣ (ਕੁਰਸੀ)
स्नुषा	बहू	ਨੂੰਹ
रङ्गवल्ली	रङ्गोली	ਰੰਗੋਲੀ
पुत्तलिका	गुड़िया	ਗੁੱਡੀ
सुमङ्गली	सौभाग्यवती नारी (सुहागिन)	ਸੁਹਾਗਿਣ
चिञ्	चुनना	ਚੁਣਨਾ
आभ्यन्तर	बीच (ओट)	ਵਿੱਚੋਂ
आरूढ	सवार	ਸਵਾਰ
विंशति	बीस	ਵੀਹ

ਨਿਰਦੇਸ਼ (निर्देशः)—

1. 'ਕਤਾ' ਪ੍ਰਤੇ ਦੇ ਬਾਰੇ ਵਿੱਚ ਨਿਰਦੇਸ਼ ਪੋਥੀ ਦੇ ਪਹਿਲੇ ਦੇ ਸਤਰਹਵੇਂ ਪਾਠ ਵਿੱਚੋਂ ਦਿੱਤਾ ਗਿਆ ਹੈ ।
   'क्त' प्रत्यय के विषय में निर्देश पुस्तक के प्रथम भाग के सप्तदश पाठ में दिया गया है ।

ਵਿਆਕਰਨ (व्याकरणम्)—

गत (गम् + क्त)—पुंल्लिग

	ए० व०	ब० व०
द्वि०	गतम्	गतान्
तृ०	गतेन	गतैः
च०	गताय	गतेभ्यः
पं०	गतात्	गतेभ्यः
ष०	गतस्य	गतानाम्
स०	गते	गतेषु
सम्बो०	हे गत !	हे गताः !

पठित (पठ् + क्त)—स्त्रीलिंग

	ए० व०	ब० व०
द्वि०	पठिताम्	पठिताः
तृ०	पठितया	पठिताभिः
च०	पठितायै	पठिताभ्यः
पं०	पठितायाः	पठिताभ्यः
ष०	पठितायाः	पठितानाम्
स०	पठितायाम्	पठितासु
सम्बो०	हे पठिते !	हे पठिताः !

दृष्ट (दृश् + क्त)—नपुंसक लिङ्ग

	ए० व०	ब० व०
द्वि०	दृष्टम्	दृष्टानि

ਨਪੁੰਸਕ ਲਿੰਗ ਵਿੱਚੋਂ ਦੁਤੀਆ ਵਿਭਕਤੀ ਤੋਂ ਬਾਅਦ ਦੇ ਬਾਕੀ ਰੂਪ ਪੁੰਲਿੰਗ ਦੀ ਤਰ੍ਹਾਂ ਚਲਦੇ ਹਨ।

नपुंसक लिङ्ग में द्वितीया विभक्ति के बाद के शेष रूप पुंलिङ्ग की तरह चलते हैं।

ਅਭਿਆਸ (अभ्यासः)—

1. ਹੇਠ ਲਿਖੇ ਪਦਾਂ ਦਾ ਸਿਰਫ ਬਚਨ ਬਦਲ ਕੇ ਵਾਕਾਂ ਵਿੱਚੋਂ ਪ੍ਰਯੋਗ ਕਰੋ—

   निम्नलिखित पदों का केवल वचन परिवर्तित करके वाक्यों में प्रयोग करें—

   दृष्टाम्, गतवति, पठितवता, श्रुतवत्यै, पीतेन, पीतवत्सु, संजाते, कृतवत्यां।

2. ਬ੍ਰੈਕਟ ਵਿੱਚੋਂ ਦਿੱਤੇ ਗਏ ਨਿਰਦੇਸ਼ ਅਨੁਸਾਰ ਹੇਠ ਲਿਖੇ ਪਦਾਂ ਦੀ ਵਿਭਕਤੀ ਬਦਲ ਕੇ ਵਾਕਾਂ ਵਿੱਚ ਪ੍ਰਯੋਗ ਕਰੋ—

   कोष्ठक में दिये गये निर्देश के अनुसार निम्नलिखित पदों का विभक्ति-परिवर्तन करके वाक्यों में प्रयोग करें—

   पठितवतीं (तृतीया), कृतवन्तं (चतुर्थी), श्रुतवत्याः (सप्तमी), दृष्टवता (द्वितीया), उपविष्टासु (षष्ठी), गतवताम् (प्रथमा), श्रुतवान् (सम्बोधन)।

3. ਹੇਠ ਲਿਖੇ ਧਾਤੂਆਂ ਨਾਲ 'ਕਤ' ਪ੍ਰਤੇ ਲਗਾ ਕੇ ਪੁੰਲਿੰਗ ਵਿੱਚੋਂ ਦੁਤੀਆਂ ਵਿਭਕਤੀ ਦਾ ਰੂਪ ਲਿਖੋ—

   निम्नलिखित धातुओं से 'क्त' प्रत्यय लगाकर पुंलिङ्ग में द्वितीया विभक्ति का रूप लिखें—

   स्मृ, दृश्, पठ्, पा, दा, गम्, धाव्, लिख्।

4. ਹੇਠ ਲਿਖੇ ਧਾਤੂਆਂ ਨਾਲ 'ਕਤਾ' ਪ੍ਰਤੇ ਲਗਾ ਕੇ ਇਸਤਰੀ ਲਿੰਗ ਵਿੱਚੇ ਤ੍ਰਿਤੀਆ ਵਿਭਕਤੀ ਦਾ ਰੂਪ ਲਿਖੋ—

निम्नलिखित धातुओं से 'क्त' प्रत्यय लगाकर स्त्रीलिङ्ग में तृतीया विभक्ति का रूप लिखें—

चल्, खाद्, खेल्, श्रु, उप – विश्, पृच्छ्, वद्, पूज्, अर्च् ।

5. ਬ੍ਰੈਕਟ ਵਿਚੋਂ ਦਿੱਤੇ ਹੋਇ ਯੋਗ ਪਦਾਂ ਨਾਲ ਖਾਲੀ ਸਥਾਨ ਭਰੋ—

कोष्ठक में दिये गये उपयुक्त पदों से रिक्त स्थान भरें—

… … … कर्मण: फलं जन: अवश्यं लभते (कृतस्य/कृतायाः)।

… … … जनानां कः स्वागतं विधास्यति (आगतस्य/आगतानां) ?

… … … दुःखस्य निराकरणं कर्तव्यम् (अनागतानां/आगतानाम्) ।

… … … कमलायाः परिधानम् एतत् (गीतवत्याः/गीतवतीम्) ।

… … … कथां पुनः कथयामि (पूर्वश्रुतायाः / पूर्वश्रुताम्) ।

6. ਬ੍ਰੈਕਟ ਵਿਚੋਂ ਦਿੱਤੇ ਧਾਤੂਆਂ ਨਾਲ 'ਕਤਾ' ਪ੍ਰਤਿਆਂਤ ਸ਼ਬਦ ਬਣਾ ਕੇ ਜੋਗ ਵਿਭਕਤਿ ਲਗਾ ਕੇ ਖਾਲੀ ਸਥਾਨ ਭਰੋ—

कोष्ठक में दिये गये धातुओं से 'क्त' प्रत्ययान्त शब्द बनाकर उपयुक्त विभक्ति लगाकर रिक्त स्थान भरें—

(पठ्) … … … … पाठान् श्रावय ।

(वि – गम्) … … … परीक्षायां के प्रश्नाः पृष्टाः ?

(लिख्) … … … … काव्यं सस्वरं पठ्यताम् ।

(श्रु) … … … … कथायाः कः विषयः ?

(धाव्) … … … … बालकस्य किं नाम ?

7. ਹੇਠ ਲਿਖੇ ਪਦਾਂ ਦੀ ਮੂਲ ਧਾਤੂ ਪਛਾਣੋ—
निम्नलिखित पदों की मूल धातु पहचानिये—

पृष्टवतीषु, शासितवतां, पक्वस्य, अनुसृतेभ्यः,
उच्चलितस्य, विस्मृतवतः, भुक्तवत्सु ।

8. ਆਪਣੀ ਭਾਸ਼ਾ ਵਿੱਚ ਅਨੁਵਾਦ ਕਰੋ—
अपनी भाषा में अनुवाद करें—

नहि सुप्तस्य सिंहस्य प्रविशन्ति मुखे मृगाः ।

वृक्षारूढं सर्पमवलोक्य पक्षिणः कोलाहलं कुर्वन्ति ।

हे जलद ! संतप्तानां त्वं शरणम् असि ।

तस्यां गोष्ठ्यां श्रुतस्य विषयस्य चर्चा अस्माकं पुरतः अपि कर्तव्या ।

विगते सम्वत्सरे प्रान्ते महाराष्ट्रे महान् भूकम्पः आगतः ।

9. ਸੰਸਕ੍ਰਿਤ ਵਿੱਚ ਅਨੁਵਾਦ ਕਰੋ ।

ਅਰਜਣ ਨੇ ਜੈਦਰਥ ਦਾ ਵਧ ਕੀਤਾ ।

ਕੁੜਿਆਂ ਸਕੂਲ ਜਾ ਕੇ ਆ ਗਈਆਂ ।

ਡਿੱਗੇ ਹੋਏ ਲੋਕਾਂ ਨੂੰ ਉਠਾਣਾ ਚਹੀਦਾ ਹੈ ।

ਉਸਨੇ ਸੁੰਦਰ ਗੀਤ ਗਾਇਆ ।

ਖਿੜੇ ਹੋਏ ਫੁੱਲਾਂ ਵਿਚੋਂ ਸੁਗੰਧ ਹੈ ।

ਫੁੱਲਾਂ ਨਾਲ ਭਰੀਆਂ ਹੋਈਆਂ ਬੇਲਾਂ ਆਕਰਸ਼ਿਤ ਕਰਦੀਆਂ ਹਨ ।

ਵੇਖੇ ਹੋਏ ਨਾਟਕ ਦਾ ਦੁਬਾਰਾ ਕੀ ਵੇਖਣਾ ।

ਕਿਤਾਬ ਵਿਚੋਂ ਲਿਖੀ ਹੋਈ ਕਵਿਤਾ ਨੂੰ ਪੜ੍ਹੋ ।

सस्कृत में अनुवाद करें—

अर्जुन ने जयद्रथ का वध किया।
लड़कियाँ विद्यालय जाकर आ गईं।
गिरे हुए लोगों को उठाना चाहिए।
उसने सुन्दर गीत गाया।
खिले हुए पुष्पों में सुगन्ध है।
पुष्पों से भरी हुई लताएँ आकर्षित
करती हैं।
देखे हुए नाटक को पुनः क्या देखना ?
पुस्तक में लिखी हुई कविता को पढ़ो।

कण्टकस्य च भग्नस्य दन्तस्य चलितस्य च।
अमात्यस्य च दुष्टस्य मूलादुद्धरणं वरम्।

पञ्चत्रिंशः पाठः

ਵਿਸ਼ੇਸ਼ਣ (ਪੁੰ०, ਇਸਤ੍ਰੀ०, ਨਪੁੰ०) ਪ੍ਰਚਲਿਤ ਵਿਭਕਤਿ ।

विशेषण (पुं०, स्त्री०, नपुं०) प्रचलित विभक्ति ।

शिशुः धावन्तम् अश्वं दूरात् पश्यति ।

शवरी रामाय वनात् मधुराणि वदरीफलानि आनीतवती ।

वधूः रक्तां शाटिकां परिधाय आगतवती ।

ग्रीष्मर्तौ शीतलेन जलेन तृषा शाम्यति ।

हर्षदः प्रभूतैः धनैः विशालं भवनं क्रीतवान् ।

हरिताभिः लताभिः उद्यानस्य शोभा वर्धते ।

आमन्त्रितायै देवतायै नैवेद्यं निवेदय ।

विचित्रायाः सृष्टेः गतिरपि विचित्रा ।

इदानीमपि भारते शिक्षितानां नारीणां संख्या न्यूना अस्ति ।

चित्रकलायां मम ज्येष्ठस्य पुत्रस्य महती अभिरुचिः अस्ति ।

सघनानां तरुणामधः पथिकाः उपविश्य सुखम् अनुभवन्ति ।

रुचिकरे भोजने कस्य प्रीतिः न जायते ?

खलेषु जनेषु न कोऽपि विश्वसिति ।

वेगेन प्रवहन्त्यां जलधारायां न किञ्चिदपि तिष्ठति ।

पुष्पितासु लतासु मधुलुब्धाः भ्रमराः गुञ्जन्ति ।

भोः वृद्धपुरुष ! राजमार्गस्य मध्ये
मा चल, वाहनानि आगच्छन्ति ।

अस्यां कक्षायां पञ्चविंशतिः छात्राः पठन्ति ।

भोः क्रीडितवन्त्यः बालिकाः ! युष्मासु रेशमा श्रेष्ठा ।

ਸ਼ਬਦਕੋਸ਼ (शब्दकोशः)—

बदरीफल	बेर	ਬੇਰ
शाटिका	साड़ी	ਸ਼ਾੜੀ
परि–धा	पहनना	ਪਹਣਨਾ
तृषा	प्यास	ਪਿਆਸ
नैवेद्य	भोग लगाने की सामग्री	ਭੋਗ ਲਗਾਨੇ ਦੀ ਚੀਜ਼
महती	अत्यधिक	ਜਿਆਦਾ
प्रवहन्ती	बहती हुई	ਬਹਦੀ ਹੋਈ
मधुलुब्ध	मधु के लोभी	ਸ਼ਹਦ ਦੇ ਲੋਭੀ
पञ्चविंशति	पच्चीस	ਪੱਚੀ

ਨਿਰਦੇਸ਼ (निर्देशः)—

1. ਸੰਸਕ੍ਰਿਤ ਸੰਗਿਆ ਸ਼ਬਦਾ ਦੀ ਤਰ੍ਹਾਂ ਵਿਸ਼ੇਸ਼ਣ ਪਦਾ ਦੇ ਵੀ ਰੂਪ ਚਲਦੇ ਹਨ—

   संस्कृत-संज्ञा की तरह विशेषण-पदों के भी रूप चलते हैं। जैसे—

पुं०	हरितः	हरिताः
नपुं०	हरितम्	हरितानि
स्त्री०	हरिता	हरिताः

ਵਿਆਕਰਣ (व्याकरणम्)—

ਦੂਸਰੀ ਭਸ਼ਾਵਾਂ ਦੀ ਤਰ੍ਹਾਂ ਸੰਸਕ੍ਰਿਤ ਵਿੱਚ ਵੀ ਵਿਸ਼ੇਸ਼ਣ ਕਈ ਤਰ੍ਹਾਂ ਦੇ ਹੁੰਦੇ ਹਨ।

अन्य भाषाओं की तरह संस्कृत में भी विशेषण के कई प्रकार होते हैं।

ਵਿਸ਼ੇਸ਼ਣ ਦੇ ਪਰਕਾਰ (विशेषण के कतिपय प्रकार)—

1. ਸੰਖਿਆਵਾਚਕਵਿਸ਼ੇਸ਼ਣ

संख्यावाचक विशेषण—चत्वारः बालकाः, त्रीणि फलानि ।

2. ਕ੍ਰਮਵਾਚਕ ਵਿਸ਼ੇਸ਼ਣ

क्रमवाचक विशेषण—प्रथमा विभक्ति, प्रथमं दिनम्, प्रथमः पुत्रः ।

3. ਆਵ੍ਰਿਤਿਵਾਚਕ ਵਿਸ਼ੇਸ਼ਣ—ਦੁਗਣਾ, ਤਿਗਣਾ, ਆਦਿ ਆਵ੍ਰਿਤਿਸੂਚਕ ਸ਼ਬਦਾ ਲਈ ਸੰਸਕ੍ਰਿਤ ਵਿੱਚੋ 'ਗੁਣ' ਜਾਂ 'ਗੁਣਿਤ' ਸ਼ਬਦ ਜੋੜੇ ਜਾਂਦੇ ਹਨ ।

आवृत्तिवाचक विशेषण—दुगुना, तिगुना आदि आवृत्तिसूचक शब्दों के लिए संस्कृत में गुण या गुणित शब्दों को जोड़ा जाता है ।

जैसे—अस्य भवनस्य उच्चता तस्मात् त्रिगुणा । अस्यां कक्षायां दशगुणाः छात्राः अधिकाः ।

4. ਗੁਣਵਾਚਕ ਵਿਸ਼ੇਸ਼ਣ—ਜਿੱਥੇ ਵਿਸ਼ੇਸ਼ਣ ਵਿਸ਼ੇਸ਼ਅ ਦੇ ਰੂਪ ਜਾਂ ਗੁਣ ਦਾ ਨਿਸ਼ਚਤ ਗਿਆਨ ਕਰਾਏ ਉੱਥੇ ਗੁਣਵਾਚਕ ਵਿਸ਼ੇਸ਼ਣ ਹੁੰਦਾ ਹੈ ।

गुणवाचक विशेषण—जहाँ विशेषण, विशे । के रूप या गुण का निश्चित ज्ञान कराये, वहाँ गुणवाचक विशेषण होता है ।

जैसे—सा बालिका बुद्धिमती, नीलं कमलम्, अयं बालः चञ्चलः ।

5. ਅਜਹਿੱਤ ਲਿੰਗ ਵਿਸ਼ੇਸ਼ਣ—ਵਿਸ਼ੇਸ਼ਣ ਦਾ ਵਿਸ਼ੇਸ਼ਅ ਦੇ ਅਨੁਸਾਰ ਲਿੰਗ, ਬਚਨ ਤੇ ਵਿਭਕਤੀ ਹੁੰਦੇ ਹਨ, ਪਰੰਤੂ ਕੁੱਝ ਅਜਿਹੇ ਵਿਸ਼ੇਸ਼ਣ ਹੁੰਦੇ ਹਨ ਜਿਨ੍ਹਾਂ ਵਿੱਚੋ ਕੋਈ ਬਦਲਾਵ ਨਹੀਂ ਹੁੰਦਾ ।

अजहल्लिङ्ग विशेषण—विशेषण का विशेष्य के अनुसार लिङ्ग, वचन तथा विभक्ति होती है, किन्तु कुछ ऐसे विशेषण होते हैं, जिनमें कोई परिवर्तन नहीं होता ।

जैसे—वेदाः प्रमाणम्,
भिक्षुकाः दयापात्रम्,
अविवेकः आपदां पदम् ।

ਅਭਿਆਸ (अभ्यासः) —

1. ਹੇਠ ਲਿਖੇ ਪਦਾਂ ਵਿੱਚੋਂ ਵਿਸ਼ੇਸ਼ਣ ਤੇ ਵਿਸ਼ੇਸ਼ਅ ਪਦਾਂ ਨੂੰ ਅਲੱਗ ਕਰੋ—
निम्नलिखित पदों में से विशेषण और विशेष्य-पदों को अलग कीजिए—
क्षुद्रेभ्यः, बालकाय, विस्तृतं, शीतं, धनानि,
मधुराणि, शीतला, फलेषु, सुन्दरी, हरितेन ।

2. ਜੋਗ ਵਿਸ਼ੇਸ਼ਣ ਲਗਾ ਕੇ ਵਾਕ ਪੂਰੇ ਕਰੋ—
उपयुक्त विशेषण लगा कर वाक्य-पूर्ति करें—
... ... वृक्षात् फलं पतति ।
राजा ... ... धनं ददाति ।
वानरः ... ... फलानि खादति ।
भ्रमरः ... ... पुष्पेभ्यः स्पृहयति ।
लतायाम् ... ... पुष्पाणि शोभन्ते ।

3. ਬ੍ਰੈਕਟ ਵਿੱਚ ਲਿਖੇ ਵਿਸ਼ੇਸ਼ਅ ਪਦਾਂ ਨੂੰ ਵਿਸ਼ੇਸ਼ਣਾ ਦੇ ਮੁਤਾਬਕ ਵਿਭਕਤਿ ਲਗਾਓ—
कोष्ठक में लिखे गये विशेष्य-पदों में विशेषणों के अनुरूप विभक्ति लगाइये—
सैनिकः शुष्कां ... ... (नदी) तरति ।
गोपालः कृष्णां ... ... (गो) आनीतवान् ।
बालिका रक्तां ... ... (शाटिका) परिदधाति ।
वानरः विशालात् ... ... (वृक्ष) अवरोहति ।
बालकः पक्वं ... ...(फल) विहाय पुष्पाणि चिनोति ।

4. ਹੇਠ ਲਿਖੇ ਵਿਸ਼ੇਸ਼ਣਾਂ ਤੋਂ ਵਾਕ ਬਣਾਓ—
निम्नलिखित विशेषणों से वाक्य बनायें—
क्षुद्र, प्रभूत, सुन्दर, संक्षिप्त, उष्ण, विशिष्ट, परम, सरल, दीर्घ ।

5. ਹੇਠ ਲਿਖੇ ਵਾਕਾਂ ਵਿੱਚ ਵਿਸ਼ੇਸ਼ਣ ਪਦਾਂ ਨੂੰ ਸ਼ੁੱਧ ਕਰੋ—
निम्नलिखित वाक्यों में विशेषण-पदों को शुद्ध करें—

मम ज्येष्ठेन कन्यया वृत्तिः लब्धा ।
उद्याने सुगन्धेभ्यः पुष्पाणि शोभन्ते ।
सुन्दराणि परिधानं कस्मै न रोचते ?
ग्रीष्मर्तौ शीतलं जलेन स्नानं रोचते ।
मनोरमः इयं पुष्पवाटिका ।

6. ਹੇਠ ਲਿਖੇ ਵਾਕਾਂ ਵਿੱਚ ਵਿਸ਼ੇਸ਼ਅ ਪਦਾਂ ਨੂੰ ਸ਼ੁੱਧ ਕਰੋ—
निम्नलिखित वाक्यों में विशेष्य-पदों को शुद्ध करें—

राजा ब्राह्मणेभ्यः महार्घाणि वस्त्रं ददाति ।
वर्षर्तौ सर्वत्र हरिताः वृक्षः शोभन्ते ।
गृहे वृद्धानां जनस्य आदरः कर्तव्यः ।
वृद्धाः गायकः मञ्चोपरि गायन्ति ।
क्षुद्रेषु जन्तवः दया कर्तव्या ।

7. ਹੇਠ ਲਿਖੇ ਵਿਸ਼ੇਸ਼ਅ ਨਾਲ ਜੋਗ ਵਿਸ਼ੇਸ਼ਣ ਲਗਾ ਕੇ ਉਨ੍ਹਾਂ ਦਾ ਵਾਕਾਂ ਵਿੱਚ ਪ੍ਰਯੋਗ ਕਰੋ—
निम्नलिखित विशेष्यों के साथ उपयुक्त विशेषण लगाकर उनका वाक्यों में प्रयोग करें—

उद्यान, लता, गायक, प्रान्तर, भ्रमर,
कोकिल, नायक, भक्त, जल, नदी ।

8. ਵਿਸ਼ੇਸ਼ਣ ਕਿਸਨੂੰ ਕਹਿੰਦੇ ਹਨ ?
विशेषण किसे कहते हैं ?

9. ਆਪਣੀ ਭਾਸ਼ਾ ਵਿੱਚ ਅਨੁਵਾਦ ਕਰੋ—
अपनी भाषा में अनुवाद कीजिये—

सुचरितः पुरुषः सर्वेषां प्रियो भवति ।
मेधाविषु छात्रेषु गुरवः स्निह्यन्ति ।

वृद्धः शिक्षकः छात्रेभ्यः कुप्यति ।
सुचतुरात् पुरुषात् पौरजनाः बिभ्यति ।
तृषार्त्ताय जनाय जलं दातव्यम् ।

10. ਸੰਸਕ੍ਰਿਤ ਵਿੱਚ ਅਨੁਵਾਦ ਕਰੋ —

ਜਮੁਨਾ ਵਿੱਚ ਵੱਡੇ-ਵੱਡੇ ਕੱਛੂ ਹੁੰਦੇ ਹਨ।
ਅਮੀਰ ਨੇ ਇੱਕ ਵੱਡਾ ਮੰਦਿਰ ਬਣਵਾਇਆ।
ਛੋਟੇ ਸੱਪ ਤੋਂ ਵੀ ਲੋਕ ਡਰਦੇ ਹਨ।
ਕੰਜੂਸ ਆਦਮੀ ਦਾ ਧੰਨ ਵਧਦਾ ਹੈ ।
ਗੰਦੇ ਪਾਣੀ ਨਾਲ ਨਹਾਉਣ ਤੋਂ ਰੋਗ ਹੁੰਦਾ ਹੈ।

संस्कृत में अनुवाद करें—

यमुना में बड़े-बड़े कछुए रहते हैं।
धनिक ने एक विशाल मन्दिर बनवाया।
छोटे साँप से भी लोग डरते हैं।
कृपण व्यक्ति का धन बढ़ता है।
गन्दे पानी में नहाने से रोग होता है।

वदनं प्रसादसदनं सदयं हृदयं सुधामुचो वाचः।
करणं परोपकरणं येषां केषां न ते वन्द्याः॥

षट्त्रिंशः पाठः

ਕ੍ਰਿਆ ਵਿਸ਼ੇਸ਼ਣ ।

क्रिया विशेषण ।

पिता वहिः क्रीडन्तं वालकम् उच्चैः आह्वयति ।
निदाघस्य सायंकाले मन्दं - मन्दं वहति पवनः ।
इयं नववधूः वार्तालापमध्ये ईषत् हसति ।
वेगेन गच्छतः यानात् मार्गे वृक्षाः अपि धावन्तः प्रतिभान्ति ।
आम्रवृक्षात् पक्वम् आम्रफलम् अकस्मात् अपतत् ।
पर्वतारोहिणः पर्वतशिखरात् शनैः शनैः अवतरन्ति ।
शास्त्रेषु कुशलः शिक्षकः सर्वान् विषयान् सम्यक् पाठयति ।
संसारे यशःशरीरेण जनाः चिरं जीवन्ति ।
असत्कार्येण उपार्जितं धनं क्षणं तिष्ठति ।
आगते वसन्ते आम्रवृक्षे कोकिलाः मधुरं गायन्ति ।
अयं बालकः स्खलिताक्षरं वदति,
तस्य वाण्यां स्वाभाविकोऽयं दोषः ।
उद्विग्नः मा भव, अचिरेणैव परीक्षापरिणामः
आगमिष्यति ।

मम माता भोजनं मृदु पचति ।
सुखम् उपविशन्तु, तपोवनं हि अतिथिजनस्य स्वगेहमेव ।
साधु कृतं पुत्र ! साधु रक्षितं हि त्वया कुलयशः ।
साग्रहं भवन्तं प्रार्थयामि, मम कार्यं सम्पादयतु ।

ਸ਼ਬਦਕੋਸ਼ (शब्दकोशः)—

उच्चैः	जोर से	ਜ਼ੋਰ ਨਾਲ
मन्दं	धीरे	ਹੌਲੀ-ਹੌਲੀ
ईषत्	थोड़ा	ਥੋੜ੍ਹਾ
यान	गाड़ी	ਗੱਡੀ
प्रति—भा	मालूम पड़ना	ਪਤਾ ਚਲਣਾ
सम्यक्	अच्छी तरह	ਚੰਗੀ ਤਰ੍ਹਾਂ
चिरं	अधिक समय तक	ਬੜੀ ਦੇਰ ਤੱਕ
असत्कार्य	निन्दित कर्म	ਬੁਰਾ ਕੰਮ
उपार्जित	प्राप्त	ਪ੍ਰਾਪਤ
स्खलिताक्षर	अस्पष्ट अक्षर	ਰੁਕ ਰੁਕ ਕੇ ਬੋਲਣਾ
उद्विग्न	बेचैन	ਘਬਰਾਣਾ
गेह	घर	ਘਰ
साधु	बहुत अच्छा	ਚੰਗਾ
साग्रह	आग्रह के साथ	ਮਿੰਨਤਾ ਨਾਲ
सम्–पद्	सम्पन्न करना	ਪੂਰਾ ਕਰਨਾ

ਨਿਰਦੇਸ਼ (निर्देशः)—

1. ਜੋ ਸ਼ਬਦ ਕ੍ਰਿਆ ਦੀ ਵਿਸ਼ੇਸ਼ਤਾ ਦੱਸਦਾ ਹੈ, ਉਸ ਨੂੰ ਕ੍ਰਿਆ ਵਿਸ਼ੇਸ਼ਣ ਕਹਿੰਦੇ ਹਨ। ਜਿਵੇਂ—'सः मन्दं हसति' (ਉਹ ਹੌਲੀ-ਹੌਲੀ ਹੱਸਦਾ ਹੈ), ਉਹ ਕਿਵੇਂ ਹੱਸਦਾ ਹੈ? ਮੰਦ-ਹੌਲੀ। ਇੱਥੇ 'मन्दं' ਸ਼ਬਦ 'हँसना' ਕ੍ਰਿਆ ਦਾ ਵਿਸ਼ੇਸ਼ਤਾ ਦੱਸਦਾ ਹੈ।

   जो शब्द क्रिया की विशेषता बतलाता है, उसे क्रिया-विशेषण कहते हैं। जैसे—सः मन्दं हसति (वह धीरे हँसता है)। वह कैसे हँसता है? मन्द अर्थात् धीरे। यहाँ 'मन्द' शब्द 'हँसना' क्रिया की विशेषता को बतलाता है। इस वाक्य में 'मन्द' क्रिया-विशेषण है।

2. ਕ੍ਰਿਆ ਵਿਸ਼ੇਸ਼ਣ ਅਵਿਅ ਦੀ ਤਰ੍ਹਾਂ ਹੀ ਹੁੰਦਾ ਹੈ। ਇਸ ਲਈ ਕ੍ਰਿਆ ਵਿਸ਼ੇਸ਼ਣ ਸ਼ਬਦਾ ਦੇ ਰੂਪ ਨਹੀਂ ਚਲਦੇ ਹਨ।

क्रिया-विशेषण अव्यय के समान ही होता है। अतः क्रिया-विशेषण शब्दों के रूप नहीं चलते।

ਕੁਛ ਖਾਸ ਕ੍ਰਿਆ ਵਿਸ਼ੇਸ਼ਣ—

अचिरम् (ਜਲਦੀ)	अकस्मात् (ਅਚਾਨਕ)
अजस्र (ਲਗਾਤਾਰ)	उच्चैः (ਉੱਚੀ-ਉੱਚੀ)
नीचैः (ਹੌਲੀ, ਥੱਲੇ)	परितः (ਚਾਰੋਂ ਪਾਸੇ)
अभितः (ਦੋਨੋਂ ਪਾਸੇ)	एकदा (ਇਕ ਬਾਰ)
पुरतः (ਅੱਗੇ)	बहुधा (ਕਈ ਬਾਰ)
मिथ्या (ਝੂਠ)	पुनः (ਫਿਰ)
पृथक् (ਅਲੱਗ)	प्रतिदिनम् (ਹਰ ਰੋਜ਼)
सहसा (ਅਚਾਨਕ)	समीपम् (ਲੇੜੇਂ)
सम्प्रति (ਇਸ ਵੇਲੇ)	मन्दम् (ਹੋਲੀ)
शीघ्रम् (ਜਲਦੀ)	सदा (ਹਮੇਸ਼ਾ)
शनैः (ਹੌਲੀ)	ऊपरि (ਉੱਪਰ)
सकृत् (ਇਕ ਬਾਰ)	सह (ਨਾਲ)

कुछ प्रमुख क्रिया-विशेषण—

अचिरम् (शीघ्र)	अकस्मात् (अचानक)
अजस्र (अनवरत, लगातार)	उच्चैः (ऊँचा)
नीचैः (नीचा)	परितः (चारों ओर)
अभितः (दोनों ओर)	एकदा (एक बार)
पुरतः (आगे)	बहुधा (अनेक बार)
मिथ्या (मिथ्या)	पुनः (फिर)
पृथक् (अलग)	प्रतिदिनम् (हर रोज)

सहसा (अचानक)	समीपम् (नजदीक)
सम्प्रति (इस समय)	मन्दम् (धीरे)
शीघ्रम् (जल्दी)	सदा (हमेशा)
सकृत् (एक वार)	सह (साथ)

ਅਭਿਆਸ (अभ्यासः)—

1. ਹੇਠ ਲਿਖੇ ਕ੍ਰਿਆ ਵਿਸ਼ੇਸ਼ਣ ਵਾਲੇ ਵਾਕਾਂ ਨੂੰ ਅਲੱਗ ਕਰੋ—
निम्नलिखित में से क्रिया-विशेषणयुक्त वाक्यों को अलग कीजिये—

    सुन्दरः वालकः मधुरं गायति । पुरतः वहति नदी । अतीव चतुरः वालकः । क्षणं विरमति । श्वः अवकाशः अस्ति । क्लिष्टं कार्यम् । सुष्ठु पचति ।

2. ਹੇਠ ਲਿਖੇ ਕ੍ਰਿਆ ਵਿਸ਼ੇਸ਼ਣਾਂ ਦੀ ਸਹਾਇਤਾ ਨਾਲ ਵਾਕ ਬਣਾਓ—
निम्नलिखित क्रिया-विशेषणों की सहायता से वाक्य वनाइये—

    अधुना, इह, अलम्, झटिति, शनैः मन्दं, उच्चैः वेगेन ।

3. ਪਾਠ ਵਿੱਚੋਂ ਆਏ ਕ੍ਰਿਆ ਵਿਸ਼ੇਸ਼ਣਾਂ ਨੂੰ ਛੱਡਕੇ ਕੁਝ ਨਵੇਂ ਕ੍ਰਿਆ ਵਿਸ਼ੇਸ਼ਣ ਲਿਖੋ—
पाठ में आये क्रिया-विशेषणों को छोड़कर कुछ नये क्रिया-विशेषणों को लिखें ।

4. ਜੋਗ ਕ੍ਰਿਆ ਵਿਸ਼ੇਸ਼ਣਾਂ ਨਾਲ ਖਾਲੀ ਥਾਂ ਭਰੋ—
उपयुक्त क्रिया-विशेषणों से रिक्त स्थान की पूर्ति करें—
स्वामी सेवकाय ... ... कुप्यति (अतीव / अन्तरेण) ।
शिशुः ... ... हसति (ईषत् / इतस्ततः) ।
वृक्षात् ... ... पथिकः स्वपिति (अधः / एकदा) ।
छात्रः ... ... उत्थाय उत्तरम् अददात् (झटिति/परितः) ।
ग्रामस्य समीपे ... ... मेला भविष्यति (श्वः / ह्यः) ।

5. ਹੇਠ ਲਿਖੇ ਕ੍ਰਿਆ ਵਿਸ਼ੇਸ਼ਣਾਂ ਦਾ ਅਰਥ ਆਪਣੀ ਭਾਸ਼ਾ ਵਿੱਚ ਲਿਖੋ—
निम्नलिखित क्रिया-विशेषणों का अर्थ अपनी भाषा में लिखिए—

पुनः, पुरतः, उभयतः, पृथक्, उपरि, चिरं, वेगेन,
मन्दं-मन्दं, उच्चैः ।

6. ਕ੍ਰਿਆ ਵਿਸ਼ੇਸ਼ਣ ਅਤੇ ਵਿਸ਼ੇਸਣ ਵਿੱਚ ਕੀ ਫਰਕ ਹੈ ?
क्रिया-विशेषण और विशेषण में क्या अन्तर है ?

7. ਕ੍ਰਿਆ ਵਿਸ਼ੇਸ਼ਣਾਂ ਨੂੰ ਸ਼ੁੱਧ ਕਰੋ—
क्रिया-विशेषणों को शुद्ध कीजिये—

हंसः मधुरं सन्तरति ।
वृक्षस्य उपरि फलं पतति ।
कृष्णः श्वः ग्रामम् अगच्छत् ।
सरिता तदानीं गायति ।
धावकः मार्गे पुरा धावति ।

8. ਹੇਠ ਲਿਖੇ ਕ੍ਰਿਆ ਵਿਸ਼ੇਸ਼ਣਾਂ ਦਾ ਉਲਟਾ ਕ੍ਰਿਆ ਵਿਸ਼ੇਸ਼ਣ ਲਿਖੋ—
निम्नलिखित क्रिया-विशेषणों का विलोम क्रिया-विशेषण लिखिये—

शनैः, पृथक्, सकृत्, अचिरं, पुराः, उच्चैः
मिथ्या, पर्याप्त ।

9. ਸੰਸਕ੍ਰਿਤ ਵਿੱਚ ਅਨੁਵਾਦ ਕਰੋ—

ਬੱਚਾ ਥੋੜਾ ਦੁੱਧ ਪੀਂਦਾ ਹੈ।
ਬੁੱਢਾ ਹੋਲੀ-ਹੋਲੀ ਚਲਦਾ ਹੈ।
ਕਮਲਾ ਬੜਾ ਸੁੰਦਰ ਗਾਂਦੀ ਹੈ।
ਬੱਚਾ ਜੋਰ ਨਾਲ ਰੋਂਦਾ ਹੈ।
ਪੰਛੀ ਇੱਧਰ-ਉੱਧਰ ਉੜਦੇ ਹਨ।

संस्कृत में अनुवाद कीजिये—

शिशु थोड़ा दूध पीता है।
वृद्ध धीरे-धीरे चलता है।
कमला बहुत सुन्दर गाती है।
शिशु जोर से रोता है।
पक्षी इधर-उधर उड़ते हैं।

10. ਆਪਣੀ ਭਾਸ਼ਾ ਵਿੱਚ ਅਨੁਵਾਦ ਕਰੋ—
अपनी भाषा में अनुवाद कीजिये—

वृक्षच्छायासु मृगाः सुखं स्वपन्ति।
सः प्रतिदिनं विद्यालयं गच्छति।
दुष्टः बालकः सत्यं न वदति।
अस्य नाटकस्य मञ्चनम् अधुनैव भविष्यति।
लता मञ्चोपरि तारस्वरेण गायति।

आरम्भगुर्वी क्षयिणी क्रमेण, लघ्वी पुरा वृद्धिमती च पश्चात्।
दिनस्य पूर्वार्धपरार्धभिन्ना छायेव मैत्री खलसज्जनानाम्॥
पठामि संस्कृतं नित्यं वदामि संस्कृतं सदा।
ध्यायामि संस्कृतं सम्यक् वन्दे संस्कृत - मातरम्॥

सप्तत्रिंशः पाठः

ਅਯਾਦਿ ਅਤੇ ਯਣ ਸੰਧੀ।

अयादि तथा यण् सन्धि।

अरसिकेषु कवित्वनिवेदनं कवये न रोचते।

गतदिवसेषु प्रसिद्धा गायिका मंगेशकरोपाह्वा लता पुरस्कृता।

सेनानायकः सैनिकान् अग्रे नयति।

अयम् आयाति कावेरीवारिणा पावनः पवनः।

प्रयागे दर्शनीयं खलु आनन्दभवनम्।

नाविकाः नौकया पथिकान् नद्याः तीरे नयन्ति।

'मृगनयनी' इत्युपन्यासे ग्वालियरराजस्य विशदवर्णनम् अस्ति।

पुत्र! यद्यपि वहु पठितुं नेच्छसि तथापि व्याकरणं पठ।

अद्य समाजे सर्वत्र अत्याचारः वर्धते एव।

गृहागतस्य अतिथेः स्वागतं कर्तव्यम्।

विवाहनिश्चयात् पूर्वं वध्वाचरणमेव विचारणीयम्।

पित्राज्ञां स्वीकृत्य रामः वनं गतवान्।

यद्यपि संस्कृतं सरलं तथाप्यद्य न पठन्ति जनाः।

उपकारस्य प्रत्युपकारं जन्तवः अपि जानन्ति।

प्रत्येकं जीवेषु ईश्वरस्य वासः, तस्मात् न कोऽपि उपेक्षणीयः।

ध्रुवः मात्रनुमत्या तपस्यायै वनम् अगच्छत्।

ਸ਼ਬਦਕੋਸ਼ (शब्दकोशः)—

अरसिक	जो सहृदय न हो	ਜੋ ਸਹਿਰਦੇ ਨਾ ਹੋਵੇ
कवित्व	कवि का भाव	ਕਵੀ ਦਾ ਭਾਵ
गतदिवस	बीता हुआ दिन	ਬੀਤੇ ਹੋਵੇ ਦਿਨ
वारि	जल	ਪਾਣੀ
पावन	पवित्र	ਪਵਿੱਤਰ
पवन	वायु	ਹਵਾ
विशद	विस्तृत	ਲੰਬਾ-ਚੌੜਾ, ਵਿਸਤਾਰ ਪੂਰਵਕ
प्रत्युपकार	उपकार के वदले में	ਉਪਕਾਰ ਦੇ ਬਦਲੇ ਵਿੱਚ
	उपकार करना	ਉਪਕਾਰ ਕਰਨਾ
उपेक्षणीय	तिरस्कार के योग्य	ਅਵਗਹਿਕੀ ਨ ਕਰਨ ਜੋਗ (ਅਪਮਾਨ ਦੇ ਜੋਗ)

ਨਿਰਦੇਸ਼ (निर्देशः)—

1. ਪਦ ਦੇ ਅੰਤ ਵਿੱਚ ਜੇਕਰ 'ए, ऐ, ओ, औ' ਹੋਵੇ ਤਾਂ ਉਨ੍ਹਾਂ ਦਾ ਤਰਤੀਬਵਾਰ अय्, आय्, अव् ਅਤੇ आव् ਹੋ ਜਾਂਦਾ ਹੈ। ਜੇਕਰ ਅਗਲੇ ਪਦ ਦੇ ਸ਼ੁਰੂ ਵਿੱਚ ਕੋਈ ਸਵਰ ਹੋਵੇ। ਇਸ ਸੰਧੀ ਨੂੰ ਅਜਾਦਿ ਸੰਧੀ ਕਹਿੰਦੇ ਹਨ।
   पदान्त में यदि ए, ऐ, ओ, औ हो, तो इनका क्रमशः अय्, आय्, अव् और आव् होता है, यदि पदादि में कोई स्वर हो। इस सन्धि को अयादि सन्धि कहते हैं।

2. ਪਦ ਦੇ ਅੰਤ ਵਿੱਚ ਜੇਕਰ इ-ई, उ-ऊ, ऋ-ॠ ਹੋਵੇ ਤਾਂ ਇਨ੍ਹਾਂ ਦਾ ਤਰਤੀਬਵਾਰ 'य्, व्, र् ਹੋ ਜਾਂਦਾ ਹੈ, ਜੇਕਰ ਪਦ ਦੇ ਸ਼ੁਰੂ ਵਿੱਚ ਕੋਈ ਵਿਜਾਤੀ ਸਵਰ ਹੋਵੇ (ਭਾਵ-ਸਮਾਨ ਸਵਰ ਨਾ ਹੋਵੇ)। ਇਸ ਨੂੰ ਯਣ ਸੰਧੀ ਕਹਿੰਦੇ ਹਨ।

पदान्त में यदि इ-ई, उ-ऊ, ऋ-ॠ हो, तो इनका क्रमशः य्, व्, र् होता है, यदि पदादि में कोई विजातीय स्वर हो अर्थात् समान स्वर न हो। इसे यण्-सन्धि कहते हैं।

ਵਿਆਕਰਣ (व्याकरणम्)—

अयादि-सन्धि

शे	+	अनम्	=	शयनम्
नै	+	अकः	=	नायकः
भो	+	अति	=	भवति
पौ	+	अनम्	=	पावनम्
पो	+	अनः	=	पवनः

यण्-सन्धि

इति	+	आह	=	इत्याह
नदी	+	उदकम्	=	नद्युदकम्
अनु	+	अयः	=	अन्वयः
वधू	+	आचरणम्	=	वध्वाचरणम्
पितृ	+	उपदेशः	=	पित्रुपदेशः

ਅਭਿਆਸ (अभ्यासः)—

1. ਸੰਧੀ ਕਰੋ—
   सन्धि करें—

इति	+	आदि	तस्मै	+	इदम्
रवि	+	उदयः	मातृ	+	उपदेशः
मधु	+	इदम्	मुने	+	ए
सु	+	आगतम्	गुरो	+	ए

2. ਸੰਧੀ ਤੋੜੋ—
सन्धि-विच्छेद करें—
हरये, भूमावयम्, इत्यपि, मध्वरिः, मात्रादेशः, प्रत्युपकारः ।

3. ਬ੍ਰੈਕਟ ਵਿੱਚ ਦਿੱਤੇ ਗਏ ਸੰਧੀ ਯੁਕਤ ਸ਼ੁੱਧ ਸ਼ਬਦਾਂ ਤੇ ਸਹੀ (✓) ਦਾ ਨਿਸ਼ਾਨ ਲਗਾਓ—
कोष्ठक में दिये गये सन्धियुक्त शुद्ध शब्द पर सही (✓) का चिह्न लगायें—

इति	+	उक्त्वा	=	(इत्युक्त्वा/इत्योक्त्वा)
साधु	+	अत्र	=	(साध्वत्र / साध्वात्र)
स्वसृ	+	आदेशः	=	(स्वस्रदेशः/स्वस्रादेशः)
शे	+	अनम्	=	(शयनम् / शेयनम्)
तौ	+	आगतौ	=	(तवागतौ/तावागतौ)

4. ਬ੍ਰੈਕਟ ਵਿੱਚ ਦਿੱਤੇ ਗਏ ਸ਼ੁੱਧ ਸੰਧੀ ਵਿਛੇਦਾਂ ਤੇ ਸਹੀ (✓) ਦਾ ਨਿਸ਼ਾਨ ਲਗਾਓ—
कोष्ठक में प्रदत्त शुद्ध सन्धि-विच्छेदों पर सही (✓) का चिह्न लगायें—

नयति	=	(नै + अति / ने + अति)
तावेतौ	=	(तौ + एतौ / तै + एतौ)
कस्मायिदम्	=	(कस्मात् + इदं / कस्मै + इदम्)
अप्यत्र	=	(अपि + अत्र / अप्य + अत्र)
गुर्वादि	=	(गुरो + आदि / गुरु + आदि)
भ्रात्राज्ञा	=	(भ्रात्रे + आज्ञा / भ्रातृ + आज्ञा)

5. ਯਣ ਸੰਧੀ ਅਤੇ ਅਯਾਦਿ ਸੰਧੀ ਵਿੱਚ ਕੀ ਫਰਕ ਹੈ ? ਉਦਾਹਰਣ ਸਹਿਤ ਲਿਖੋ ।
यण्-सन्धि तथा अयादि-सन्धि में क्या अन्तर है ? सोदाहरण लिखिये ।

6. ਹੇਠ ਲਿਖੇ ਸੰਧੀ ਯੁਕਤ ਪਦਾਂ ਵਿੱਚੋਂ ਕਿਹੜੇ ਯਣ ਸੰਧੀ ਤੇ ਕਿਹੜੇ ਅਯਾਦਿ ਸੰਧੀ ਹਨ ?—

निम्नलिखित सन्धि-युक्त पदों में से कौन यण्-सन्धि तथा कौन अयादि-सन्धि हैं, स्पष्ट करें—

वध्वाज्ञा, भ्रात्रर्थम्, रावणः, देव्यत्र,
बालावागतौ, अस्मायिदम्, नायकः, नाविकः ।

7. ਹੇਠ ਲਿਖੇ ਪਦਾਂ ਵਿੱਚ ਸੰਧੀ ਦੇ ਕਾਰਣ ਪਦਾਂ ਨੇ ਆਪਣੀ ਪਛਾਣ ਗਵਾ ਦਿੱਤੀ ਹੈ । ਤੁਸੀਂ ਉਨ੍ਹਾਂ ਨੂੰ ਫਿਰ ਉਸੀ ਤਰ੍ਹਾਂ ਲਿਖੋ ਜਿਵੇਂ ਉਹ ਸੰਧੀ ਕਰਨ ਤੋਂ ਪਹਿਲੇ ਸਨ—

निम्नलिखित पदों में सन्धि के कारण पद अपनी पहचान खो चुके हैं । आप पुनः उसी प्रकार लिखें, जैसे सन्धि करने से पूर्व थे ।
जैसे, ताविमौ = तौ + इमौ ।

ताविमौ, सपत्न्यायिदं, मात्राज्ञा, यद्यपि,
गुरावादि, नाविकः, सवित्रुदयः ।

8. 'ਕ' ਕਾਲਮ ਵਿੱਚ ਦਿੱਤੇ ਹੋਏ ਸੰਧੀ ਯੁਕਤ ਪਦਾਂ ਨੂੰ 'ਖ' ਕਾਲਮ ਵਿੱਚ ਦਿੱਤੀ ਹੋਈ ਜੋਗ ਪ੍ਰਕ੍ਰਿਆ ਨਾਲ ਜੋੜੋ—

क–स्तम्भ में प्रदत्त सन्धि-शब्द को ख–स्तम्भ में प्रदत्त उपयुक्त प्रक्रिया के साथ जोड़ें—

क	ख
गायकः	उ > व
सुद्ध्युपास्यः	ऋ > र्
ताविमौ	ऐ > आय्
विश्वादि	औ > आव्
पित्रर्थम्	इ > य्

9. ਸੰਸਕ੍ਰਿਤ ਵਿੱਚ ਅਨੁਵਾਦ ਕਰੋ—

ਰਾਮ ਨੇ ਪਿਤਾ ਦੀ ਆਗਿਆ ਦਾ ਪਾਲਣ ਕੀਤਾ।
ਚੰਗੇ ਆਚਰਣ ਨਾਲ ਮਨੁੱਖ ਦੀ ਉੱਨਤੀ ਹੁੰਦੀ ਹੈ।
ਮਾਂ ਦਾ ਹੁਕਮ ਮੰਨਿਆ ਜਾਣਾ ਚਹੀਦਾ ਹੈ।
ਸੱਚ ਦੀ ਜੈ ਹੁੰਦੀ ਹੈ।
ਠੰਡੀ ਹਵਾ ਸਿਹਤ ਲਈ ਲਾਭਕਾਰੀ ਹੈ।

संस्कृत में अनुवाद करें—

राम ने पिता की आज्ञा का पालन किया।
अच्छे आचरण से मनुष्य की उन्नति होती है।
माता का आदेश पालन होना चाहिये।
सत्य की हमेशा जय होती है।
शीतल पवन स्वास्थ्य के लिए हितकर है।

10. ਆਪਣੀ ਭਾਸ਼ਾ ਵਿੱਚ ਅਨੁਵਾਦ ਕਰੋ—

अपनी भाषा में अनुवाद करें—

तावेव भ्रातरौ स्तः।
रवीन्द्रः गायकः आसीत्।
प्राचार्यः मुख्यातिथेः स्वागतं करोति।
देव्यायिदं पुष्पं निवेदितमस्ति।
भरतेन भ्रात्रादेशः पालितः।

विषादप्यमृतं ग्राह्यं अमेध्यादपि काञ्चनम्।
नीचादप्युत्तमा विद्या स्त्रीरत्नं दुष्कुलादपि॥
ओंकारश्चाथशब्दश्च द्वावेतौ ब्रह्मणः पुरा।
कण्ठं भित्त्वा विनिर्यातौ तस्मान्माङ्गलिकावुभौ॥

अष्टात्रिंशः पाठः

ਵਿਧੀ ਲਿੰਗ ਲਕਾਰ ।

विधिलिङ् लकार ।

सर्वदा सत्यं ब्रूयात्, परं न कदापि अप्रियम् ।
आत्मनः प्रतिकूलानि परेषां न समाचरेत् ।
पञ्चवर्षं यावत् पुत्रं लालयेत्, प्राप्ते षोडशे वर्षे पुत्रे मित्रवत् आचरेत् ।
यत्नतः दुर्जनसङ्गं परित्यजेयुः ।
मद्यपानं कदापि न कुर्युः, यतः तत् व्याधिकरं व्ययकरं चास्ति ।
त्वम् अद्य दीपावल्याः महोत्सवे कालिपूजावसरे च मम गृहम् अवश्यम् आगच्छेः ।
भोजनं स्वास्थ्यकरं स्वादिष्टं च पचेः ।
मम गृहे अद्य यूयं रात्रिभोजनं कुर्यात ।
आयुषः एकमपि क्षणं व्यर्थं नैव यापयेयुः ।
जीवने सततं विद्यामर्थंञ्च चिन्तयेत् ।
वयं स्वदेशस्योत्कर्षाय क्रीडेम, न तु केवलं निजलाभाय एव ।
सर्वे छात्राः अध्यापकैः सह सारनाथं द्रष्टुं गच्छेयुः ।
सारनाथे सुरम्याणि उद्यानानि, संग्रहालयं च दृष्ट्वा सायंकाले गृहं प्रत्यागच्छेम ।
संभाव्यते अद्य विश्वविद्यालये अवकाशो भवेत् ।
उपदिशतु भवान्, कथं भवन्तं प्रसादयेयम् ?
श्रीमन् ! किमहम् अभ्यन्तरम् आगच्छेयम् ?

ਸ਼ਬਦਕੋਸ਼ (शब्दकोशः)—

ब्रू	बोलना	ਬੋਲਣਾ
प्रतिकूल	जो अनुकूल न हो	ਜਿਹਣਾ ਅਨੁਕੂਲ ਨ ਹੋਵੇ
पर	दूसरे लोग	ਦੂਸਰੇ ਲੋਕ
लल्	दुलारना या स्नेह करना	ਲਾਡ਼ ਪਿਆਰ
यत्नतः	प्रयास पूर्वक	ਕੋਸ਼ਿਸ਼ ਨਾਲ
उत्कर्ष	उन्नति	ਤਰੱਕੀ
प्र–सद्	प्रसन्न करना	ਖੁਸ਼ ਕਰਨਾ
अभ्यन्तर	अन्दर	ਅੰਦਰ

ਨਿਰਦੇਸ (निर्देशः)—

1. ਵਿਧੀ (ਆਗਿਆ ਸੰਭਾਵਨਾ, ਬੁਲਾਣਾ, ਪ੍ਰਸ਼ਨ ਅਤੇ ਪ੍ਰਾਥਨਾ ਆਦਿ ਅਰਥਾਂ ਵਿੱਚ ਵਿਧੀ ਲਿੰਗ ਲਕਾਰ ਦਾ ਪ੍ਰਯੋਗ ਹੁੰਦਾ ਹੈ।
   विधि (आज्ञा), सम्भावना, निमन्त्रण, प्रश्न तथा प्रार्थना आदि अर्थों में विधिलिङ् लकार का प्रयोग होता है।

ਵਿਆਕਰਣ (व्याकरणम्)—

'गम्' धातु विधिलिङ्

	ए० व०	बहु० व०
प्र० पु०	गच्छेत्	गच्छेयुः
म० पु०	गच्छेः	गच्छेत
उ० पु०	गच्छेयम्	गच्छेम

ਅਭਿਆਸ (अभ्यासः)—

1. ਜੋਗ ਕ੍ਰਿਆ ਪਦਾਂ ਨਾਲ ਖਾਲੀ ਸਥਾਨ ਭਰੋ—

उपयुक्त क्रियापदों से रिक्त स्थान की पूर्ति करें—

सर्वे प्रातः एव शय्या-त्यागं ……… (करवाम / कुर्युः)।

बालकाः दुर्जनं नहि …………… (अनुसरेयुः/अनुसरेः)।

वयं नाटकं …………………… (पश्येयम् / पश्येम) ।

पुत्रः पितरं …………………… (प्रणमेयम्/प्रणमेत्) ।

कमले ! त्वम् ईश्वरं ……… (पूजये / पूजयेम) ।

2. ਬ੍ਰੈਕਟ ਵਿੱਚ ਦਿੱਤੀ ਗਈ ਧਾਤੂ ਤੋਂ ਵਿਧੀ ਲਿੰਗ ਲਕਾਰ ਦਾ ਰੂਪ ਬਣਾ ਕੇ ਜੋਗ ਕ੍ਰਿਆਪਦਾਂ ਨਾਲ ਖਾਲੀ ਸਥਾਨ ਭਰੋ—

कोष्ठक मे दिये गये धातुओं से विधिलिङ् लकार का रूप बनाकर उपयुक्त क्रियापदों से रिक्त स्थान भरें—

रामः परीक्षायां सम्यक् ……… (लिख्)।

बालकः फलं ……………… (खाद्)।

त्वं वनं ……………………… (गम्)।

वयम् अत्र न ……………… (स्था)।

यूयं जलं न ……………… (पा)।

3. ਹੇਠ ਲਿਖੇ ਧਾਤੂਆਂ ਨਾਲ ਵਿਧੀਲਿੰਗ ਲਕਾਰ ਵਿੱਚ ਉੱਤਮ ਪੁਰਸ਼ ਦਾ ਰੂਪ ਬਣਾ ਕੇ ਵਾਕਾਂ ਵਿੱਚ ਪ੍ਰਯੋਗ ਕਰੋ—

निम्नलिखित धातुओ से विधिलिङ् लकार में उत्तम पुरुष का रूप बनाकर वाक्य में प्रयोग करें—

पठ्, लिख्, खेल्, वद्, चल् ।

4. ਹੇਠ ਲਿਖੇ ਪਦਾਂ ਨਾਲ ਸੰਸਕ੍ਰਿਤ ਵਾਕ ਬਣਾਓ ।

निम्नलिखित पदों से संस्कृत-वाक्य बनाएँ—

धावेत्, आगच्छेत्, पश्येम, पिबेयम्, लिखेयुः ।

5. ਹੇਠ ਲਿਖੇ ਪਦਾਂ ਨੂੰ ਉਸੇ ਵਚਨ ਤੇ ਉਸੇ ਪੁਰਸ਼ ਦੇ ਅਨੁਸਾਰ ਲਟ ਲਕਾਰ ਵਿੱਚ ਬਦਲ ਕੇ ਵਾਕਾਂ ਵਿੱਚ ਪ੍ਰਯੋਗ ਕਰੋ—

निम्नलिखित पदों को यथावचन यथापुरुष लट्-लकार में परिवर्तित करके वाक्य में प्रयोग करें—

पश्येयुः, पिबेः, कुर्यात्, गच्छेयम्, खादेत् ।

6. ਬ੍ਰੈਕਟ ਵਿੱਚ ਦਿੱਤੇ ਨਿਰਦੇਸ਼ ਅਨੁਸਾਰ ਧਾਤੂ ਰੂਪ ਲਿਖੋ—
कोष्ठक में दिये गये निर्देश के अनुसार धातु रूप लिखें—

नृत्	(विधिलिङ्, प्रथमपुरुष बहुवचन)
स्वप्	(वि० लि०, उत्तमपुरुष एकवचन)
वद्	(वि० लि०, मध्यमपुरुष बहुवचन)
चल्	(वि० लि०, प्रथमपुरुष एकवचन)
भक्ष्	(वि० लि०, मध्यमपुरुष एकवचन)
भू	(वि० लि०, उत्तमपुरुष बहुवचन)

7. ਹੇਠ ਲਿਖੇ ਪਦਾਂ ਦੀ ਮੂਲ ਧਾਤੂ, ਲਕਾਰ, ਪੁਰਸ਼ ਅਤੇ ਵਚਨ ਪਛਾਣੋ—
निम्नलिखित पदों के मूलधातु, लकार, पुरुष तथा वचन पहचानिये—

नृत्येः, पश्येत्, स्वपिहि, पिवथ, आगच्छेत्, शृणुयात् ।

8. ਕਿਹੜੇ ਕਿਹੜੇ ਅਰਥਾਂ ਵਿੱਚ ਵਿਧੀਲਿੰਗ ਲਕਾਰ ਦਾ ਪ੍ਰਯੋਗ ਹੁੰਦਾ ਹੈ ? ਉਦਾਹਰਣ ਸਹਿਤ ਲਿਖੋ ।
किन-किन अर्थों में विधिलिङ् लकार का प्रयोग होता है ? सोदाहरण समझाइये ।

9. ਸੰਸਕ੍ਰਿਤ ਵਿੱਚ ਅਨੁਵਾਦ ਕਰੋ—

ਹਰ ਰੋਜ ਸਾਰਿਆਂ ਨੂੰ ਫਲ ਖਾਣਾ ਚਹੀਦਾ ਹੈ ।
ਇਸ ਸਾਲ ਜਿਆਦਾ ਵਰਖਾ ਹੋਣ ਦੀ ਸੰਭਾਵਨਾ ਹੈ ।
ਵਿਦੀਆਰਥੀ ਪ੍ਰੀਖਿਆ ਵਿੱਚ ਗੈਰ ਕਨੂੰਨੀ ਤਰੀਕੇ ਨਾ ਅਪਣਾਉਣ ।

संस्कृत में अनुवाद करें—

प्रतिदिन सबको फल खाना चाहिए।
इस साल अधिक वर्षा होने की संभावना है।
छात्र परीक्षा में अवैध उपाय न अपनायें।
तुम्हें ठण्डे पानी से नहाना चाहिये।
अत्युष्ण भोजन नहीं करना चाहिये।

10. ਆਪਣੀ ਭਾਸ਼ਾ ਵਿੱਚ ਅਨੁਵਾਦ ਕਰੋ—
अपनी भाषा में अनुवाद करें—

छात्राः प्रथमतः व्याकरणं पठेयुः।
सरिता प्रतिदिनं विद्यालयं गच्छेत्।
गणेशचतुर्थ्यां सर्वे गणेशं पूजयेयुः।
वयमद्य रात्रौ अत्रैव तिष्ठेम।
गम्भीरायां नद्यां न कोऽपि सन्तरेत्।

लालयेत् पञ्चवर्षाणि दशवर्षाणि ताडयेत्।
प्राप्ते तु षोडशे वर्षे पुत्रे मित्रवदाचरेत्॥

एकोनचत्वारिंशः पाठः

ਤਵਅਤ ਅਤੇ ਅਨੀਅਰ ਪ੍ਰਤੇ ।

तव्यत् तथा अनीयर् प्रत्यय ।

आश्रममृगोऽयं न हन्तव्यः ।

स्वयं संवर्ध्य विषवृक्षा अपि न छेतव्याः ।

परिहर्तव्यः अस्माभिः मन्दिर - मस्जिद - विवादः ।

स्वार्थाय परेषां हानिः नैव कर्तव्या ।

गुणवत्सु वरेषु कन्याः प्रदातव्याः ।

परिश्रमं कृत्वा परीक्षायां छात्रैः अधिकाः अङ्काः प्राप्तव्याः ।

सति विभवे धनं दातव्यं, भोक्तव्यम्, आपत्कालाय सञ्चयितव्यं च ।

भूकम्पपीडितेभ्यः अन्नानि वस्त्राणि द्रव्याणि च मुक्तहस्तेन दातव्यानि ।

मैसूरनगरं परितः पर्यटकैः चन्दनवनानि अवश्यं द्रष्टव्यानि ।

संवरणीयः लोभः परद्रव्येभ्यः । वसन्ते श्रवणीयाः पिकस्वराः ।

परापवादे चरन्ती वाणी यत्नतः निवारणीया ।

आज्ञा गुरुणाम् अविचारणीया भवति ।

विनीतवेषेन गमनीयं धर्मस्थलम् ।

रुचिकरं भोजनं कर्तव्यं, स्वच्छं जलं च पानीयम् ।

दक्षिणभारते बहूनि अवलोकनीयानि भव्यानि विशालानि च मन्दिराणि सन्ति ।

मन्दबुद्धिछात्रः कदापि नोपेक्षणीयः, अपि तु तेषु उत्साहः वर्धनीयः ।

ਸ਼ਬਦਕੋਸ਼ (शब्दकोशः)—

हन्	मारना	ਮਾਰਨਾ
छिद्	काटना	ਕੱਟਣਾ
परि–हृ	छोड़ना	ਛੱਡਣਾ
सम्–चि	सञ्चय करना	ਇਕੱਠਾ ਕਰਨਾ
सं–वृ	रोकना	ਰੋਕਣਾ
पिक	कोयल	ਕੋਇਲ
परापवाद	दूसरों की निन्दा	ਦੂਸ਼ਰੇ ਦੀ ਨਿੰਦਾ
नि–वृ	निवारण करना	ਨਿਵਾਰਣ ਕਰਣਾ
भव्य	सुन्दर	ਸੁੰਦਰ
उप–ईक्ष्	तिरस्कार या त्याग	ਅਵਗਹਿਲੀ ਜਾਂ ਤਿਆਗ

ਨਿਰਦੇਸ਼ (निर्देशः)—

1. ਕਰਮਵਾਚਅ ਅਤੇ ਭਾਵਵਾਚਅ ਧਾਤੂਆਂ ਨਾਲ ਚਾਹਿਏ ਅਰਥ ਵਿੱਚ ਤਵਅਤ ਪ੍ਰਤੇ ਲਗਾਏ ਜਾਂਦੇ ਹਨ ।

   कर्मवाच्य तथा भाववाच्य में धातुओं से 'चाहिये' अर्थ में तव्यत् एवं अनीयर् प्रत्यय लगाये जाते हैं ।

2. ਇਨਾਂ ਪ੍ਰਤੇਆਂ ਦਾ ਪ੍ਰਯੋਗ ਤਿੰਨਾ ਲਿੰਗਾਂ ਵਿੱਚ ਹੁੰਦਾ ਹੈ । 'तव्यत्' ਦਾ 'तव्य' ਅਤੇ 'अनीयर्' ਦਾ 'अनीय' ਬਾਕੀ ਰਹ ਜਾਂਦਾ ਹੈ । ਜਿਵੇਂ—

   इन प्रत्ययों का प्रयोग तीनों लिङ्गों में होता है । 'तव्यत्' का 'तव्य' और अनीयर् का 'अनीय' शेष रहता है ।

   जैसे—गम् + तव्यत् = गन्तव्य ।

   पुं०—गन्तव्यः, स्त्री०—गन्तव्या, नपुं०—गन्तव्यम् ।

   गम् + अनीयर् = गमनीय ।

   पुं०—गमनीयः, स्त्री०—गमनीया, नपुं०—गमनीयम् ।

ਵਿਆਕਰਣ (व्याकरणम्)—

(पठ्–तव्यत्)

	ਏ० ਵ०	ਬ० ਵ०
(ਪੁੰ०)	पठितव्यः	पठितव्याः
(ਸ੍ਤ੍ਰੀ०)	पठितव्या	पठितव्याः
(ਨਪੁੰ०)	पठितव्यम्	पठितव्यानि

(पठ्–अनीयर्)

	ਏ० ਵ०	ਬ० ਵ०
(ਪੁੰ०)	पठनीयः	पठनीयाः
(ਸ੍ਤ੍ਰੀ०)	पठनीया	पठनीयाः
(ਨਪੁੰ०)	पठनीयम्	पठनीयानि

ਅਭਿਆਸ (अभ्यासः)—

1. ਹੇਠ ਲਿਖੀ ਧਾਤੂਆਂ ਨਾਲ ਤਵਅਤ ਪ੍ਰਤੇ ਲਗਾ ਕੇ ਪੁਲਿੰਗ ਅਤੇ ਇਸਤਰੀ-ਲਿੰਗ ਵਿੱਚ ਰੂਪ ਲਿਖੋ—
   निम्नलिखित धातुओं के साथ तव्यत् प्रत्यय लगाकर पुंल्लिङ्ग तथा स्त्रीलिङ्ग में रूप लिखें—

   लिख्, वद्, नी, गम्, हस् ।

2. ਹੇਠ ਲਿਖੀ ਧਾਤੂਆਂ ਨਾਲ ਅਨੀਅਰ ਪ੍ਰਤੇ ਲਗਾ ਕੇ ਤਿਨ੍ਹਾਂ ਲਿੰਗਾਂ ਵਿੱਚ ਇੱਕ ਵਚਨ ਦੇ ਰੂਪ ਲਿਖੋ—
   निम्नलिखित धातुओं के साथ अनीयर् प्रत्यय लगाकर तीनों लिङ्गों में एकवचन के रूप लिखें—

   पा, चल्, वस्, भक्ष्, सेव् ।

3. ਹੇਠ ਲਿਖੇ ਪਦਾਂ ਨੂੰ ਤਵਅਤ ਪ੍ਰਤਿਆਂਤ ਪਦਾਂ ਵਿੱਚ ਬਦਲੋ—

निम्नलिखित पदों को तव्यत् प्रत्ययान्त पदों में बदलें—

पठनीयम्, सेवनीयः, पानीयम्, दर्शनीया,
दानीयः, स्मरणीयः, शोभनीया, श्रवणीयः।

4. ਹੇਠ ਲਿਖੇ ਪਦਾਂ ਨੂੰ ਅਨੀਅਰ ਪ੍ਰਤਿਆਂਤ ਪਦਾਂ ਵਿੱਚ ਬਦਲੋ—
निम्नलिखित पदों को अनीयर् प्रत्ययान्त पदों में बदलें—

स्मर्तव्यः, श्रोतव्या, त्यक्तव्यम्, लिखितव्यम्,
भोक्तव्या, कर्तव्यः, ध्यातव्यम् ।

5. ਬ੍ਰੈਕਟ ਵਿੱਚ ਦਿੱਤੇ ਗਏ ਸਹੀ ਪਦਾਂ ਨਾਲ ਖਾਲੀ ਜਗ੍ਹਾਂ ਭਰੋ—
कोष्ठक में दिये गये उपयुक्त पदों से रिक्त स्थान की पूर्ति करें—

छात्रेण पुस्तकं ··· ··· ··· ··· ··· (पठितव्या / पठितव्यम्)।
अस्माभिः तादृशानि चलचित्राणि ······ (द्रष्टव्यं/द्रष्टव्यानि)।
ताभिः इदं कार्यं ··· ··· ··· (संपादनीया / संपादनीयम्)।
युष्माभिः दीपावल्यां ग्रामः ... ... (गन्तव्यानि / गन्तव्यः)।
मध्याह्नसमये भोजनं ··· ··· ··· (करणीया / कर्तव्यम्)।

6. ਬ੍ਰੈਕਟ ਵਿੱਚ ਦਿੱਤੀ ਗਈ ਧਾਤੂਆਂ ਨਾਲ ਤਵਅਤ ਪ੍ਰਤੇ ਲਗਾ ਕੇ ਖਾਲੀ ਸਥਾਨ ਭਰੋ—
कोष्ठक में दी गई धातुओं से तव्यत् प्रत्यय लगाकर रिक्तस्थान भरें—

परीक्षायां छात्रैः सावधानतया ··· ··· ··· (लिख्)।
परीक्षाभवने वार्तालापः न ··· ··· ··· (कृ)।
अस्माभिः मातापितरौ ··· ··· ··· ··· ··· (सेव्)।
सर्वैः प्रातः एव शय्या ··· ··· ··· ··· ··· (त्यज्)।
अध्ययन-समये न ··· ··· ··· ··· ··· ··· (खेल्)।

7. ਹੇਠ ਲਿਖੀ ਧਾਤੂਆਂ ਨਾਲ ਤਵਅਤ ਪ੍ਰਤੇ ਲਗਾ ਕੇ ਵਾਕਾਂ ਵਿੱਚ ਪ੍ਰਯੋਗ ਕਰੋ—
निम्नलिखित धातुओं से तव्यत् प्रत्यय लगाकर वाक्य में प्रयोग करें—

दृश्, खाद्, स्था, धाव्, स्ना, चल्, पा।

8. ਅਨੀਅਰ ਪ੍ਰਤੇ ਲਗਾ ਕੇ ਹੇਠ ਲਿਖੇ ਧਾਤੂਆਂ ਦਾ ਵਾਕਾਂ ਵਿੱਚ ਪ੍ਰਯੋਗ ਕਰੋ—
अनीयर् प्रत्यय लगाकर निम्नलिखित धातुओं का वाक्य में प्रयोग करें—

पाल्, रक्ष्, दा, चल्, पूज्, हस्, ताड्।

9. ਆਪਣੀ ਭਾਸ਼ਾ ਵਿੱਚ ਅਨੁਵਾਦ ਕਰੋ—
अपनी भाषा में अनुवाद कोजिये—

गुरोः आज्ञा सर्वदा पालनीया।
स्वार्थं विहाय कार्यं कर्तव्यम्।
सर्वैः गुरुजनाः आदरणीयाः।
सत्काव्यं श्रवणीयं पठनीयं च।
परिहर्तव्यानि निन्दितानि आचरणानि।
धूमपानं ताम्बूलादिकं च व्यसनं न कदापि कर्तव्यम्।
बाणभट्टस्य कादम्बर्याः कथा अवश्यं पठनीया।

10. ਸੰਸਕ੍ਰਿਤ ਵਿੱਚ ਅਨੁਵਾਦ ਕਰੋ—

ਮਾਨੂੰ ਆਪਣੀ ਸੰਸਕ੍ਰਿਤਿ ਦੀ ਰੱਖਿਆ ਕਰਨੀ ਚਹੀਦੀ ਹੈ।

ਵਿਦੀਆਰਥੀਆਂ ਨੂੰ ਅਸ਼ਲੀਲ ਫਿਲਮਾਂ ਨਹੀਂ ਵੇਖਣੀਆਂ ਚਹੀਦੀਆਂ।

ਵੱਡਿਆਂ ਦੀਆਂ ਸਿੱਖਿਆਵਾਂ ਪਾਲਣ ਯੋਗ ਹੁੰਦੀਆ ਹਨ।

ਮਾਂ ਪੂਜਾ ਯੋਗ ਹੁੰਦੀ ਹੈ।

ਮਾਂ ਭੂਮੀ ਦੀ ਰੱਖਿਆਂ ਕਰਨੀ ਚਹੀਦੀ ਹੈ।

संस्कृत में अनुवाद करें—

हमें अपनी संस्कृति की रक्षा करनो चाहिए।

छात्रों को अश्लील चलचित्र नहीं देखना चाहिए।

वड़ों के उपदेश पालनीय होते हैं।

माता पूज्या होती है।

मातृभूमि की रक्षा करनी चाहिए।

द्रातव्यं भोक्तव्यं सति विभवे सञ्चयो न कर्तव्यः।
पश्येह मधुकरीणां सञ्चितमर्थं हरन्त्यन्ये॥
न जातु दुःखं गणनीयं न च निजसौख्यं मननीयम्।
कार्यक्षेत्रे च त्वरणीयं लोकहितं मम करणीयम्॥

चत्वारिंशः पाठः

ਤ੍ਰਿਚ ਅਤੇ ਣਵੁਲ ਪ੍ਰਤੇ ।

तृच् तथा ण्वुल् प्रत्यय ।

ईश्वरः अखिलविश्वस्य कर्ता नियन्ता च।

अभिज्ञानशाकुन्तलस्य नाटकस्य रचयिता महाकविकालिदासः ।

यत्र दर्दुराः वक्तारः भवन्ति तत्र मौनं ही शोभनम् ।

अप्रियस्य सत्यस्य वक्ता श्रोता च दुर्लभः ।

राजनीतौ सच्चरित्राणां नेतृणाम् अभावः दृश्यते ।

इयं आश्रमपादपान् पालयित्री शकुन्तला अद्य पतिगृहं यास्यति ।

अभिनेतृभिः अचिरेणैव धनं यशः च प्राप्ये ।

हितकर्तृणि मित्राणि अङ्गुलिगण्यानि एव भवन्ति ।

विधात्री धर्माणां त्वमसि जननी, हे भगवति !

प्रसिद्धा धाविका पी० टी० उषा स्वर्णपदकैः पुरस्कृता ।

संस्कृतजगति कवयितृणाम् अभावः दृश्यते ।

भारतवर्षे वैदिकधर्मस्य पुनः स्थापकः श्रीशङ्कराचार्य आसीत् ।

दुर्बलघातकोऽयं लोकः, यतः अजापुत्रं बलिं ददाति, नहि सिंहशावकम्।

क्षेत्ररक्षकेषु दलनायकस्य प्रभावः स्पष्टतया दृष्टिगोचरः अभवत्।

दर्शकैः दर्शिकाभिश्च अभिनन्दितः दलनायकः ।

हानिकारकं फलं नैव खादितव्यम् ।

अद्यत्वे विविधानि समाचारदायकानि पत्राणि सन्ति ।

पाचिकया भोजनं सुष्ठु पाचितम् ।

इन्दिरागान्धी कुशला शासिका आसीत् ।

ਸ਼ਬਦਕੋਸ਼ (शब्दकोशः)—

नि-यम्	नियन्त्रित करना	ਕਾਬੂ ਕਰਨਾ
दर्दुर	मेंढक	ਡੱਡੂ
दुहितृ	पुत्री	ਧੀ
अङ्गुलिगण्य	अङ्गुलियों पर गिनने योग्य (अल्प)	ਉਂਗਲਿਆਂ ਉੱਤੇ ਗਿਣਿਆ ਜਾਣ ਜੋਗ (ਥੋੜਾ)
दुर्बल	कमजोर	ਕਮਜ਼ੋਰ
घातक	मारने वाला	ਮਾਰਨ ਵਾਲਾ
अजापुत्र	छाग	ਬੱਕਰਾ
शावक	छोटा शिशु	ਛੋਟਾ ਬੱਚਾ
संमर्द	भीड़	ਭੀੜ
दलनायक	समूह का नेता (कैप्टेन)	ਸਮੂਹ ਦਾ ਨੇਤਾ

ਨਿਰਦੇਸ਼ (निर्देशः)—

1. ਧਾਤੂਆਂ ਤੋਂ ਬਾਅਦ 'ण्वुल्' ਅਤੇ 'तृच्' ਪ੍ਰਤੇ ਲਗਾਏ ਜਾਂਦੇ ਹਨ। 'ण्वुल्' ਦਾ 'अक्' ਅਤੇ 'तृच्' ਦਾ 'तृ' ਬਾਕੀ ਰਹਿੰਦਾ ਹੈ।
धातुओं के पश्चात् 'ण्वुल्' एवं 'तृच्' प्रत्यय लगाये जाते हैं। ण्वुल् का 'अक्' तथा 'तृच्' का 'तृ' शेष रहता है।

2. ਇਹ ਪ੍ਰਤੇ ਧਾਤੂ ਦੁਆਗ ਦੱਸੇ ਕੱਮ ਨੂੰ ਕਰਨ ਵਾਲੇ ਕੇ ਅਰਥ ਵਿੱਚ ਆਉਂਦੇ ਹਨ। ਜਿਵੇਂ—
ये प्रत्यय धातु से सूचित कार्य को करने वाले के अर्थ में होते हैं।
जैसे—कृ + ण्वुल् = कृ + अक् = कारक।
कृ + तृच् = कृ + तृ = कर्तृ ।

3. ਕਾਰਕ ਅਤੇ ਕਰਤ੍ਰੀ ਦਾ ਅਰਥ ਹੈ ਕਰਨ ਵਾਲਾ । ਇਨ੍ਹਾਂ ਦਾ ਰੂਪ ਤਿੰਨਾ ਲਿੰਗਾਂ ਵਿੱਚ ਚਲਦਾ ਹੈ ।
कारक और कर्तृ का अर्थ है 'करने वाला' । इनका रूप तीनों लिङ्गों में चलता है।

ਵਿਆਕਰਣ (व्याकरणम्)—

कर्तृ (कृ + तृच्)

	ए० व०	ब० व०
पुं०	कर्ता	कर्तारः
स्त्री०	कर्त्री	कर्त्र्यः
नपुं०	कर्तृ	कर्तृणि

पाचक (पच् + ण्वुल्)

	ए० व०	ब० व०
पुं०	पाचकः	पाचकाः
स्त्री०	पाचिका	पाचिकाः
नपुं०	पाचकम्	पाचिकानि

ਅਭਿਆਸ (अभ्यासः)—

1. ਹੇਠ ਲਿਖੀ ਧਾਤੂਆਂ ਨਾਲ 'ਣਵੁਲ' ਪ੍ਰਤੇ ਜੋੜੋ—
निम्नलिखित धातुओं से 'ण्वुल्' प्रत्यय लगाइये—

गम्, चल्, नी, दा, हृ, धाव्, पठ् ।

2. ਹੇਠ ਲਿਖੀ ਧਾਤੂਆਂ ਨਾਲ ਤ੍ਰਿਚ, ਪ੍ਰਤੇ ਜੋੜੋ ।
निम्नलिखित धातुओं से 'तृच्' प्रत्यय लगाइये—

कृ, हृ, धृ, गम्, भृ, दा, पच् ।

3. ਹੇਠ ਲਿਖੇ ਸ਼ਬਦਾਂ ਦੇ ਪ੍ਰਕਰਿਤੀ ਅਤੇ ਪ੍ਰਤੇ ਅਲੱਗ-ਅਲੱਗ ਕਰੋ—

निम्नलिखित शब्दों के प्रकृति-प्रत्यय का विभाजन कीजिये—

ग्राहक, धातृ, पाचक, वादक, पूजयितृ, पालक, वक्तृ।

4. ਰੂਪ ਲਿਖੋ—
रूप लिखिये—

गै + ण्वुल्	चल् + ण्वुल्
स्तु + तृच्	कृ + ण्वुल्
ने + तृच्	दा + ण्वुल्

5. ਹੇਠ ਲਿਖੇ ਪਦਾਂ ਦਾ ਵਾਕਾਂ ਵਿੱਚ ਪ੍ਰਯੋਗ ਕਰੋ—
निम्नलिखित पदों का वाक्य में प्रयोग करें—

दाहकः, वाहकः, नेतारः, गोप्ता, पावकः।

6. ਹੇਠ ਲਿਖੀ ਧਾਤੂਆਂ ਨਾਲ ਬ੍ਰੈਕਟ ਵਿੱਚ ਦਿੱਤੇ ਗਏ ਨਿਰਦੇਸ਼ ਅਨੁਸਾਰ ਪ੍ਰਤੇ ਲਗਾਕੇ ਵਾਕ ਬਣਾਓ—
निम्नलिखित धातुओं से कोष्ठक में दिये गये निर्देश के अनुसार प्रत्यय लगाकर वाक्य बनाइये—

पृच्छ् (तृच्) दृश् (ण्वुल्) पा (तृच्)
दा (ण्वुल्) गै (तृच्)।

7. ਜੋਗ ਪਦਾਂ ਨਾਲ ਵਾਕ ਪੂਰੇ ਕਰੋ—
उपयुक्त पदों से वाक्य-पूर्ति करें—

पङ्कजउधासः सुविख्यातः ··· ··· ···(गायकः / नायकः)।
गुरदासमानः ··· ··· ··· ·· अन्यतमः (गायकेषु / धावकेषु)।
लतामङ्गेशकरः सुप्रसिद्धा ··· ··· ···(नायिका / गायिका)।
सीता राजर्षेर्जनकस्य ··· ··· आसीत् (नप्त्री / दुहिता)।
चौरः अपरस्य धनस्य ··· ··· भवति (अपहर्ता / अनुहर्ता)।

8. ਵਾਕ ਸ਼ੁੱਧ ਕਰੋ—

वाक्य शुद्ध करें—

दुहितारः कुलद्वयस्य हिताय भवति ।

पुत्रस्य पुत्रः नप्तारः भवन्ति ।

सैन्येषु सेनानायकः चतुरः भवेयुः ।

सामान्यतः गायकः उदाराः भवन्ति ।

अभिनेता विख्याताः भवन्ति ।

धाविकाः पुरस्कृताः अभवत् ।

9. ਸੰਸਕ੍ਰਿਤ ਵਿੱਚ ਅਨੁਵਾਦ ਕਰੋ—

ਯੁੱਧ ਖੇਤਰ ਵਿੱਚ ਰਥ ਚਲਾਉਣ ਵਾਲੇ ਚਤੁਰ ਹੁੰਦੇ ਹਨ।

ਰਾਜਸਭਾ ਵਿੱਚ ਗਾਣ ਵਾਲਿਆਂ ਨੂੰ ਰਾਜਾ ਧੰਨ ਦਿੰਦਾ ਹੈ।

ਬੇਸਹਾਰਿਆਂ ਦੀ ਰੱਖਿਆ ਕਰਨ ਵਾਲਿਆਂ ਦਾ ਕਲਿਆਣ ਹੁੰਦਾ ਹੈ।

ਸਰਕਾਰ ਪੜ੍ਹਨ ਵਾਲੇ ਵਿਦੀਆਰਥੀਆਂ ਨੂੰ ਵਜ਼ੀਫਾ ਦਿੰਦੀ ਹੈ।

ਮੇਲਾ ਵੇਖਣ ਵਾਲਿਆਂ ਦੀ ਬਹੁਤ ਭੀੜ ਹੈ।

संस्कृत में अनुवाद करें—

युद्धक्षेत्र में रथ चलाने वाले चतुर होते हैं ।

राजसभा में गाने वालों को राजा धन देता है ।

असहायों की रक्षा करने वालों का मंगल होता है ।

सरकार पढ़ने वाले छात्रों को छात्रवृत्ति देती है ।

मेला देखने वालों की अधिक भीड़ है ।

10. ਆਪਣੀ ਭਾਸ਼ਾ ਵਿੱਚ ਅਨੁਵਾਦ ਕਰੋ—
अपनी भाषा में अनुवाद करें—

महाभारतयुद्धेषु अर्जुनः पाण्डवपक्षस्य नायकः आसीत् ।

अनूपजलोटा प्रख्यातः भजनगायकः अस्ति ।

प्रेमचन्दः हिन्दीसाहित्यस्य सुप्रसिद्धः लेखकः आसीत् ।

वयं सर्वे ईश्वरस्य पुत्राः ।

विधातुः सृष्टौ सर्वे प्राणिनः समानाः सन्ति ।

महानुभावसंसर्गः कस्य नोन्नतिकारकः ।
रथ्याम्बु जाह्नवीसंगात् त्रिदशैरपि वन्द्यते ।।

एकचत्वारिंशः पाठः

ਪੂਰਬ ਰੂਪ ਸੰਧੀ ਅਤੇ ਪਰ ਰੂਪ ਸੰਧੀ ।

पूर्वरूप-सन्धि तथा पररूप-सन्धि ।

मकरेण आक्रान्तः गजः अवदत्, हे हरेऽद्य माम् उद्धर ।

हे प्रभोऽस्मान् असन्मार्गात् सन्मार्गं प्रति नय ।

एषः शालमलीतरुः, कोटरेऽस्य अनेके खगाः वसन्ति ।

वत्स ! अभिमन्योऽद्य प्रतिपदा तिथिः, अतः संस्कृतं मा पठ ।

हे साधोऽस्मिन् वर्षे अमरनाथस्य दर्शनार्थं त्वं गमिष्यसि किम् ?

वनेऽत्र हिंसकजन्तवः निवसन्ति ।

मम गृहेऽपि एकः पुस्तकालयः भवेत् ।

प्रारभन्तेऽल्पमेव अज्ञाः, किन्तु कामं व्यग्राः भवन्ति ।

चन्दनतरुः छेदेऽपि कुठारस्य मुखं सुरभितं करोति ।

उमे ! किं त्वं पिनाकपाणिं पतिरूपेऽवाप्तुमिच्छसि ?

धर्माचरणेन शुद्धं जायतेऽन्तःकरणम् ।

सर्वेषामपि कार्याणां कृतेऽस्माभिः उद्योगपरैः भवितव्यम् ।

पतञ्जलिः पाणिनीयसूत्राणि आधारीकृत्य महाभाष्यं विरचितवान् ।

विवाहितायाः सीमन्ते सिन्दूरम् अतीव शोभते ।

मनीषिणः वर्तमानकालेनैव प्रवर्तन्ते ।

मध्याह्ने मार्तण्डस्य किरणानि प्रखराणि भवन्ति ।

हे ईश्वर ! संसारेऽस्मिन् दुःखपीडितान् जनान् रक्ष ।

ਸ਼ਬਦਕੋਸ਼ (शब्दकोशः)—

मकर	मगरमच्छ	ਮਗਰਮੱਛ
शाल्मलीतरु	सेमर (रुई) का वृक्ष	ਸਿੰਬਲ ਦਾ ਰੁੱਖ
कोटर	घोंसला, पेड़ का खोखला भाग	ਢੁੱਡ
प्रतिपदा	अमावास्या या पूर्णिमा के वाद की पहली तिथि	ਮੱਸਿਆ ਜਾਂ ਪੂਰਣਮਾਸੀ ਦੇ ਬਾਅਦ ਦੀ ਤਿੱਥ
मा	नहि	ਨਹੀ
अज्ञ	नासमझ	ਨਾ ਸਮਝ
कामं	पर्याप्त	ਕਾਫੀ, ਜਿਆਦਾ
व्यग्र	घवड़ाना	ਘਬਰਾਣਾ
कुठार	कुल्हाड़ी	ਕੁਹਾੜੀ
पिनाकपाणि	शिव	ਸ਼ਿਵ
अन्तःकरण	मन, बुद्धि तथा चित्त	ਮਨ, ਬੁੱਧੀ ਅਤੇ ਚਿੱਤ
सीमन्त	मांग	ਛੇਕ
प्र—वृत्त	व्यवहार करना	ਵਿਵਹਾਰ ਕਰਨਾ
मार्तण्ड	सूर्य	ਸੂਰਜ
प्रखर	प्रचण्ड या तेज	ਤੇਜ

ਨਿਰਦੇਸ਼ (निर्देशः)—

1. ਜੇਕਰ ਕਿਸੀ ਪਦ ਦੇ ਅੰਤ ਵਿੱਚ 'ए' ਜਾ 'ओ' ਹੋਵੇ ਅਤੇ ਉਸਦੇ ਬਾਅਦ 'अ' ਹੋਵੇ ਤਾਂ 'अ' ਦਾ ਪੂਰਬ ਰੂਪ ਅਰਥਾਤ 'ए' ਜਾਂ 'ओ' ਹੋ ਜਾਂਦਾ ਹੈ ਅਤੇ 'अ' ਦੀ ਜਗ੍ਹਾਂ ਪੂਰਬ ਰੂਪ ਸੂਚਕ ਚਿੰਨ (ऽ) ਲਿਖਿਆ ਜਾਂਦਾ ਹੈ। ਇਹ ਸੰਧੀ ਅਯਾਦਿ ਸੰਧੀ ਦਾ ਅਪਵਾਦ ਹੈ। ਇਸਨੂੰ ਪੂਰਬ ਰੂਪ ਸੰਧੀ ਕਹਿੰਦੇ ਹਨ।

   यदि किसी पद के अन्त में 'ए' या 'ओ' हो और उसके बाद 'अ' हो तो 'अ' का पूर्वरूप अर्थात् ए या ओ हो जाता है और 'अ' के

स्थान में पूर्वरूप की सूचना देने वाला चिह्न (ऽ) रहता है, जिसे अवग्रह कहते हैं। यह सन्धि अयादि सन्धि का अपवाद है। इसे पूर्वरूपसन्धि कहते हैं।

2. ਅਕਾਰਾਂਤ ਉਪਸਰਗ ਦੇ ਬਾਅਦ ਏਕਾਰਾਦਿ ਜਾਂ ਓਕਾਰਾਦਿ ਧਾਤੂ ਆਵੇ ਤਾਂ ਦੋਨਾਂ ਦੀ ਜਗ੍ਹਾਂ ਤੋ ਤਰਤੀਬਵਾਰ 'ਏ' ਅਤੇ 'ਓ' ਹੋ ਜਾਂਦਾਂ ਹੈ। ਇਹ ਵ੍ਰਿਧੀ ਸੰਧੀ ਦਾ ਅਪਵਾਦ ਨਿਯਮ ਹੈ। ਇਸ ਨੂੰ ਪਰ ਰੂਪ ਸੰਧੀ ਕਹਿੰਦੇ ਹਨ। ਜਿਵੇਂ—

अकारान्त उपसर्ग के वाद एकारादि या ओकारादि धातु आवे, तो दोनों के स्थान में क्रमश: 'ए' और 'ओ' हो जाता है। यह वृद्धि सन्धि का अपवाद है। इसे पररूप सन्धि कहते हैं।

जैसे—प्र + एजते = प्रेजते उप + ओषति = उपोषति।

3. ਪਰ ਰੂਪ ਸੰਧੀ ਵਿੱਚ ਹੀ ਦੀਰਘ ਸੰਧੀ ਦੇ ਵੀ ਕੁੱਝ ਅਪਵਾਦ ਰੂਪ ਉਦਾਹਰਣ ਮਿਲਦੇ ਹਨ। ਜਿਵੇਂ—

पररूप सन्धि में हो दीर्घ सन्धि के भी कुछ अपवाद स्वरूप उदाहरण मिलते हैं। जैसे—

कुल + अटा = कुलटा मार्त + अण्ड: = मार्तण्ड:।
पतत् + अञ्जलि: = पतञ्जलि: सीमन् + अन्त: = सीमन्त:।

ਅਭਿਆਸ (अभ्यास:)—

1. ਹੇਠ ਲਿਖੇ ਪਦਾਂ ਵਿੱਚ ਸੰਧੀ ਕਰੋ—

निम्नलिखित पदों में सन्धि करें—

बालो	+	अवदत्
प्रभो	+	अयम्
वने	+	अत्र
शक	+	अन्धु
कर्क	+	अन्धु

2. ਹੇਠ ਲਿਖੇ ਪਦਾਂ ਦਾ ਸੰਧੀ ਛੇਦ ਕਰੋ—
निम्नलिखित पदों का सन्धिविच्छेद करें—

प्रभोऽत्र, जलेऽपि, साधोऽद्य, फलेऽस्मिन्,
हलीषा, उपेहि, लाङ्गलीषा ।

3. ਠੀਕ ਸੰਧੀ ਉੱਤੇ ਸਹੀ ਦਾ ਚਿੰਨ (✓) ਲਗਾਓ—
शुद्ध सन्धि पर सही चिह्न (✓) लगाएं—

साधो	+ अत्र	(साधवत्र / साधोऽत्र)
वृक्षे	+ अस्मिन्	(वृक्षेऽस्मिन्/वृक्ष्यस्मिन्)
अव	+ एहि	(अवैहि / अवेहि)
हरे	+ असौ	(हरेऽसौ / हरयसौ)
प्र	+ एजते	(प्रैजते / प्रेजते)

4. ਠੀਕ ਸੰਧੀ ਛੇਦ ਉੱਤੇ ਸਹੀ ਦਾ ਚਿੰਹ (✓) ਲਗਾਓ—
शुद्ध सन्धिविच्छेद पर सहो (✓) चिह्न लागाएँ—

प्रभोऽस्माकम्	(प्रभौ + अस्माकं, प्रभो + अस्माकम्)
गुरोऽत्र	(गुरो + अत्र, गुरौ + अत्र)
कुलटा	(कुल् + अटा, कुल + अटा)
उपोषति	(उप + ओषति, उप + औषति)
प्रभोऽवेहि	(प्रभो + वेहि, प्रभो + अवेहि)

5. ਹੇਠ ਲਿਖੀ ਪੂਰਬਰੂਪ ਅਤੇ ਪਰਰੂਪ ਸੰਧੀ ਨੂੰ ਅਲੱਗ-ਅਲੱਗ ਕਰੋ—
निम्नलिखित पूर्वरूप तथा पररूप सन्धि अलग-अलग करें—

कवेऽत्र, पतञ्जलिः गृहेऽपि, मनीषा, बन्धोऽद्य, मार्तण्डः ।

6. ਸੰਖੇਪ ਵਿੱਚ ਪੂਰਬ ਰੂਪ ਤੇ ਪਰਰੂਪ ਸੰਧੀ ਦਾ ਭੇਦ ਦੱਸੋ ।
संक्षेप में पूर्वरूप तथा पररूप सन्धि में भेद बताएँ ।

7. ਪਾਠ ਵਿੱਚ ਆਏ ਪੂਰਬ ਰੂਪ ਸੰਧੀ ਦੇ ਪ੍ਰਯੋਗਾਂ ਤੋਂ ਅਲੱਗ ਕੁੱਝ ਹੋਰ ਪੂਰਬ ਰੂਪ ਦੇ ਪ੍ਰਯੋਗ ਲੈ ਕੇ ਉਨ੍ਹਾਂ ਦੇ ਵਾਕ ਬਣਾਓ ।
पाठ में आये पूर्वरूपसन्धि के प्रयोगों के अतिरिक्त कुछ अन्य पूर्वरूप के प्रयोग लेकर उनसे वाक्य-रचना करें ।

8. ਪਾਠ ਵਿੱਚ ਆਏ ਪਰ ਰੂਪ ਸੰਧੀ ਦੇ ਪ੍ਰਯੋਗਾਂ ਤੋਂ ਅਲੱਗ ਕੁੱਝ ਹੋਰ ਪਰ ਰੂਪ ਦੇ ਪ੍ਰਯੋਗ ਲੈ ਕੇ ਉਨ੍ਹਾਂ ਨਾਲ ਵਾਕ ਬਣਾਓ ।
पाठ में आये पररूपसन्धि के प्रयोगों के अतिरिक्त कुछ अन्य पररूप प्रयोग लेकर उनसे वाक्य रचना करें ।

9. ਸੰਸਕ੍ਰਿਤ ਵਿੱਚ ਅਨੁਵਾਦ ਕਰੋ—

ਸਾਡੇ ਘਰ ਵਿੱਚ ਵੀ ਬਿਜਲੀ ਨਹੀਂ ਹੈ ।

ਹੇ ਪ੍ਰਭੂ ! ਸਾਡੀ ਰੱਖਿਆ ਕਰੋ ।

ਇਸ ਦਰਖਤ ਵਿੱਚ ਵੀ ਫੁੱਲ ਖਿੜ ਰਿਹੇ ਹਨ ।

ਸਮਾਜ ਵਿੱਚ ਭੈੜੀਆਂ ਔਰਤਾਂ ਦਾ ਆਦਰ ਨਹੀਂ ਹੁੰਦਾ ।

ਮਨੀਸ਼ੀਆਂ ਦਾ ਸੰਕਲਪ ਪੱਕਾ ਹੁੰਦਾ ਹੈ ।

संस्कृत में अनुवाद कीजिये—

हमारे घर में भी बिजली नहीं है ।

हे प्रभो ! हमारी रक्षा करो ।

इस वृक्ष में भी फूल खिल रहे हैं ।

समाज में कुलटा स्त्रियों का आदर नहीं होता ।

मनीषियों का संकल्प दृढ़ होता है ।

10. ਆਪਣੀ ਭਾਸ਼ਾ ਵਿੱਚ ਅਨੁਵਾਦ ਕਰੋ—
अपनी भाषा में अनुवाद कीजिये —

हे वन्धोऽस्माकं प्रार्थनां स्वीकृत्य अस्माकं गृहमागच्छ ।

हे कवेऽत्र दर्शकान् स्वकवितां श्रावयतु ।

हे साधोऽत्र जनानुपदिशतु ।

तेऽपि मम मित्राणि सन्ति ।

हे हरेऽस्मान् सर्वान् पाहि ।

पश्य, सम्प्रति मार्तण्डः आकाशे अस्तं गच्छति ।

एकोऽहमसहायोऽहं कृशोऽहमपरिच्छदः ।
स्वप्नेऽप्येवंविधा चिन्ता मृगेन्द्रस्य न जायते ॥

द्वाचत्वारिंशः पाठः

ਭਵਾਦਿਗਣ ਦੇ ਪ੍ਰਮੁੱਖ ਧਾਤੂ।

भ्वादिगण के प्रमुख धातु, लट्, लङ्,

लृट् तथा विधिलिङ् लकार में।

दुग्धेन दग्धः जनः तक्रमपि फूत्कृत्य पिबति ।

धीराः न्यायात् पथः न कदापि प्रविचलन्ति ।

मम गृहस्य पार्श्वे एका वाटिका अस्ति, अहं प्रतिदिनं तत्र गच्छामि ।

स्वतन्त्रतादिवसदिने राष्ट्रध्वजस्य पुरतः स्थित्वा राष्ट्रगानं गायन्ति ।

वनं गच्छन् रामः प्रयागे भारद्वाजस्याश्रमे कञ्चित् कालम् अतिष्ठत् ।

जीमूतवाहनः नृपः शंखचूडं नागं त्रातुं स्वदेहं गरुडाय प्रायच्छत् ।

शिशुः कथां श्रोतुं मातामहीं प्रत्यगच्छत् ।

अचिरमेव पठिष्यसि मम नूतनाम् रचनाम् ।

रात्रिः गमिष्यति, भविष्यति च सुप्रभातम् ।

सायंकालेऽहं संस्कृतनाटकं द्रष्टुं गमिष्यामि, त्वमपि आगच्छ ।

रजकाः मलिनानि वस्त्राणि प्रक्षालयितुं नदीं नेष्यन्ति ।

अद्यतनं कार्यं श्वः करिष्यामि इति वादं परिहर ।

तपोधनाः कुसुमानि दर्भाणि च वनाद स्वैरं नयन्तु ।

अयि भावुकाः रसिकाः! भागवतं रसं पिबत ।

तथा आचर यथा निन्दा न भवेत् ।

प्रदर्शयेयुः भवन्तः स्वीयां योग्यताम्, अनुकूलोऽयम् अवसरः ।

नायमर्थः सन्तोषस्य यत् वयं सर्वं कर्म त्यजेम ।

अनुचितधनार्जने न सर्वेषाम् अप्रियाः भवेम ।

ਸ਼ਬਦਕੋਸ਼ (शब्दकोश:)—

दग्ध	जला हुआ	ਜਲਿਆ ਹੋਇਆ
तक्र	छाछ (मट्ठा)	ਲੱਸੀ
फूत्कृत्य	फूँककर	ਫੂਕ ਮਾਰ ਕੇ
प्र-यच्छ	देना	ਦੇਣਾ
मातामही	नानी	ਨਾਨੀ
रजक	धोबी	ਧੋਬੀ
दर्भ	कुशा (एक प्रकार की घास)	ਕੁਸ਼ਾ (ਇਕ ਤਰ੍ਹਾਂ ਦੀ ਘਾਹ)
ह्रास	कम करना	ਘੱਟ ਕਰਨਾ

ਨਿਰਦੇਸ਼ (निर्देश:)—

1. ਰੂਪ ਰਚਨਾ ਦੀ ਦ੍ਰਿਸ਼ਟੀ ਨਾਲ ਵਿਆਕਰਣ ਵਿਦਵਾਨ ਪਾਣਿਨਿ ਨੇ ਧਾਤੂਆਂ ਨੂੰ ਦਸ ਗਣਾਂ ਵਿੱਚ ਵੰਡਿਆ ਹੈ। ਜਿਨ੍ਹਾਂ ਦੇ ਨਾਂ—
ਭਵਾਦੀਗਣ, ਅਦਾਦੀਗਣ, ਜੁਹੋਤੇਆਦੀਗਣ, ਦਿਵਾਦੀਗਣ, ਸਵਾਦੀਗਣ, ਤੁਦਾਦੀਗਣ, ਰੁਧਾਦੀਗਣ, ਤਨਾਦੀਗਣ, ਕਿਰਆਦੀਗਣ, ਚੁਰਾਦੀਗਣ।
रूप-रचना की दृष्टि से वैयाकरण पाणिनि ने धातुओं को दस गणों में बाँटा है। जिनके नाम इस प्रकार हैं—
भ्वादिगण, अदादिगण, जुहोत्यादिगण, दिवादिगण, स्वादिगण, तुदादिगण, रुधादिगण, तनादिगण, क्र्यादिगण, चुरादिगण।

2. ਜਿਸ ਗਣ ਵਿੱਚ ਜਿਸ ਧਾਤੂ ਦੀ ਸਭ ਤੋਂ ਪਹਿਲੇ ਚਰਚਾ ਕੀਤੀ ਗਈ ਹੈ, ਉਸ ਗਣ ਦਾ ਨਾਂ ਉਸੀ ਧਾਤੂ ਦੇ ਅਧਾਰ ਤੇ ਰੱਖਿਆ ਗਿਆ ਹੈ। ਜਿਵੇਂ— ਭਵਾਦਿ ਦੀ ਪਹਿਲੀ ਧਾਤੂ ਹੈ ਭੂ (ਹੋਣਾ)। ਇਸ ਲਈ ਇਸ ਗਣ ਦਾ ਨਾਂ ਭਵਾਦਿ ਹੈ। ਪ੍ਰਯੋਗ ਲਈ ਇਸ ਗਣ ਦੇ ਧਾਤੂ ਅਤੇ ਪ੍ਰਤੇ ਦੇ ਗੱਭੇ 'शप्' (अ) ਜੋੜਿਆ ਜਾਂਦਾ ਹੈ। ਜਿਵੇਂ—

जिस गण में जिस धातु की सर्वप्रथम चर्चा की गई है, उस गण का नाम उसी धातु के आधार पर रखा गया है। जैसे भ्वादिगण का पहला धातु है 'भू' (होना)। अतः इस गण का नाम 'भ्वादि' है। प्रयोग के लिए इस गण के धातु और प्रत्यय के बीच शप् (अ) जोड़ा जाता है। जैसे—भू + अ + ति = भवति।

ਵਿਆਕਰਣ (व्याकरणम्)—

ਭਵਾਦੀਗਣ ਦੇ ਕੁੱਝ ਪ੍ਰਮੁੱਖ ਧਾਤੂ—

भ्वादिगण की कुछ प्रमुख धातुएँ—

भू, गम्, गै, दृश्, पठ्, पा (पिब्), लभ्,
श्रू, स्था, क्रीड्, चल्, त्यज्, दह्।

ਅਭਿਆਸ (अभ्यासः)—

1. ਹੇਠ ਲਿਖੇ ਕ੍ਰਿਆ ਪਦਾਂ ਦੇ ਲਕਾਰ ਦੱਸੋ—
   निम्नलिखित क्रियापदों के लकार का परिचय दीजिये—
   खेलिष्यामः, अचलाम, पिबेयम्, नयत, शोचन्ति।

2. ਹੇਠ ਲਿਖੇ ਕ੍ਰਿਅ·ਪਦਾਂ ਦੇ ਪੁਰਸ਼ ਤੇ ਬਚਨ ਦੱਸੋ—
   निम्नलिखित क्रियापदों के पुरुष तथा वचन का परिचय दें—
   हसत, गमिष्याम, पठानि, अर्चामः, अश्रृण्वन्।

3. ਬ੍ਰੈਕਟ ਵਿੱਚ ਲਿਖੇ ਨਿਰਦੇਸ ਅਨੁਸਾਰ ਹੇਠ ਲਿਖੀ ਧਾਤੂਆਂ ਦੇ ਰੂਪ ਲਿਖੋ—
   कोष्ठक में दिये गये निर्देश के अनुसार निम्नलिखित धातुओं के रूप लिखें—
   गम् (विधिलिङ्), पा (लङ्), भू (लृट्),
   भज् (लोट्), श्रु (लट्)।

4. ਹੇਠ ਲਿਖੇ ਕ੍ਰਿਆ-ਪਦਾਂ ਦੀ ਮੂਲ ਧਾਤੂਆਂ ਪਛਾਣੋ—
निम्नलिखित क्रिया-पदों की मूल धातु पहचानिए—

जयति, अशोचत्, तिष्ठेयम्, पिबानि,
श्रोष्यति, धावति, आगच्छत्।

5. ਬ੍ਰੈਕਟ ਵਿੱਚ ਦੱਸੇ ਲਕਾਰ ਦੇ ਅਨੁਸਾਰ ਸਹੀ ਕ੍ਰਿਆ-ਪਦਾਂ ਨਾਲ ਖਾਲੀ ਸਥਾਨ ਭਰੋ—
कोष्ठक में निर्दिष्ट लकार के अनुसार उपयुक्त क्रिया-पदों से रिक्त स्थान की पूर्ति करें—

वयं ग्रामं ... ... (लङ्)।
छात्राः सर्वदा सत्यं ... ... (विधिलिङ्)।
बालाः स्वपाठान् ... ... (लृट्)।
किम् अहं संस्कृतं ... ... (लट्)।
यूयं प्रातरेव उद्याने ... ... (लोट्)।

6. ਹੇਠ ਲਿਖੇ ਵਾਕਾਂ ਵਿੱਚ ਕ੍ਰਿਆਵਾਂ ਸ਼ੁੱਧ ਕਰੋ—
निम्नलिखित वाक्यों में क्रियाओं को शुद्ध कीजिए—

भवान् ईश्वरं भजथ ।
त्वं कदा विद्यालयं गच्छिष्यसि ।
संसारे जनाः साधवः भवेत् ।
भवन्तः कुत्र तिष्ठिष्यन्ति ?
सुरेशः अद्य सम्यक् अक्रीडन् ।

7. ਹੇਠ ਲਿਖੇ ਕ੍ਰਿਆ-ਪਦਾਂ ਨੂੰ ਵਾਕਾਂ ਵਿੱਚ ਪ੍ਰਯੋਗ ਕਰੋ—
निम्नलिखित क्रिया-पदों को वाक्यों में प्रयुक्त करें—

गमिष्यथ, अपिबन्, जेष्यति, पठेः, लिखत।

8. ਹੇਠ ਲਿਖੇ ਪ੍ਰਸ਼ਨਾਂ ਦੇ ਉੱਤਰ ਦਿਓ—

निम्नलिखित प्रश्नों का उत्तर लिखिये—

(क) भविष्यत् काल में किस लकार का प्रयोग होता है ?

(ख) सम्भावना अर्थ में किस लकार का प्रयोग होता है ?

(ग) लोट् लकार का प्रयोग किस अर्थ में होता है ?

(घ) भूतकाल के लिये किस लकार का प्रयोग किया जाता है ?

9. ਸੰਸਕ੍ਰਿਤ ਵਿੱਚ ਅਨੁਵਾਦ ਕਰੋ—

ਉਹ ਲੋਕ ਸ਼ਹਿਰ ਤੋਂ ਪਿੰਡ ਜਾ ਰਿਹੇ ਹਨ।

ਦੇਸ਼ ਦੇ ਸਾਰੇ ਨਾਗਰਿਕ ਦੇਸ਼ ਦੀ ਰੱਖਿਆ ਕਰਨ।

ਅਸੀਂ ਲੋਕ ਸੂਰਜ ਨੂੰ ਵੇਖ ਕੇ ਬਾਗ ਵਿੱਚ ਘੁੱਮਣ ਗਏ।

ਵਿਦੀਆਰਥੀ ਖੇਲਣ ਤੋਂ ਬਾਅਦ ਆਪਣੀ ਪੜ੍ਹਾਈ ਸ਼ੁਰੂ ਕਰਨ।

ਮੈਂ ਅੱਜ ਪ੍ਰਤਿੱਗਿਆ ਕਰ ਰਿਹਾ ਹਾਂ, ਹਮੇਸ਼ਾ ਸੱਚ ਬੋਲਾਂਗਾਂ।

संस्कृत में अनुवाद करें—

वे लोग नगर से गाँव जा रहे हैं।

देश के सभी नागरिक देश की रक्षा करें।

हम लोग सूर्य को देखकर बाग में घूमने गये।

छात्र खेलने के बाद अपनी पढ़ाई शुरू करें।

मैं आज प्रतिज्ञा कर रहा हूँ— हमेशा सत्य बोलूंगा।

10. ਆਪਣੀ ਭਾਸ਼ਾ ਵਿੱਚ ਅਨੁਵਾਦ ਕਰੋ—

अपनी भाषा में अनुवाद करें—

विनोदस्य पिता ग्रामात् नगरं प्रति गच्छति ।

छात्राः स्व - स्व पुस्तकानि पठेयुः ।

अद्य वयं प्रेक्षालये चलच्चित्रम् अपश्याम ।

स्तोत्रं गायन्तः भक्ताः भगवन्तम् अर्चयन्ति ।

अहमद्य रात्रौ न किमपि खादिष्यामि ।

अद्यैव सायं भवान् मम गृहमागच्छतु ।

सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामयाः ।
सर्वे भद्राणि पश्यन्तु मा कश्चिद् दुःखभाग् भवेत् ।।

त्रयचत्वारिंशः पाठः

ਅਦਾਦਿ ਗਣ ਕੇ ਪ੍ਰਮੁੱਖ ਧਾਤੂ ।

अदादि गण के प्रमुख धातु

लट्, लङ्, लृट्, लोट्, तथा विधिलिङ् में ।

अस्ति उत्तरस्यां दिशि हिमालयो नाम नगाधिराजः।
जनानां कायः परोपकारेण विभाति, न तु चन्दनेन ।
अद्य शकुन्तला यास्यति इति सर्वैः अनुज्ञायताम् ।
आश्रमं मुञ्चन्ती शकुन्तला सखीजनम् आश्लिष्य रोदिति।
निषादः क्रौञ्चमिथुनात् एकम् अहन् ।
प्रभाता रजनी। भो ब्रह्मचारिणः ! सन्ध्यावन्दनाय नद्यां स्नान्तु।
अनृणाः यावत् जीवनं सुखेन स्वपन्ति ।
अद्य मानवा एव मानवतां घ्नन्ति ।
एष मृगः आखेटकेन धावितः उच्चैः श्वसिति ।
भोः तपस्विन् ! आखेटकात् मृगम् इमं पाहि ।
नववर्षे भवन्तः सर्वे निरामयाः सुखिनश्च सन्तु ।
पुरा गङ्गायाः प्रवाहः प्रयागे भारद्वाजाश्रमस्य निकटे आसीत्।
कुलपतेः कण्वस्य आश्रमे दशसहस्रसंख्याकाः छात्राः आसन्।
रामस्य वनगमनसमये अयोध्यावासिनः भृशम् अरुदन् ।
अस्मिन् वर्षे प्रयागं गत्वा त्रिवेण्याम् अवश्यं स्नास्यामि।
आतंकवादिभिः पीडितान् जनान् किं राजपुरुषाः पास्यन्ति ?
वयं सर्वे संस्कृतं संस्कृतिं च पायाम ।
एकविंशत्यां शताब्द्यां न कोऽपि अत्र निरक्षरः स्यात् ।

ਸ਼ਬਦਕੋਸ਼ (शब्दकोशः)—

नगाधिराज	पर्वतों में श्रेष्ठ	ਪਹਾੜਾਂ ਵਿੱਚ ਸਭ ਤੋਂ ਚੰਗਾ
काय	शरीर	ਸ਼ਰੀਰ (ਦਾਇੰਆ)
वि-भा	सुन्दर लगना	ਸੁੰਦਰ ਲੱਗਣਾ
आ-श्लिष्	गले लगाना	ਹਿੱਕ ਨਾਲ ਲਗਾਣਾ
निषाद	एक अति प्राचीन जाति, चिड़ीमार	ਇਕ ਜਾਤ
क्रौञ्चमिथुन	पक्षी विशेष की एक जोड़ी	ਇਕ ਤਰ੍ਹਾਂ ਦੇ ਪੰਛੀਆਂ ਦੀ ਜੋੜੀ
अनृण	ऋणरहित	ਕਰਜ਼ੇ ਤੋਂ ਬਿਨਾਂ
हन्	मारना	ਮਾਰਨਾ
आखेटक	शिकारी	ਸ਼ਿਕਾਰੀ
श्वस्	साँस लेना	ਸਾਹ ਲੈਣਾ
निरामय	रोगरहित	ਨਿਰੋਗ
भृशम्	अत्यधिक	ਜਿਆਦਾ
पा	रक्षा करना	ਰੱਖਿਆ ਕਰਨਾ

ਨਿਰਦੇਸ਼ (निर्देशः)—

1. ਇਸ ਪਾਠ ਵਿੱਚ ਅਦਾਦਿ ਗਣ ਕੇ ਕੁੱਝ ਪ੍ਰਮੁੱਖ ਧਾਤੂਆਂ ਦਾ ਪ੍ਰਯੋਗ ਕੀਤਾ ਗਿਆ ਹੈ।

   इस पाठ में अदादि गण के कुछ प्रमुख धातुओं का प्रयोग किया गया है।

2. ਅਦਾਦਿ ਗਣ ਦਾ ਪਹਿਲਾ ਧਾਤੂ 'अद्' (ਖਾਣਾ) ਹੈ। ਇਸ ਗਣ ਦੇ ਧਾਤੂ ਅਤੇ ਪ੍ਰਤੇ ਦੇ ਗੱਭੇ ਭਵਾਦਿ ਦੇ ਸ਼ਪ (ਅ) ਦੀ ਤਰ੍ਹਾਂ ਕੁੱਝ ਨਹੀਂ ਜੁੜਦਾ। ਜਿਵੇਂ—

   अदादि-गण का पहला धातु है 'अद्' (खाना)। इस गण के धातु

और प्रत्यय के बीच भ्वादि के शप् (अ) की तरह कुछ नहीं जुड़ता जैसे—अद् + ति = अत्ति।

3. ਅਦਾਦਿ ਗਣ ਵਿੱਚ ਪੜ੍ਹੇ ਗਏ ਕੁੱਝ ਪ੍ਰਮੁੱਖ ਧਾਤੂ—
अदादिगण पठित कुछ प्रमुख धातुएँ—

हन्, स्ना, रुद्, या, शास्,
अस्, स्ना, पा, स्वप् भा ।

ਵਿਆਕਰਣ. (व्याकरणम्)—

या (जाना) धातु लट् लकार

	ए० व०	ब० व०
प्र० पु०	याति	यान्ति
म० पु०	यासि	याथ
उ० पु०	यामि	यामः

लोट् लकार

	ए० व०	ब० व०
प्र० पु०	यातु	यान्तु
म० पु०	याहि	यात
उ० पु०	यानि	याम

लङ् लकार

	ए० व०	ब० व०
प्र० पु०	अयात्	अयुः
म० पु०	अयाः	अयात्
उ० पु०	अयाम्	अयाम

लृट् लकार

	ए० व०	ब० व०
प्र० पु०	यास्यति	यास्यन्ति
म० पु०	यास्यसि	यास्यथ
उ० पु०	यास्यामि	यास्यामः

विधि लिङ्

	ए० व०	ब० व०
प्र० पु०	यायात्	यायुः
म० पु०	यायाः	यायात
उ० पु०	यायाम्	यायाम

ਅਭਿਆਸ (अभ्यासः)—

1. ਹੇਠ ਲਿਖੇ ਕ੍ਰਿਆਪਦਾਂ ਦਾ ਲਕਾਰ ਦੱਸੋ—
निम्नलिखित क्रियापदों का लकार बतायें—
स्मः, यान्ति, स्याम, पायात्, स्नातु ।

2. ਹੇਠ ਲਿਖੇ ਕ੍ਰਿਆਪਦਾਂ ਦੇ ਪੁਰੁਸ਼ ਤੇ ਵਚਨ ਦੱਸੋ—
निम्नलिखित क्रियापदों के पुरुष तथा वचन का परिचय दें—
पान्तु, अद्मि, हन्याम्, स्नाहि, असि ।

3. ਹੇਠ ਲਿਖੇ ਕ੍ਰਿਆਪਦਾਂ ਦੇ ਮੂਲ ਧਾਤੂ ਦੱਸ ਕੇ ਵਾਕਾਂ ਵਿੱਚ ਪ੍ਰਯੋਗ ਕਰੋ—
निम्नलिखित क्रियापदों के मूल धातु बताकर वाक्य में प्रयोग करें—
वक्ष्यसि, अस्ति, पायात्, जहि, घ्नन्ति ।

4. ਬ੍ਰੈਕਟ ਵਿੱਚ ਦਿੱਤੇ ਨਿਰਦੇਸ਼ ਅਨੁਸਾਰ ਹੇਠ ਲਿਖੀ ਧਾਤੂਆਂ ਦੇ ਰੂਪ ਲਿਖੋ—
कोष्ठक में दिये गये निर्देश के अनुसार निम्नलिखित धातुओं का रूप लिखें—

या, (लोट् मध्यम पुरुष),　　अस् (विधिलिङ् म० पु०),
अद् (लट् उ० पु०),　　स्ना (लङ् प्र० पु०)।

5. ਬ੍ਰੈਕਟ ਵਿੱਚ ਦਿੱਤੇ ਨਿਰਦੇਸ਼ ਅਨੁਸਾਰ ਜੋਗ ਕ੍ਰਿਆਪਦਾਂ ਨਾਲ ਖਾਲੀ ਸਥਾਨ ਭਰੋ—
कोष्ठक में दिये गये निर्देश के अनुसार उपयुक्त क्रियापदों से रिक्त स्थान भरें—

स: रात्रौ फलं ··· ··· ··· ··· ··· (अद् – लृट्)।
मुनि: नद्यां ··· ··· ··· ··· ··· (स्ना – लट्)।
श्याम: वने गां ··· ··· ··· ··· (पा – लङ्)।
छात्रा: विद्यालयं ··· ··· ··· ··· (या – विधिलिङ्)।
भवान् शीतलेन जलेन ··· ··· ··· (स्ना – लोट्)।

6. ਕ੍ਰਿਆਪਦਾਂ ਨੂੰ ਸ਼ੁੱਧ ਕਰੋ—
क्रियापदों को शुद्ध कीजिए—

ते मम मित्राणि अस्ति ।
छात्रा: कुत्र यास्यति ?
आकाशे चन्द्रमा: भान्ति ।
स: वर्षद्वयेन संस्कृतं वेदिष्यसि ।
राजा प्रजा: पासि ।

7. ਹੇਠ ਲਿਖੇ ਕ੍ਰਿਆਪਦਾਂ ਨੂੰ ਉਸੀ ਪੁਰਸ਼ ਤੇ ਉਸੀ ਵਚਨ ਅਨੁਸਾਰ ਵਿਧੀ ਲਿੰਙ ਵਿੱਚ ਬਦਲੋ—
निम्नलिखित क्रियापदों को यथापुरुष यथावचन विधिलिङ् में बदलें—

अस्तु, पाहि, यास्यति, हन्ति, अपात्।

8. ਲੋਟ ਲਕਾਰ ਅਤੇ ਵਿਧਿਲਿੰਙ ਲਕਾਰ ਦੇ ਅਰਥ ਵਿੱਚ ਕੀ ਫਰਕ ਹੈ ? ਉਦਾਹਰਣ ਸਹਿਤ ਲਿਖੋ।

लोट् लकार तथा विधिलिङ् लकार के अर्थ में क्या भेद है ? उदाहरण के साथ लिखिए ।

9. ਆਪਣੀ ਭਾਸ਼ਾ ਵਿੱਚ ਅਨੁਵਾਦ ਕਰੋ—

अपनी भाषा में अनुवाद करें—

भारतस्य सर्वे नागरिकाः संस्कृतं विद्युः ।
अस्माकं भारतवर्षे बह्व्यः नद्यः सन्ति ।
इमे बालकाः सरोवरे स्नास्यन्ति ।
कोऽपि मनुष्यः पशून् न हन्यात् ।
भगवान् अस्मान् सर्वान् पातु ।

10. ਸੰਸਕ੍ਰਿਤ ਵਿੱਚ ਅਨੁਵਾਦ ਕਰੋ—

ਆਕਾਸ਼ ਵਿੱਚ ਤਾਰੇ ਚਮਕ ਰਿਹੇ ਹਨ ।
ਸਾਡੇ ਪੁਸਤਕਾਲਅ ਵਿੱਚ ਕਈ ਸੰਸਕ੍ਰਿਤ ਦੀਆਂ ਕਿਤਾਬਾਂ ਹਨ ।
ਸਾਨੂੰ ਸਭ ਨੂੰ ਆਪਣਾ ਇਤਿਹਾਸ ਅਤੇ ਪੁਰਾਣ ਜਾਨਣਾ ਚਹੀਦਾ ਹੈ ।
ਰਾਜਾ ਪਰਜਾ ਦੀ ਰੱਖਿਆ ਕਰੇ ।
ਨੌਕਰ ! ਤੂੰ ਕਦੋਂ ਘਰ ਜਾਵੇਗਾ ।

संस्कृत में अनुवाद करें—

आकाश में तारे चमक रहे हैं ।
हमारे पुस्तकालय में संस्कृत की अनेक पुस्तकें हैं ।
हम सबको अपना इतिहास तथा पुराण जानना चाहिए ।
राजा प्रजा की रक्षा करें ।
सेवक ! तुम कब घर जाओगे ?

दानेन भूतानि वशीभवन्ति, दानेन वैराण्यपि यान्ति नाशम् ।
परोऽपि बन्धुत्वमुपैति दानैर्दानं हि सर्वव्यसनानि हन्ति ॥

चतुश्चत्वारिंशः पाठः

तुदादि गण के प्रचलित धातु।

तुदादिगण के प्रचलित धातु

लट्, लङ्, लृट्, लोट् एवं विधिलिङ् लकार में।

सत्सङ्गतिः वाचि सत्यं सिञ्चति मानोन्नतिं च दिशति।
अधमाः धनमिच्छन्ति उत्तमास्तु मानम् इच्छन्ति।
हिमांशुः अमृतं किरति, परन्तु, फणी विषमेव समुद्गिरति।
प्राप्ते च वसन्ते तरवः जीर्णानि पत्राणि अमुञ्चन्।
महाकविः भासः त्रयोदशानि नाटकानि अलिखत्।
महात्मागान्धी भारतवर्षं स्वतन्त्रं कर्तुमैच्छत्।
साहित्यिकाः सामाजिकानां चरित्रोन्नयनाय साहित्यं लिखन्तु।
अस्माकम् ऋषयः पृथिव्यां सर्वमानवेषु ज्ञानस्य प्रकाशम् अकिरन्।
कस्यचिदपि गुणं पृच्छ, मा कुलं, मा च रूपम्।
मुञ्चत इमं पिञ्जरस्थं शुकशावकं गगने स्वच्छन्दतया उड्डयनार्थम्।
उत्सवेषु वयं रागद्वेषं विहाय परस्परं मिलामः।
परिहर साम्प्रदायिकतायाः विवादम्, अन्यथा त्रुटिष्यति राष्ट्रम्।
भवन्तः कदा स्वनूतनगृहे प्रवेक्ष्यन्ति?
यदि वृष्टिः भविष्यति तर्हि कृषकाः क्षेत्रेषु बीजानि किरिष्यन्ति।
प्रातर् उत्थाय प्रतिदिनं मातुः पितुश्चरणान् स्पृशेयुः।
वयम् इच्छेम अखण्डतां भारतस्य।
परद्रव्येषु मा लुभेयुः।
शुद्ध्यर्थम् आरोग्यार्थं च निर्मलेन शीतलेन च जलेन मज्जत।

ਸ਼ਬਦਕੋਸ਼ (शब्दकोशः)—

दिश्	देना, संकेत करना	ਦੇਣਾ, ਦੱਸਣਾ
कॄ (किरति)	बिखेरना	ਵਿਖੇਰਣਾ
हिमांशु	चन्द्रमा	ਚੰਦਰਮਾ
फणी	सर्प	ਸੱਪ
सम् + उद् – गॄ	उगलना	ਉਗੱਲਣਾ
मुञ्च्	छोड़ना	ਛੱਡਣਾ
त्रुट्	तोड़ना	ਤੋੜਨਾ
प्र–विश्	प्रवेश करना	ਪ੍ਰਵੇਸ਼ ਕਰਨਾ
मस्ज्	स्नान करना	ਨਹਾਉਣਾ

ਨਿਰਦੇਸ਼ (निर्देशः)—

1. ਇਸ ਗਣ ਦਾ ਪਹਿਲਾ ਧਾਤੂ 'तुद्' (ਪੀੜ੍ਹਾ) ਹੈ। ਇਸ ਗਣ ਵਿੱਚ ਧਾਤੂ ਅਤੇ ਪ੍ਰਤੇ ਦੇ ਗੱਭੇ 'श' (अ) ਜੋੜਿਆ ਜਾਂਦਾ ਹੈ। ਭਵਾਦੀਗਣ ਵਿੱਚ ਵੀ 'अ' ਜੋੜਿਆ ਜਾਂਦਾ ਹੈ ਪਰੰਤੂ ਉੱਥੇ ਧਾਤੂ ਦੇ ਪਹਿਲੇ ਸਵਰ इ, उ, ऋ ਨੂੰ ਗੁਣ ਪ੍ਰਾਪਤ ਹੋ ਜਾਂਦਾ ਹੈ। ਉਹ ਤੁਦਾਦੀਗਣ ਵਿੱਚ ਨਹੀਂ ਹੁੰਦਾ। ਇੱਥੇ 'इ, उ, ऋ, ॠ' ਨੂੰ ਤਰਤੀਬਵਾਰ इय्, उव्, रिय् ਅਤੇ इर् ਹੋ ਜਾਂਦਾ ਹੈ। ਜਿਵੇਂ

इस गण का प्रथम धातु 'तुद्' (पीड़ा देना) है। इस गण के धातुओं और प्रत्यय के बीच 'श' (अ) जोड़ा जाता है। भ्वादिगण में भी 'अ' जोड़ा जाता है, किन्तु वहाँ धातु के आदि स्वर (इ उ ऋ) को गुण प्राप्त होता है, जो तुदादिगण में नहीं होता। यहाँ इ, उ, ऋ, ॠ, को क्रमशः इय्, उव्, रिय् तथा इर् हो जाता है। जैसे—

रि + अ + ति = रियति। घु + अ + ति = धुवति।

मृ + अ + ते = म्रियते। कॄ + अ + ति = किरति।

2. ਤੁਦਾਦੀਗਣ ਦੇ ਕੁਝ ਪ੍ਰਮੁੱਖ ਧਾਤੂ—

तुदादिगण के कुछ प्रमुख धातु—

तुद्, इच्छ्, कृ, गृ, त्रुट्, प्रच्छ्,

मुच्लृ (मुच्), लिख्, सिच्, स्पृश्, स्फुट्।

ਵਿਆਕਰਣ (व्याकरणम्)—

ਲਿਖ ਧਾਤੂ ਦੇ ਰੂਪ ਤਰਤੀਬਵਾਰ ਲਟ੍, ਲੋਟ, ਲ੍ਰਿਟ੍, ਲਙ੍ ਅਤੇ ਵਿਧੀਲਿੰਙ ਲਕਾਰ ਵਿੱਚੋਂ—

लिख्-धातु के रूप क्रमशः लट्, लोट्, लृट्, लङ् तथा विधि-लिङ् में—

लट्

	ए० व०	ब० व०
प्र० पु०	लिखति	लिखन्ति
म० पु०	लिखसि	लिखथ
उ० पु०	लिखामि	लिखामः

लोट्

	ए० व०	ब० व०
प्र० पु०	लिखतु	लिखन्तु
म० पु०	लिख	लिखत
उ० पु०	लिखानि	लिखाम

लृट्

	ए० व०	ब० व०
प्र० पु०	लेखिष्यति	लेखिष्यन्ति
म० पु०	लेखिष्यसि	लेखिष्यथ
उ० पु०	लेखिष्यामि	लेखिष्यामः

विधिलिङ्

	ਏ० ਵ०	ਬ० ਵ०
ਪ੍ਰ० ਪੁ०	लिखेत्	लिखेयुः
ਮ० ਪੁ०	लिखेः	लिखेत
ਉ० ਪੁ०	लिखेयम्	लिखेम

ਅਭਿਆਸ (अभ्यासः)—

1. ਬ੍ਰੈਕਟ ਵਿੱਚ ਦਿੱਤੇ ਨਿਰਦੇਸ਼ ਦੇ ਅਨੁਸਾਰ ਹੇਠ ਲਿਖੀ ਧਾਤੂਆਂ ਦਾ ਰੂਪ ਲਿਖੋ—
कोष्ठक में दिये गये निर्देश के अनुसार निम्नलिखित धातुओं का रूप लिखें—
क्षिप् (लृट्) इष्, इच्छ् (विधिलिङ्) स्पृश् (लङ्)
प्रच्छ् (लट्) मुञ्च् (लोट्)।

2. ਹੇਠ ਲਿਖੇ ਕ੍ਰਿਆ ਪਦਾਂ ਦੇ ਮੂਲ ਧਾਤੂ ਪਛਾਣੋ—
निम्नलिखित क्रिया-पदों में मूल धातु पहचानें—
मोक्ष्यति, वेदिष्यति, ऐच्छत्, करिष्यति।

3. ਹੇਠ ਲਿਖੇ ਕ੍ਰਿਆ ਪਦਾਂ ਦੇ ਲਕਾਰ, ਪੁਰੁਸ਼ ਅਤੇ ਵਚਨ ਦਾ ਪਰਿਚੇ ਦਿਓ—
निम्नलिखित क्रियापदों के लकार, पुरुष तथा वचन का परिचय दें—
अमृज्जाम, कृषत, मिलथ, विन्देम, सिञ्चानि।

4. ਬ੍ਰੈਕਟ ਵਿੱਚ ਦੱਸੇ ਧਾਤੂ ਤੋਂ ਯੋਗ ਕ੍ਰਿਆ ਪਦ ਬਣਾਕੇ ਖਾਲੀ ਸਥਾਨ ਭਰੋ—
कोष्ठक में निर्दिष्ट धातु से उपयुक्त क्रियापद बना कर रिक्त स्थान भरें—
वानराः वृक्षात् फलानि ………… (क्षिप्)।
पुत्रः मातुः पितुश्च पादौ ………… (स्पृश्)।
यूयं यावज्जीवं सुखमेव ………… (विन्द्)।
अद्य मम मित्रं ………………… (मिल्)।
ते केवलं मम धनं ………………… (इष्)।

5. ਹੇਠ ਲਿਖੇ ਕ੍ਰਿਆ ਪਦਾਂ ਤੋਂ ਵਾਕ ਬਣਾਓ—
निम्नलिखित क्रियापदों से वाक्य बनाइये—

मुञ्चति, मेलिष्यामः तुदेयुः, उपदिशतु ।

6. ਕ੍ਰਿਆ ਪਦਾਂ ਨੂੰ ਸ਼ੁੱਧ ਕਰੋ—
क्रियापदों को शुद्ध कीजिए—

शकुन्तला लतासु जलं सेक्ष्यन्ति ।

छात्रः अध्यापकं प्रश्नम् अपृच्छन् ।

होलिकोत्सवे वयं परस्परं मेलिष्यामि ।

गुरवः यथाकालं शिष्यान् उपदिशतु ।

अध्यापकाः यत् पाठयति छात्राः तत्

अवश्यं लिखेत् ।

7. 'ਕ'—ਕਾਲਮ ਵਿੱਚ ਦਿੱਤੇ ਕ੍ਰਿਆ ਪਦਾਂ ਨੂੰ 'ਖ'—ਕਾਲਮ ਵਿੱਚ ਦੱਸੀ ਸਹੀ ਧਾਤੂ ਨਾਲ ਜੋੜੋ—
क – स्तम्भ में प्रदत्त क्रियापदों को ख—स्तम्भ में प्रयुक्त उचित धातु के साथ जोड़ें—

क	ख
किरति	सिञ्च्
सेक्ष्यामः	इष्
इच्छेयुः	प्रच्छ्
अपृच्छत्	विद् (विन्द्)
वेत्स्यामः	कॄ

8. 'ਕ'—ਕਾਲਮ ਵਿੱਚ ਦਿੱਤੇ ਕ੍ਰਿਆ ਪਦਾਂ ਨੂੰ 'ਖ'—ਕਾਲਮ ਵਿੱਚ ਦੱਸੇ ਸਹੀ ਲਕਾਰ ਨਾਲ ਜੋੜੋ—

8. 'क'—स्तम्भ में प्रयुक्त क्रियापदों को 'ख'—स्तम्भ में निर्दिष्ट उपयुक्त लकार के साथ जोड़ें—

क	ख
क्षिपेम	लट्
स्पृश	विधिलिङ्
सिञ्चथ	लङ्
मोक्ष्यामि	लोट्
ऐच्छत्	लृट्

9. ਸੰਸਕ੍ਰਿਤ ਵਿੱਚ ਅਨੁਵਾਦ ਕਰ—

ਤਾਕਤਵਰ ਆਦਮੀ ਕਮਜ਼ੋਰ ਨੂੰ ਤੰਗ ਨ ਕਰੇ ।

ਬੁੱਧੀ, ਵਿਦਿਆ, ਗਿਆਨ ਇਹ ਸਬ ਭਾਗ ਨਾਲ ਪ੍ਰਾਪਤ ਹੁੰਦੇ ਰਨ ।

ਕਾਲਿਦਾਸ ਨੇ ਸੰਸਕ੍ਰਿਨ ਭਾਸ਼ਾ ਵਿੱਚ ਬਹੁਤ ਕਾਵਿ ਲਿਖੇ ।

ਵਰਖਾ ਹੋਣ ਤੇ ਕਿਸਾਨ ਜਮੀਨ ਤੇ ਹੱਲ ਚਲਾਉਣਗੇ ।

संस्कृत में अनुवाद करें—

सबल व्यक्ति दुर्बलों को तंग न करें।

बुद्धि, विद्या, ज्ञान-ये सब भाग्य से प्राप्त होते हैं ।

कालिदास ने संस्कृत-भाषा में अनेक काव्य लिखे ।

वर्षा होने पर कृषक भूमि का कर्षण करेंगे ।

10. ਆਪਣੀ ਭਾਸ਼ਾ ਵਿੱਚ ਅਨੁਵਾਦ ਕਰੋ—

अपनी भाषा में अनुवाद करें—

प्रथमे वर्षापाते भूमिः वाष्पं मुञ्चति ।

शिष्याः स्वकीयाः शंकाः गुरुं पृच्छन्तु ।

इह जगति सर्वे प्राणिनः मोक्षम् इच्छन्ति ।

भोः छात्राः ! यूयम् इदानीं कक्षां प्रविशत ।

छात्राणां समस्याः निराकर्तुं प्रधानाचार्यः सर्वकारं लेखिष्यति ।

जाड्यं धियो हरति सिञ्चति वाचि सत्यम्
मानोन्नतिं दिशति पापमपाकरोति ।
चेतः प्रसादयति दिक्षु तनोति कीर्तिम्
सत्सङ्गतिः कथय किं न करोति पुंसाम् ॥

पञ्चचत्वारिंशः पाठः

ਦੀਵਾਦੀਗਣ ਵਿੱਚ ਪੜ੍ਹੇ ਗਏ ਪ੍ਰਮੁੱਖ ਧਾਤੂ ।

दिवादि गण में पठित प्रमुख धातु,

लट्, लृट्, लोट्, लङ् तथा विधि लिङ् लकार में ।

यत्ने कृते यदि कार्यं न सिध्यति, तत्र को दोषः ।

प्रायेण दोषाः गुणाश्च संसर्गेण जायन्ते ।

भक्त्या हि तुष्यन्ति महानुभावाः ।

अन्येषां वलमाश्रित्य त्वं कथं युध्यसे ?

जलबुद्बुद्समानासंपत् विद्युत् इव सहसैव उदेति नश्यति च ।

अस्मिन् प्रेक्षागारे श्वः प्रसिद्धा ओडिसी नर्तकी संयुक्ता-पाणिग्रही नर्तिष्यति ।

अहं त्वया सह क्रीडित्वा समयं न नशिष्यामि ।

परीक्षानन्तरम् अहं प्रतिदिनं त्वया सह प्रातः भ्रमिष्यामि ।

विद्यालयात् प्रथमं गृहमेव आगच्छेः, नहि तु कोपिष्यति माता ।

उद्यमेनैव तव कार्याणि सेत्स्यन्ति, न तु मनोरथैः ।

शून्यहृदया इव इयं शकुन्तला, क्षाम्यतु महर्षिः दुर्वासाः ।

सौचिक ! ईदपर्व आगच्छति, अतः मम वस्त्रं शीघ्रं सीव्य ।

दुःखात् मा त्रस्यत, रात्र्याः अनन्तरं दिनमिव सुखम् आगमिष्यति एव ।

समयः बहूमूल्यः, मा समयं नश्यत ।

पाण्डवाः कौरवैः सह अष्टादशदिनं यावत् अयुध्यन्त ।

दुर्दिदिनस्य कारणात् सूर्याभावे अद्य तडागे कमलानि न अपुष्यन् ।
स्वभ्रातुः विवाहे यूयं सम्यक् अनृत्यन् ।
अद्य वयं मिलित्वा भांगडां नृत्येम ।
श्रमेण यत्किञ्चिद् वस्तु प्राप्तं भवतिः, तेनैव तुष्येम, अनुचित-धनार्जने न प्रयतेमहि ।
न्यायार्थं बान्धवैः सह अपि युध्येत् ।

ਸ਼ਬਦਕੋਸ਼ (शब्दकोशः)—

सिद्ध्	सिद्ध होना	ਸਿੱਧ ਹੋਣਾ
जन्	होना	ਹੋਣਾ
तुष्	संतुष्ट होना	ਸੰਤੁਸ਼ਟ
जलबुदबुद्	जल में उठा बुलबुला	ਪਾਣੀ ਵਿੱਚ ਉੱਠੇ ਬੁਲਬੁਲੇ
प्रेक्षागार	नाट्यशाला	ਨਾਟਕਘਰ
क्षम्	क्षमा करना	ਮਾਫ ਕਰਨਾ
दुर्वासा	एक ऋषी	ਇਕ ਰਿਸ਼ੀ ਦਾ ਨਾਂ
सौचिक	दर्जी	ਦਰਜੀ
सिव्	सिलाई करना	ਸਿਲਣਾ
त्रस्	डरना	ਡਰਨਾ
नश्	नष्ट करना	ਨਸ਼ਟ ਕਰਨਾ
पुष्	पुष्ट होना	ਪੱਕਾ ਹੋਣਾ (ਵੱਡਾ ਹੋਣਾ)

ਨਿਰਦੇਸ਼ (निर्देशः)—

1. ਇਸ ਗਣ ਦਾ ਪਹਿਲਾ ਧਾਤੂ 'दिव्' (ਜੂਆ ਖੇਡਣਾ) ਹੈ । ਇਸ ਲਈ ਇਸਕਾ ਨਾਂ ਦਿਵਾਦਿ ਗਣ ਹੈ । ਇਸ ਗਣ ਦੀ ਧਾਤੂ ਅਤੇ ਪ੍ਰਤੇ ਦੇ ਗੱਭੇ 'श्यन्' (य) ਜੋੜਿਆ ਜਾਂਦਾ ਹੈ । ਜਿਵੇਂ—
इस गण का प्रथम धातु दिव् (जुआ खेलना) है । इसलिये इसका नाम दिवादि गण है । इस गण की धातुओं और प्रत्ययों के बीच में श्यन् (य) जोड़ा जाता है । जैसे—कुप् + य + ति = कुप्यति ।

2. ਦਿਵਾਦਿ ਗਣ ਦੇ ਪ੍ਰਮੁੱਖ ਧਾਤੂ—

दिवदिगण के प्रमुख धातु—

जन्, कुप्, विद्, क्रुध्, क्षम्, खिद्,

भ्रम्, नृत्, मन्, शुष्, युध्, हृष्, सिव्।

ਵਿਆਕਰਣ (व्याकरणम्)—

ਨ੍ਰਿੱਤ ਦੇ ਰੂਪ ਲੱਟ, ਲੋਟ, ਲ੍ਰਿੱਟ, ਲੰਙ ਅਤੇ ਵਿਧਿ ਲਿੰਙ ਵਿੱਚ।

नृत् धातु के रूप लट्, लोट्, लृट्, लङ् तथा विधिलिङ् में—

लट्	ए० व०	ब० व०
प्र० पु०	नृत्यति	नृत्यन्ति
म० पु०	नृत्यसि	नृत्यथ
उ० पु०	नृत्यामि	नृत्यामः

लोट्	ए० व०	ब० व०
प्र० पु०	नृत्यतु	नृत्यन्तु
म० पु०	नृत्य	नृत्यत
उ पु०	नृत्यानि	नृत्याम

लृट्	ए० व०	ब० व०
प्र० पु०	नर्तिष्यति	नर्तिष्यन्ति
म० पु०	नर्तिष्यसि	नर्तिष्यथ
उ० पु०	नर्तिष्यामि	नर्तिष्यामः

लङ्	ए० व०	ब० व०
प्र० पु०	अनृत्यत्	अनृत्यन्
म० पु०	अनृत्यः	अनृत्यत
उ० पु०	अनृत्यम्	अनृत्याम

11

ਵਿ॰ ਲਿ॰	ਏ॰ ਵ॰	ਬ॰ ਵ॰
ਪ੍ਰ॰ ਪੁ॰	नृत्येत्	नृत्येयुः
ਮ॰ ਪੁ॰	नृत्येः	नृत्येत
ਉ॰ ਪੁ॰	नृत्येयम्	नृत्येम

ਅਭਿਆਸ (अभ्यासः)—

1. ਹੇਠ ਲਿਖੇ ਕ੍ਰਿਆ-ਪਦਾਂ ਦੀ ਮੂਲ ਧਾਤੂ ਪਛਾਣੋ—
निम्नलिखित क्रिया-पदों की मूल-धातु पहचानें—

सेत्स्यति, अत्रस्याम, नशिष्यति, असीव्यन्।

2. ਹੇਠ ਲਿਖੇ ਕ੍ਰਿਆ-ਪਦਾਂ ਦੇ ਲਕਾਰ, ਪੁਰੁਸ਼ ਅਤੇ ਵਚਨ ਦਾ ਪਰਿਚੇ ਦਿਓ—

निम्नलिखित क्रिया-पदों के लकार, पुरुष तथा वचन का परिचय दें—

त्रस्यानि, नश्येत, नश्येत्, अनश्यन्।

3. ਬ੍ਰੈਕਟ ਵਿੱਚ ਦਿੱਤੇ ਨਿਰਦੇਸ਼ ਦੇ ਅਨੁਸਾਰ ਹੇਠ ਲਿਖੀ ਧਾਤੂਆਂ ਦੇ ਰੂਪ ਲਿਖੋ—
कोष्ठक में प्रदत्त निर्देश के अनुसार निम्नलिखित धातुओं के रूप लिखिये—

नश् (लट्, प्र० पु०) तुष् (लङ्, उत्तम पु०)
नृत् (लृट्, म० पु०) सिध् (वि० लि०, प्र० पु०)
सीव् (लोट्, उ० पु०)

4. ਬ੍ਰੈਕਟ ਵਿੱਚ ਦਿੱਤੀ ਧਾਤੂ ਤੋਂ ਯੋਗ ਕ੍ਰਿਆ-ਪਦ ਬਣਾ ਕੇ ਖਾਲੀ ਸਥਾਨ ਭਰੋ—
कोष्ठक में निर्दिष्ट धातु से उपयुक्त क्रिया-पद बनाकर रिक्त स्थान भरें—

प्राय: सर्वा: देवता: पुष्पै: ………… (तुष्) ।
दीपावल्या: प्रागेव एतानि वस्त्राणि …… (सोव्) ।
कक्षायां शिक्षक: छात्रेभ्य: ………… (क्रुध्) ।
ग्रीष्मर्त्तौ प्राय: नद्य: ……………… (शुष्) ।
भवन्त: परीक्षाकाले समयं न ………… (नश्) ।

5. ਹੇਠ ਲਿਖੇ ਕ੍ਰਿਆ-ਪਦਾਂ ਤੋਂ ਵਾਕ ਬਣਾਓ—
निम्नलिखित क्रिया-पदों से वाक्य बनाइये—
सेविष्यति, नर्तिष्यामि, नश्यतु, अत्रस्यत्, सिद्धयेत् ।

6. 'ਕ' ਕਾਲਮ ਵਿੱਚ ਦਿੱਤੇ ਕ੍ਰਿਆ-ਪਦਾਂ ਨੂੰ 'ਖ' ਕਾਲਮ ਵਿੱਚ ਦੱਸੇ ਵੇਰਵੇ ਨਾਲ ਜੋੜੋ—
'क' स्तम्भ में प्रदत्त क्रिया-पदों को 'ख' स्तम्भ के विवरणों के साथ व्यवस्थित कीजिये—

क	ख
तुष्यतु	लट्, म० पु०, ए० व० ।
लोभिष्यथ	लट्, प्र० पु०, ए० व० ।
पुष्यन्ति	लोट्, प्र० पु०, व० व० ।
त्रस्येयु:	लृट्, म० पु०, ब० व० ।
नशिष्यति	वि० लि०, प्र० पु०, ब० व० ।

7. ਹੇਠ ਲਿਖੇ ਵਾਕਾਂ ਵਿੱਚ ਕ੍ਰਿਆ-ਪਦਾਂ ਨੂੰ ਸ਼ੁੱਧ ਕਰੋ—
निम्नलिखित वाक्यों में क्रिया-पदों को शुद्ध करें—
विद्वांस: धनाय न लुभ्यति ।
संयुक्तापाणिग्राही ओडिशीं नर्तिष्यन्ति ।
यूयं शत्रुभ्य: त्रस्यसि किम् ?
विना दोषेण कण्टकानि अपि न व्यत्स्यसि ।
अद्य सायंकाले वयं नगरे भ्रमिष्यामि ।

8. ਯੋਗ ਕ੍ਰਿਆ-ਪਦਾਂ ਨਾਲ ਖਾਲੀ ਸਥਾਨ ਭਰੋ --
उपयुक्त क्रिया-पदों से रिक्त स्थान भरें—

परस्य अहितं कृत्वा दुर्जना: ··· ··· तुष्यसि / तुष्यन्ति ।
सज्जनाः धैर्यशोलाः सहसा न ··· ··· कुप्यन्ति / कोपन्ति ।
स्वास्थ्यस्य वृद्धयै अहं प्रातः ··· ··· भ्रमिष्याम/भ्रमिष्यामि ।
सैनिकः युद्धक्षेत्रे शत्रुभ्यः न ··· ··· त्रस्येत / त्रस्येत् ।
विभीषणस्योपदेशं श्रुत्वा
रावणः विभीषणाय ··· ··· अक्रुध्यत् / अक्रुध्यत ।

੯. ਸੰਸਕ੍ਰਿਤ ਵਿੱਚ ਅਨੁਵਾਦ ਕਰੋ—

ਸੱਚ ਕਹਿਣ ਨਾਲ ਈਸ਼ਵਰ ਪ੍ਰਸੰਨ ਹੁੰਦੇ ਹਨ (ਤੁੱਸ)।

ਸੱਜਣ ਲੋਕ ਦੁਸ਼ਟਾ ਤੋਂ ਡਰਦੇ ਹਨ (ਤ੍ਰਸ)।

ਪ੍ਰੀਖਿਆ ਵੇਲੇ ਕਿਹੜਾ ਵਿਦੀਆਰਥੀ ਪੜ੍ਹਾਈ ਛੱਡ ਕੇ ਘੁੰਮੇਗਾ (ਭ੍ਰਮ)।

ਕੇਵਲ ਖਿਆਲੀ ਪੁਲਾਵਾਂ ਨਾਲ ਕੰਮ ਸਿੱਧ ਨਹੀਂ ਹੋਵਗੇ (ਸਿੱਧ)।

ਬੱਦਲਾਂ ਤੋਂ ਰਹਿਤ ਅਕਾਸ਼ ਵਿੱਚ ਤਾਰੇ ਚਮਕਦੇ ਹਨ (ਦੀਵ)।

संस्कृत में अनुवाद कीजिये—

सत्य कहने से ईश्वर प्रसन्न होते हैं (तुष्)।

सज्जन लोग दुष्टों से डरते हैं। (त्रस्)।

परीक्षा के समय कौन छात्र पढ़ाई छोड़ कर घूमेगा (भ्रम्) ?

केवल दिवा स्वप्न देखने से कार्य सिद्ध नहीं होंगे (सिद्ध्)।

मेघमुक्त आकाश में तारे चमकते हैं (दीव्)।

10. ਆਪਣੀ ਭਾਸ਼ਾ ਵਿੱਚ ਅਨੁਵਾਦ ਕਰੋ--

अपनी भाषा में अनुवाद करें—

मध्याह्नकालीनस्य आतपेन पुष्पाणि अचिरात् शोक्ष्यन्ति ।

लङ्कां प्रविश्य वानराः बहुमूल्यानि द्रव्याणि अनश्यन् ।

असौ सौचिकः केवलं पुरुषवस्त्राणि एव सीव्यति ।

वयं सर्वदा स्वल्पेन तुष्येम ।

अस्मद् देशस्य प्रजाः पुष्यन्तु ।

उद्योगिनं पुरुषसिंहमुपैति लक्ष्मीः
दैवेन देयमिति कापुरुषाः वदन्ति ।
दैवं निहत्य कुरु पौरुषमात्मशक्त्या
यत्ने कृते यदि न सिद्ध्यति कोऽत्र दोषः ॥

षट्चत्वारिंशः पाठः

ਚੁਰਾਦਿ ਗਣ ਵਿੱਚ ਪੜ੍ਹੇ ਗਏ ਧਾਤੂ ।

चुरादि गण में पठित प्रमुख धातु

लट्, लृट्, लोट्, लङ् तथा विधिलिङ् में ।

कल्पलतेव विद्या किं किं न साधयति ।

समयानुसारेण हि वर्तयन्ति विचक्षणाः ।

सन्तः स्वजीवितम् अपि न गणयन्ति मित्रार्थे ।

त्वं तु परगृहेषु विसंवादम् उद्भाव्य कौतुकं मार्गयसि ।

जृम्भस्व सिंहशावक ! अहं तव दन्तान् गणयिष्यामि ।

एषा खलु केसरिणी अवश्यं त्वां लङ्घयिष्यति ।

अजरामरवत् प्राज्ञो विद्याम् अर्थं च चिन्तयेत् ।

ज्ञानार्थिनः विद्यार्थिनश्च शिवम् अर्चयेयुः ।

भोजनात् पूर्वं हस्तपादान् सम्यक् प्रक्षालयेत ।

शिशून् लालयेम, न तु ताडयेम ।

पंजाबप्रदेशं यदा गमिष्यामि तदा सर्षपशाकं रोटिकां च अवश्यं भक्षयिष्यामि ।

प्रमाणितेऽपराधे सति शासकः त्वां दण्डयिष्यति ।

हनूमान् सिन्धोः सलिलं सलीलम् अलङ्घयत् ।

पुरुषोत्तमः श्रीकृष्णः सदा मान्यान् अमानयत् पालनीयान् अपालयत्, दण्डनीयान् च अदण्डयत् ।

कथयन्तु भवन्तः, कीदृशं स्वास्थ्यं भवतां सम्प्रति ।

भूषय इमां शकुन्तलाम् एभिः अलङ्करणैः ।

भोः ! नवीनं काव्यं किमपि रचयतु ।

अद्य विद्यालयस्य प्रथमो दिवसः, देवीं सरस्वतीम् अर्चयत ।

ਸ਼ਬਦਕੋਸ਼ (शब्दकोश:)—

कल्पलता	एक दिव्य वृक्ष जो सभी कामनाओं को पूर्ण करता है, ऐसी प्रसिद्धि है	ਇਕ ਦੇਵੀ ਦਰਖਤ ਜਿਹੜਾ ਸਾਰੀਆਂ ਇੱਛਾਵਾਂ ਪੂਰੀਆਂ ਕਰਦਾ ਹੈ ਇਸ ਤਰ੍ਹਾਂ ਮੰਨਿਆ ਜਾਂਦਾ ਹੈ
वृत्	व्यवहार करना	ਵਿਵਹਾਰ ਕਰਨਾ
विचक्षण	विद्वान्	ਵਿਦਵਾਨ
जीवितम्	प्राण	ਜਾਨ
विसंवाद	कलह	ਲੜਾਈ
उद्भाव्य	उभाड़कर	ਖੜੀ ਕਰਕੇ (ਪੈਦਾ ਕਰਕੇ)
कौतुक	प्रसन्नता, कुतूहल	ਮਜਾ
मृग्	ढूंढ़ना	ਲੱਭਣਾ
जृम्भ्	जम्हाई लेना	ਉਬਾਸੀ
गण्	गिनना	ਗਿਣਨਾ
केसरिणो	सिंही	ਸ਼ੇਰਨੀ
लाङ्घना	लांघना (अतिक्रमण करना)	ਲੰਘਣਾ
अजर-अमर	बुढ़ापा और मृत्यु नहीं हो	ਜਿਸਨੂੰ ਬੁਢਾਪਾ ਤੇ ਮੌਤਨ ਹੋਵੇ ਅਮਰ
प्र—क्षल्	स्वच्छ करना	ਸਾਫ਼ ਕਰਣਾ
सर्षप	सरसों,	ਸਰੋਂ
सलिल	जल	ਜਲ (ਪਾਣੀ)
सलील	लीला पूर्वक	ਖੇਲ-ਖੇਲ ਵਿੱਚ
भूष्	सजाना	ਸਜਾਣਾ

ਨਿਰਦੇਸ਼ (निर्देशः)—

1. ਇਸ ਗਣ ਦੀ ਪਹਿਲੀ ਧਾਤੂ 'ਚੁਰ੍ (ਚੁਰਾਨਾ) ਹੈ। ਇਸ ਲਈ ਇਸਦਾ ਨਾਂ ਚੁਰਾਦਿਗਣ ਪੜ੍ਹਿਆ ਹੈ। ਇਸ ਗਣ ਵਿੱਚ ਧਾਤੂ ਪ੍ਰਤੇ ਦੇ ਗੱਭੇ (अय्) ਜੋੜਿਆ ਜਾਂਦਾ ਹੈ।

   इस गण की प्रथम धातु चुर् (चुराना) है। इस कारण इसका नाम चुरादिगण पड़ा। इसमें धातु और प्रत्यय के बीच णिच् (अय्) जोड़ दिया जाता है।

2. ਇਸ ਗਣ ਵਿੱਚ ਧਾਤੂ ਦੇ ਆਦਿ ਸਵਰ ਨੂੰ (ਅ ਨੂੰ ਛੱਡਕੇ) ਗੁਣ ਹੋ ਜਾਂਦਾ ਹੈ। ਅਗਰ ਧਾਤੂ ਦਾ ਆਦਿ ਸਵਰ (ਅ) ਹੋਏ ਅਤੇ ਉਸਦੇ ਅੱਗੇ ਕੋਈ ਸੰਜੁਕਤ ਸਵਰ ਨ ਹੋਵੇ ਤਾਂ 'ਅ' ਨੂੰ ਦੀਰਘ 'ਆ' ਹੋ ਜਾਂਦਾ ਹੈ। ਜਿਵੇਂ—

   इस गण में धातु के आदि स्वर ('अ' छोड़ कर) का गुण हो जाता है। यदि धातु के आदि में अ हो और आगे कोई संयुक्त अक्षर न हो तो 'अ' का दीर्घ 'आ' हो जाता है। जैसे—

   चुर्+अय्+ति=चोरयति। तड्+अय्+ति=ताडयति।

3. ਚੁਰਾਦਿਗਣ ਕੇ ਪ੍ਰਮੁੱਖ ਧਾਤੂ—

   चुरादिगण के प्रमुख धातु—

   चुर्, तड्, दण्ड्, भूष्, अर्च्, चिति (चिन्त), गुप् (रक्षा), अल्, गण्, कथ्, भक्ष्, मार्ग, मान्, स्थ्, वञ्च्।

ਵਿਆਕਰਣ (व्याकरणम्)—

ਕਥ (ਕਹਨਾ) ਧਾਤੂ ਦਾ ਰੂਪ ਲਟ, ਲੋਟ, ਲ੍ਰਿਟ, ਵਙ ਅਤੇ ਵਿਧਿਲਿਙ ਵਿੱਚ।

कथ् (कहना) धातु का रूप लट्, लोट्, लृट्, लङ् तथा विधिलिङ् में।

लट्	ए० व०	ब० व०
प्र० पु०	कथयति	कथयन्ति
म० पु०	कथयसि	कथयथ
उ० पु०	कथयामि	कथयामः

लृट्	ए० व०	ब० व०
प्र० पु०	कथयिष्यति	कथयिष्यन्ति
म० पु०	कथयिष्यसि	कथयिष्यथ
उ० पु०	कथयिष्यामि	कथयिष्यामः

लङ्	ए० व०	ब० व०
प्र० पु०	अकथयत्	अकथयन्
म० पु०	अकथयः	अकथयत
उ० पु०	अकथयम्	अकथयाम

वि० लिङ्	ए० व०	ब० व०
प्र० पु०	कथयेत्	कथयेयुः
म० पु०	कथयेः	कथयेत
उ० पु०	कथयेयम्	कथयेम

ਅਭਿਆਸ (अभ्यासः)—

1. ਹੇਠ ਲਿਖੇ ਕ੍ਰਿਆਪਦਾਂ ਦੇ ਲਕਾਰ, ਪੁਰੁਸ਼ ਅਤੇ ਵਚਨ ਦਾ ਪਰਿਚੈ ਦਿਓ—

   निम्नलिखित क्रिया-पदों के लकार, पुरुष तथा वचन का परिचय दीजिये—

   पूरयाणि, वर्णयामि, सूचयिष्यसि, गणयेत्, तोलयथ ।

2. ਬ੍ਰੈਕਟ ਵਿੱਚ ਦੱਸੇ ਲਕਾਰਾਂ ਦੇ ਅਨੁਸਾਰ ਹੇਠ ਲਿਖੇ ਧਾਤੂਆਂ ਦੇ ਰੂਪ ਲਿਖੋ—

   कोष्ठक में निर्दिष्ट लकारों के अनुसार निम्नलिखित धातुओं के रूप लिखें—

   आ + कर्ण् (लट्)   वर्ष् (विधिलिङ्)

   गण् +   (लङ्)   रच् (लोट्)

3. ਬ੍ਰੈਕਟ ਵਿੱਚ ਦਿੱਤੇ ਧਾਤੂਆਂ ਤੋਂ ਰੂਪ ਬਣਾਕੇ ਹੇਠ ਲਿਖੇ ਵਾਕਾਂ ਨੂੰ ਪੂਰਾ ਕਰੋ—

कोष्ठक में प्रदत्त धातु से रूप-रचना कर निम्नलिखित वाक्यों को पूरा करें—

श्वः राजा चौरान् ··· ··· ··· ··· ··· ··· (दण्ड्)।
मनुष्याः अन्यान् प्राणिनः न ··· ··· ··· ··· (पीड्)।
छात्राः गुरोः आज्ञां ··· ··· ··· ··· ··· ··· (पाल्)।
मम गृहे प्रविश्य चौराः धनं ··· ··· ··· ··· (चुर्)।
अध्यापकः कक्षायां दुष्टछात्रान् ··· ··· ··· (ताड)।

4. ਹੇਠ ਲਿਖੇ ਕ੍ਰਿਆ-ਪਦਾਂ ਨਾਲ ਵਾਕ ਬਣਾਓ—

निम्नलिखित क्रियापदों से वाक्य बनाइये—

रचयेत्, धारयसि, पालयथ, अचूर्णयत्,
भक्षयति, गणयिष्यति।

5. ਯੋਗ ਕ੍ਰਿਆਪਦਾਂ ਤੋਂ ਖ਼ਾਲੀ ਸਥਾਨ ਭਰੋ—

उपयुक्त क्रियापदों से रिक्त स्थान भरें—

सत्यपि अभावे यूयं परद्रव्याणि न ··· (चोरयेत/चोरयेयम्)।
श्रीरामचन्द्रः पितुः आज्ञाम् ··· ··· (अपालय/आपालयत्)।
मां यथाकालं परीक्षाफलविषये भवान् ··· (सूचयतु/सूचयेयुः)।
किं त्वं ममाभीष्टं ··· ··· ··· ··· (पूरयिष्प्रति/पूरयिष्यसि)?
भोजनात् पूर्वं वयं हस्तपादान् ··· (अक्षालयन्/अक्षालयाम)।

6. 'ਕ' ਕਾਲਮ ਦੇ ਲਕਾਰਾਂ ਨੂੰ 'ਖ' ਕਾਲਮ ਵਿੱਚ ਦਿੱਤੇ ਸਹੀ ਕ੍ਰਿਆਪਦਾਂ ਨਾਲ ਜੋੜੋ—

'क' स्तम्भ के लकारों को 'ख' स्तम्भ में प्रदत्त उपयुक्त क्रियापदों के साथ जोड़ें—

क	ख
लृट्	अचूर्णयम्
लङ्	पालय
लोट्	रचयेत्
विधिलिङ्	वरयसि
लट्	भक्षयिष्यथ

7. ਚੁਰਾਦਿਗਣ ਵਿੱਚ ਪੜ੍ਹੇ ਗਏ ਧਾਤੂ ਰੂਪਾਂ ਵਿੱਚ ਕੀ ਖਾਸਿਅਤ ਮਿਲਤੀ ਹੈ? ਸੰਖੇਪ ਵਿੱਚ ਦੱਸੋ।
चुरादिगण में पठित धातु-रूप में क्या वैशिष्ट्य प्रतीत होता है? संक्षेप में स्पष्ट कीजिए।

8. ਕੁੱਝ ਕ੍ਰਿਆਪਦ ਥੱਲੇ ਦਿੱਤੇ ਗਏ ਹਨ। ਉਨ੍ਹਾਂ ਵਿੱਚੋਂ ਵਿਧਿਲਿੰਙ ਅਤੇ ਲੋਟ ਲਕਾਰ ਦੇ ਕ੍ਰਿਆਪਦਾਂ ਉੱਤੇ ਸਹੀ (✓) ਦਾ ਚਿੰਨ ਲਗਾਓ—
कुछ क्रियापद निम्नलिखित हैं। उनमें से वि० लि० तथा लोट् लकार के क्रियापदों पर सही (✓) चिह्न लगायें—

चूर्णयामः, मार्गयेत्, अर्चयेः, क्षालयानि,
भूषयसि, विरचय, आकर्णयथ।

9. ਆਪਣੀ ਭਾਸ਼ਾ ਵਿੱਚ ਅਨੁਵਾਦ ਕਰੋ—
अपनी भाषा में अनुवाद करें—

भारते कवयः स्वदेशप्रीतिं जनयितुं काव्यानि रचयेयुः।

मनस्वी कार्यार्थी सुखं दुःखं च न गणयति।

नागपञ्चम्यां जनाः नागदेवतां पूजयन्ति।

तव विदेशयात्रायां किं किं सञ्जातं, विस्तरेण कथय।

मातामही अस्मान् पुराणात् इतिहासाच्च कथाम् अकथयत्।

10. ਸੰਸਕ੍ਰਿਤ ਵਿੱਚ ਅਨੁਵਾਦ ਕਰੋ—

ਭਗਤਾਂ ਨੇ ਦੇਵੀ ਲਈ ਮਾਲਾ ਬਣਾਈ (ਰਚ)।

ਦੱਖਣ ਭਾਰਤ ਦੀ ਇਸਤਰੀਆਂ ਬਾਲਾਂ ਨੂੰ ਫੁੱਲਾ ਨਾਲ ਸਜਾਉਂਦੀਆਂ ਹਨ (ਭੂਸ਼)।

ਸਾਡੇ ਦੇਸ ਕੇ ਲੋਕ ਗਾਂ ਨੂੰ ਪੂਜਦੇ ਹਨ (ਅਰਚ)।

ਉਨਾਂ ਦੇ ਵਿਆਹ ਦੀ ਖਬਰ ਸੁਣਦੇ ਹੀ ਅਸੀਂ ਤੁਹਾ ਨੂੰ ਸੂਚਨਾ ਦੇਵਾਂਗੇ (ਸੂਚ)।

ਚੰਗੀ ਸਿਹਤ ਵਾਸਤੇ ਅਸੀਂ ਲੋਕ ਸਾਫ਼ ਕੱਪੜੇ ਧਾਈਏ (ਧ੍ਰੀ)।

संस्कृत में अनुवाद करें—

भक्तों ने देवी के लिये माला वनायी (रच्)।

दक्षिण भारत की महिलाएँ केशों को फूलों से सजाती हैं (भूष्)।

हमारे देश के लोग गाय को पूजते हैं (अर्च्)।

उनके विवाह की खबर सुनते ही हम आपको सूचित करेंगे (सूच्)।

उत्तम स्वास्थ्य के लिये हम लोग साफ वस्त्र धारण करें (धृ)।

गते शोको न कर्त्तव्यो भविष्यं नैव चिन्तयेत्।
वर्तमानेन कालेन वर्तयन्ति विचक्षणाः॥

सप्तचत्वारिंशः पाठः

ਆਤਮਨੇਪਦੀ ਲਟ ਲਕਾਰ ।

आत्मनेपदी लट् लकार ।

मुखरता अवसरे एव विराजते ।

गुणलुब्धाः सम्पदः विवेकिनं पुरुषं स्वयमेव वृणते ।

पण्डिताः वनिताः लताः च अनाश्रयाः न शोभन्ते ।

यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते तत्र देवताः रमन्ते ।

अयि ! नूतनक्रीतायाम् अस्यां शाटिकायां त्वमतीव शोभसे ।

अमृतसरे स्वर्णमन्दिरस्य परिसरे रमणीयं
पवित्रञ्च सरः विद्यते ।

प्रातःकाले स्वनीडान् विहाय पक्षिणः आकाशे उड्डयन्ते ।

सर्वकारः प्रजाभ्यः आयकररूपेण धनं लभते ।

अहं स्वमातरं पितरं च सदा भक्त्या सेवे ।

वयं प्रतिदिनं स्ववाटिकायाः बालपादपान् जलेन सिञ्चामहे ।

अहं मनसा वाचा कर्मणा च सर्वदा सदाचारं श्रये ।

वयं कृषकाः कृषिकर्मणि वृष्टिं, शैत्यम्, आतपं
च सर्वमपि सहामहे ।

प्रथमोऽयम् अपराधः तव, अतः त्वाम् अहं क्षमे ।

जानीमहे यत् दुष्कृतस्य फलं दुःखदायकमेव,
तथापि दुष्कर्मणि प्रवृत्तिः भवति लोकस्य ।

संयुक्तपरिवारे निवसन्तः यूयं सर्वदा मोदध्वे ।

त्वं सदा प्रतियोगितायां उत्तमान् अङ्कान् लभसे ।

त्वं संस्कृतं पंजाबीसंस्कृतपाठमालातः शिक्षसे किम् ?

दिष्ट्या यूयं वर्धध्वे विद्यासर्वार्थेषु च ।

ਸ਼ਬਦਕੋਸ਼ (शब्दकोशः)—

मुखरता	वाचालता (बहुत बोलना)	ਜਿਆਦਾ ਬੋਲਣਾ
वृ	वरण करना, पसन्द करना	ਪਸੰਦ ਕਰਨਾ
रम्	रमना, स्थिर रहना	ਸਥਿਰ ਰਹਿਣਾ
विद्	विद्यमान होना	ਹੋਣਾ
लभ्	प्राप्त करना	ਪ੍ਰਾਪਤ ਕਰਨਾ
श्रि	सहारा लेना	ਸਹਾਰਾ ਲੈਣਾ
सह्	सहना	ਸਹਿਣਾ
ज्ञा	जानना	ਜਾਣਨਾ
मुद्	प्रसन्न होना	ਖੁਸ਼ ਹੋਣਾ
दिष्ट्या	भाग्य से	ਭਾਗ ਨਾਲ
वृध्	बढ़ना	ਬਧਣਾ

ਨਿਰਦੇਸ਼ (निर्देशः)—

1. ਕਾਲ ਨੂੰ ਦੱਸਣ ਵਾਸਤੇ ਜਿਨ੍ਹਾਂ ਧਾਤੂਆਂ ਨੂੰ 'ति तः अन्ति' ਆਦਿ ਪ੍ਰਤੇ ਲੱਗਦੇ ਹਨ, ਉਨ੍ਹਾਂ ਧਾਤੂਆਂ ਨੂੰ ਪਰਸਮਈਪਦੀ ਧਾਤੂ ਕਹਿੰਦੇ ਹਨ, ਅਤੇ ਜਿਨ੍ਹਾਂ ਧਾਤੂਆਂ ਵਿੱਚ 'ते आते अन्ते' ਪ੍ਰਤੇ ਲੱਗਦੇ ਹਨ ਉਨ੍ਹਾਂ ਧਾਤੂਆਂ ਨੂੰ ਆਤਮਨੇਪਦੀ ਧਾਤੂ ਕਹਿੰਦੇ ਹਨ। ਜਿਨ੍ਹਾਂ ਨਾਲ ਕ੍ਰਿਆ ਦਾ ਫਲ ਕਰਤਾ ਨੂੰ ਮਿਲਣ ਵਾਲਾ ਹੋਵੇ ਉੱਥੇ ਆਤਮਨੇਪਦੀ ਪ੍ਰਤੇ ਜੁੜਦੇ ਰਨ। ਬਾਕੀ ਧਾਤੂਆਂ ਨਾਲ ਕਰਤਾ ਦੇ ਅਰਥ ਵਿੱਚ ਪਰਸਮਈਪਦੀ ਪ੍ਰਤੇ ਜੁੜਦੇ ਹਨ। ਜਿਵੇਂ—

   काल को बताने के लिये जिन धातुओं में 'ति, तः, अन्ति' इत्यादि प्रत्यय लगते हैं, उन धातुओं को परस्मैपदी धातु कहते हैं और जिन धातुओं में 'ते, आते, अन्ते' प्रत्यय लगते हैं, उन धातुओं को आत्मनेपदी कहते हैं। जिनसे क्रिया का फल कर्ता को

मिलने वाला हो, वहाँ आत्मनेपद प्रत्यय जुड़ते हैं। शेष धातुओं से कर्ता अर्थ में परस्मैपद प्रत्यय ही जुड़ते हैं।

जैसे—परस्मैपदी — भू + अ + ति = भवति

आत्मनेपदी—सेव् + अ + ते = सेवते।

2. ਕੁੱਝ ਧਾਤੂਆਂ ਉਭੇਪਦੀ ਹੁੰਦੀਆਂ ਹਨ। ਉਭੇਪਦੀ ਧਾਤੂਆਂ ਨੂੰ ਉੱਤੇ ਦੱਸੇ ਸਾਰੇ ਪ੍ਰਤੇ ਲੱਗਦੇ ਹਨ ਜਿਵੇਂ—'ति, तः, अन्ति, ते, आते, अन्ते' ਆਦਿ ਪ੍ਰਤੇ ਜੁੜਦੇ ਹਨ।

कुछ धातुएँ उभयपदी भी होते हैं। उभयपदी धातुओं में उपर्युक्त सभी प्रत्यय अर्थात् 'ति, तः, अन्ति, ते, आते अन्ते' इत्यादि प्रत्यय लगते हैं।

ਵਿਆਕਰਣ (व्याकरणम्)—

ਆਤਮਨੇਪਦ 'ਲਭ' ਧਾਤੂ ਲਟ ਲਕਾਰ

आत्मनेपद 'लभ्' धातु लट् लकार

	ए० व०	ब० व०
प्र० पु०	लभते	लभन्ते
म० पु०	लभसे	लभध्वे
उ० पु०	लभे	लभामहे

ਅਭਿਆਸ (अभ्यासः)—

1. ਬ੍ਰੈਕਟ ਵਿੱਚ ਦਿੱਤੇ ਗਏ ਨਿਰਦੇਸ ਅਨੁਸਾਰ ਹੇਠ ਲਿਖੀ ਧਾਤੂਆਂ ਦੇ ਰੂਪ ਲਿਖੋ—

कोष्ठक में प्रदत्त निर्देश के अनुसार निम्नलिखित धातुओं का रूप लिखें—

सेव् (लट्, उ० पु०, ब० व०), वृत् (लट्, म० पु०, ए० व०)।

कम्प् (लट्, उ० पु०, ए० व०), वृध् (लट्, प्र० पु०, ब० व०)।

शिक्ष् (लट्, म० पु०, ब० व०), लभ् (लट्, प्र० पु०, ए० व०)।

2. ਹੇਠ ਲਿਖੇ ਕ੍ਰਿਆ-ਪਦਾਂ ਦੀ ਮੂਲ ਧਾਤੂ ਪਛਾਣੋ—
निम्नलिखित क्रिया-पदों की मूल धातु पहचानें—
उड्डीयसे, वर्तामहे, आरभे, वर्धन्ते ।

3. ਹੇਠ ਲਿਖੇ ਕ੍ਰਿਆ-ਪਦਾਂ ਦੇ ਲਕਾਰ ਪੁਰੁਸ਼ ਅਤੇ ਵਚਨ ਦਾ ਪਰਿਚੈ ਦਿਓ—
निम्नलिखित क्रिया-पदों के लकार, पुरुष तथा वचन का परिचय दीजिए—
शिक्षसे, वर्ते, कम्पन्ते, सेवध्वे, लभामहे, सहते ।

4. ਹੇਠ ਲਿਖੇ ਕ੍ਰਿਆ-ਪਦਾਂ ਵਿੱਚੋਂ ਆਤਮਨੇ ਪਦ ਵਾਲੇ ਰੂਪ ਉੱਤੇ ਸਹੀ ਦਾ ਚਿੰਨ (✓) ਲਗਾਓ—
निम्नलिखित क्रिया-पदों में आत्मनेपदान्त रूप पर सही (✓) का चिह्न लगायें—

विद्ये,	आगच्छत,	आरभसे,	श्रये,
नृत्यथ,	कुरुत,	सेवसे	ददथ ।

5. ਬ੍ਰੇਕਟ ਵਿੱਚ ਦਿੱਤੀ ਧਾਤੂ ਤੋਂ ਕ੍ਰਿਆ-ਪਦ ਬਣਾਕੇ ਖਾਲੀ ਸਥਾਨ ਭਰੋ—
कोष्ठक में प्रदत्त धातु से क्रिया-पद बनाकर रिक्त स्थान भरें—
कूपस्य जलं स्वभावेन मधुरं ... ... (वृत्) ।
अस्यां पुष्करिण्यां कुमुदाः ... ... (शुभ्) ।
सत्संगत्या मनुष्याः यशः ... ... (लभ्) ।
जलाभावात् इमे वृक्षाः न ... ... (वृध्) ।
अतिशयवातेन वृक्षाः ... ... (कम्प्) ।

6. ਜੋਗ ਕ੍ਰਿਆ-ਪਦਾਂ ਨਾਲ ਖਾਲੀ ਸਥਾਨ ਭਰੋ—
उपयुक्त क्रिया-पदों से रिक्त स्थान भरें—
वार्धक्ये मनुष्याणां रोगाः ... ... (वर्धन्ते / वर्धन्ति) ।
गुरुकुले शिष्याः गुरुन् ... ... (सेवन्ते / सेवते) ।
प्रातः आकाशे पक्षिणः ... ... (उड्डयन्ति / उड्डयन्ते) ।
अन्ततो गत्वा दुर्जनाः कष्टमेव ... ... (सहन्ते / सहते) ।

7. ਹੇਠ ਲਿਖੇ ਕ੍ਰਿਆ-ਪਦਾਂ ਦਾ ਵਾਕਾਂ ਵਿੱਚ ਪ੍ਰਯੋਗ ਕਰੋ—
निम्नलिखित क्रिया-पदों का वाक्यों में प्रयोग करें—
लभामहे, शिक्षन्ते, कम्पसे, सहे, वाधते ।

8. ਕ੍ਰਿਆ-ਪਦਾਂ ਨੂੰ ਸ਼ੁੱਧ ਕਰੋ—
क्रिया-पदों को शुद्ध करें—
मनुष्यः स्वभावतः शाकाहारी वर्ते ।
अध्ययनशीलाः छात्राः सुफलं लभध्वे ।
यूयं कदा कार्यम् आरभते ।
संजातायाम् अति वर्षायां नदीषु वारि वर्धति ।
अत्र स्थित्वा त्वं किमर्थं कष्टं सहते ?

9. ਆਪਣੀ ਭਾਸ਼ਾ ਵਿੱਚ ਅਨੁਵਾਦ ਕਰੋ—
अपनी भाषा में अनुवाद करें—
सर्वकारः आयकररूपेण प्रजायाः धनांशं लभते ।
प्रतियोगितायां वयं बहुविधानि पुरस्काराणि लभामहे ।
किं यूयं सावधानेन निष्ठया च शिक्षध्वे ?
प्रायः दुर्दिनेषु व्यवसायिनः क्षतिं सहन्ते ।
शीततौं दिवसापेक्षया रात्रौ शैत्यं वर्धते ।

10. ਸੰਸਕ੍ਰਿਤ ਭਾਸ਼ਾ ਵਿੱਚ ਅਨੁਵਾਦ ਕਰੋ—
ਮੈਂ ਹਮੇਸ਼ਾ ਸਮੇਂ ਤੋਂ ਪਹਿਲਾਂ ਕੰਮ ਸ਼ੁਰੂ ਕਰਦਾ ਹਾਂ ।
ਲੋਕ ਵਪਾਰ ਤੋਂ ਧੰਨ ਲਾਭ ਕਰਦੇ ਹਨ ।
ਹੁਸ਼ਿਆਰ ਵਿਦਿਆਰਥੀ ਧਿਆਨ ਨਾਲ ਵਿੱਦਿਆ ਸਿੱਖਦੇ ਹਨ ।
ਘਰ ਵਿੱਚ ਚੋਰ ਨੂੰ ਵੇਖਦੇ ਇਹ ਕੁੜੀ ਕੰਬ ਰਹੀ ਹੈ ।
ਅਸੀਂ ਕਦੋਂ ਵੀ ਅਨਿਆਂ ਨੂੰ ਨਹੀਂ ਸਹਿ ਸਕਦੇ ।

संस्कृत में अनुवाद करें—

मैं हमेशा समय से पहले कार्य आरम्भ करता हूँ।

लोग व्यापार से धन लाभ-करते हैं।

मेधावी छात्र एकाग्रता से विद्या सीखते हैं।

घर में चोर को देखकर यह बालिका काँप रही है।

हम कभी अन्याय को नहीं सह सकते।

वसुमतीपतिना नु सरस्वती बलवता रिपुणापि न नीयते।
समविभागहरैर्न विभज्यते विबुधबोधबुधैरपि सेव्यते॥

यो यमर्थं प्रार्थयते यदर्थं घटतेऽपि च।
अवश्यं तदवाप्नोति न चेच्छ्रान्तो निवर्तते॥

अष्टचत्वारिंशः पाठः

ਲੰਙ ਲਕਾਰ ਆਤਮਨੇਪਦੀ ।

लङ् लकार आत्मनेपदी ।

विगते वर्षाकाले अतिवृष्ट्या नदीषु जलमधिकम् अवर्धत।

अर्जुनः द्रोणाचार्यात् धनुर्विद्याम् अलभत ।

कौरवाः पाण्डवाश्च सहैव द्रोणाचार्यात् धनुर्विद्याम् अशिक्षन्त ।

गुरुगोविन्दसिंहः महत्स्वपि विपत्सु धर्मं न अमुञ्चत ।

कुटीरं शून्यं दृष्ट्वा रावणः कपटवेशेन सीताम् अहरत् ।

अशोकवनिकायाम् आगतं रावणं दृष्ट्वा सीता भयात् अवेपत ।

अन्ताराष्ट्रियखेलप्रतियोगितासु पंजावप्रदेशस्य युवकाः पुरस्काराणि अलभन्त ।

किं त्वं पञ्जाबीसंस्कृतपाठमालानामकं पुस्तकं अलभथाः ?

दीक्षान्तसमारोहे यूयं गणवेशेषु अतीव अशोभध्वम् ।

यूयं ह्यः सायंकाले किं भोजनं अपचध्वम् ?

ह्यः विद्यालयस्य भाषणप्रतियोगितायां त्वं संस्कृते सम्यक् अभाषथाः ।

त्वं संस्कृतं शिक्षितुम् अतीव प्रायतथाः, तस्मादेव सुष्ठु संस्कृतं भणसि ।

यूयं परीक्षायाम् उत्तमान् अङ्कान् प्राप्तुं परिश्रमम् अश्रयध्वम् ।

अहम् आरोग्याय भगवन्त भास्करम् आश्रये आरोग्यं च अलभे ।

यात्रया परिश्रान्तोऽहम् अद्य सुचिरम् अशेयि ।

भूकम्पपीडितानां जनानां वयं धनेन श्रमेण च सहायताम् अकुर्महि ।

बालचरस्य वयं छात्राः रुग्णान् विकलाङ्गान् च असेवामहि ।

ਸ਼ਬਦਕੋਸ਼ (शब्दकोशः)—

अतिवृष्टि	अधिक वर्षा	ਬਹੁਤ ਵਰਖਾ ਹੋਣਾ
लभ्	प्राप्त करना	ਪ੍ਰਾਪਤ ਕਰਨਾ
कुटीर	कुटिया (आश्रम)	ਝੌਂਪੜੀ
कपटवेश	छल रूप (नकली रूप)	ਨਕਲੀ ਰੂਪ
अशोकवनिका	अशोक-वन	ਅਸ਼ੋਕ ਵਣ
वेप्	काँपना	ਕੰਬਣਾ
गणवेश	एक जैसा वस्त्र (पूरे समूह का)	ਵਰਦੀ
ह्यः	बीता हुआ कल	ਪਿਛਲਾ ਕੱਲ
प्र–यत्	प्रयत्न करना	ਕੋਸ਼ਿਸ਼ ਕਰਨਾ
भण्	स्पष्ट बोलना	ਸਪਸ਼ਟ ਬੋਲਣਾ
भास्कर	सूर्य	ਸੂਰਜ
बालचर	बाल सेवक संघ (स्काउट)	ਸਕਾਊਟ
रुग्ण	रोगी	ਰੋਗੀ
विकलाङ्ग	ऐसे व्यक्ति, जिनके अङ्गों में कोई विकार हो	ਪਿੰਗਲਾ

ਨਿਰਦੇਸ਼ (निर्देशः)—

1. ਪਹਿਲੇ ਦੀ ਤਰ੍ਹਾਂ ।
   पूर्ववत् ।

ਵਿਆਕਰਣ (व्याकरणम्)—

ਸ਼ੁਭ (ਸ਼ੋਭਿਤ ਹੋਣਾ) ਲੰਙ ਲਕਾਰ ਆਤਮਨੇਪਦੀ ।

शुभ् (शोभित होना) लङ् लकार आत्मनेपदी ।

	ए० व०	ब० व०
प्र० पु०	अशोभत	अशोभन्त
म० पु०	अशोभथाः	अशोभध्वम्
उ० पु०	अशोभे	अशोभामहि

ਅਭਿਆਸ (अभ्यासः)—

1. ਬ੍ਰੈਕਟ ਵਿੱਚ ਦਿੱਤੇ ਨਿਰਦੇਸ਼ ਅਨੁਸਾਰ ਹੇਠ ਲਿਖੇ ਧਾਤੂਆਂ ਦਾ ਰੂਪ ਲਿਖੋ—
कोष्ठक में प्रदत्त निर्देश के अनुसार निम्नलिखित धातुओं का रूप लिखें—
वृत् (लङ्, प्र० पु०)   वृध्   (लङ्, म० पु०)
सह्, (लङ् प्र० पु०)   आ+रभ् (लट्, म० पु०)

2. ਹੇਠ ਲਿਖੇ ਕ੍ਰਿਆਪਦਾਂ ਨਾਲ ਖਾਲੀ ਸਥਾਨ ਭਰੋ —
निम्नलिखित क्रियापदों से रिक्त स्थान भरें—
रामः विश्वामित्रात् धनुर्विद्याम् ... ... (लभ्)।
वृक्षे वानरं दृष्ट्वा पक्षिणः ... ... (उत्+डी)।
जलं सम्प्राप्य उद्यानस्य वृक्षाः ... ... (वृध्)।
ऊर्णवस्त्राभावे अहं रात्रौ अतिशयम् ... ... (कम्प्)।
इदं कार्यं यूयं कदा ... ... (आ+रभ्)।

3. ਹੇਠ ਲਿਖੇ ਕ੍ਰਿਆਪਦਾਂ ਦੀ ਧਾਤੂ, ਲਕਾਰ, ਪੁਰੁਸ਼ ਅਤੇ ਵਚਨ ਦਾ ਪਰਿਚੈ ਦਿਓ—
निम्नलिखित क्रियापदों की धातु, लकार, पुरुष तथा वचन का परिचय दें—
अलभामहि, आरभध्वम्, वर्धामहे,
अशोभन्त, शिक्षे, श्रयन्ते।

4. ਹੇਠ ਲਿਖੇ ਕ੍ਰਿਆਪਦਾਂ ਵਿੱਚੋਂ ਆਤਮਨੇਪਦ ਲੰਙ ਲਕਾਰ ਕ੍ਰਿਆਪਦਾਂ ਨੂੰ ਅਲੱਗ ਕਰੋ—
निम्नलिखित क्रियापदों से आत्मनेपद लङ् लकारान्त क्रियापदों को पृथक् कीजिये—
लभसे, आरभन्त, शिक्षध्वे, अशोभथाः।

5. ਜੋਗ ਕ੍ਰਿਆਪਦ ਲਗਾਓ—
उपयुक्त क्रियापद लगाएँ—

दुर्योधनः बलरामात् गदायुद्धम् ... ...(अशिक्षे/अशिक्षत)।
रात्रौ कमलानि न ... ...(शोभध्वे/शोभन्ते)।
शरत् पूर्णिमायाम् आकाशे चन्द्रमाः......(अशोभथाः/अशोभत)।
पक्षिशावकाः दिनद्वयेन ... ...(उदडयत/उड्डयन्त)।
दरिद्रस्य चारुदत्तस्य गृहे चौराः धनं न...(अलभन्त/अलभध्वम्)।

6. ਹੇਠ ਲਿਖੇ ਕ੍ਰਿਆਪਦਾਂ ਨੂੰ ਵਾਕਾਂ ਵਿੱਚ ਪ੍ਰਯੋਗ ਕਰੋ—
निम्नलिखित क्रियापदों का वाक्यों में प्रयोग करें—

आरभथाः, अशोभत, अवर्धध्वम्, असहत,
अकम्पामहि, अलभे, असेवन्त ।

7. ਵਿਆਕਰਣ ਭਾਗ ਵਿੱਚ ਦਿੱਤੀ ਗਈ ਧਾਤੂਆਂ ਤੋਂ ਅਲੱਗ ਕਿਸੇ ਵੀ ਇੱਕ ਆਤਮਨੇਪਦ ਧਾਤੂ ਦੇ ਲੰਙ ਲਕਾਰ ਵਿੱਚ ਰੂਪ ਲਿਖੋ।
व्याकरण-भाग में दी गई धातुओं से अतिरिक्त किसी भी एक आत्मनेपद धातु का लङ् लकार में रूप लिखें।

8. ਆਤਮਨੇਪਦ ਤੇ ਪਰਸਮਈਪਦ ਧਾਤੂਆਂ ਦਾ ਆਪਸ ਵਿੱਚ ਅਰਥ ਵਿਧੇ ਤੇ ਰੂਪ ਵਿਧੇ ਭੇਦ ਸੰਖੇਪ ਨਾਲ ਲਿਖੋ।
आत्मनेपदी तथा परस्मैपदी धातुओं का परस्पर अर्थगत तथा रूपगत भेद संक्षेप में लिखें।

9. ਆਪਣੀ ਭਾਸ਼ਾ ਵਿੱਚ ਅਨੁਵਾਦ ਕਰੋ—
अपनी भाषा में अनुवाद करें—

अर्जुनः द्रोणाचार्यात् युद्धविद्याम् अशिक्षत।
महत्स्वपि विपत्सु यूयं हिमालय इव अवर्तध्वम्।

'नवम एसियाड' क्रीडाप्रतियोगितायां भारतीयाः बहूनि पदकानि अलभन्त ।

सभायाम् असौ वकमध्ये हंसः इव अशोभत

वयं महाराष्ट्रे भूकम्पपीडितान् जनान् असेवामहि ।

10. ਸੰਸਕ੍ਰਿਤ ਵਿੱਚ ਅਨੁਵਾਦ ਕਰੋ—

संस्कृत में अनुवाद करें—

ਤੁਸੀ ਲੋਕਾਂ ਨੇ ਬੜੀ ਦੇਰ ਨਾਲ ਕੰਮ ਸ਼ੁਰੂ ਕੀਤਾ ।

ਅਸੀਂ ਲੋਕਾ ਨੇ ਲਗਨ ਨਾਲ ਗੁਰੂ ਸੇਵਾ ਕੀਤੀ ।

ਜ਼ੋਰ ਦੀ ਵਰਖਾ ਹੋਣ ਨਾਲ ਛੋਟੀ ਨਦੀਆਂ ਵਿੱਚ ਪਾਣੀ ਵੱਧ ਗਿਆ ।

ਇਸ ਸਾਲ ਵਪਾਰੀਆਂ ਨੇ ਬਹੁਤ ਧੰਨ ਪ੍ਰਾਪਤ ਕੀਤਾ ।

ਮੌਸਮ ਸਹੀ ਹੋਣ ਤੇ ਦਰਖਤ-ਪੌਦੇ ਜਲਦੀ ਵਧਦੇ ਹਨ ।

संस्कृत में अनुवाद करें—

तुम लोगों ने बहुत विलम्ब से कार्य प्रारम्भ किया ।

हम लोगों ने तत्परता से गुरुसेवा की ।

प्रबल वर्षा होने से छोटी नदियों में भी पानी बढ़ गया ।

इस वर्ष व्यापारियों ने अधिक धन प्राप्त किया ।

मौसम अनुकूल होने पर पेड़-पौधे शीघ्र बढ़ते हैं ।

गुणार्जने क्लेशमपार्थकं त्यज प्रगल्भतामाश्रय जीव्यते यया ।
गतः स कालः सह साधुचेष्टितैरकृत्रिमैर्यत्र गुणैरजृम्भ्यत ।।

एकोनपञ्चाशः पाठः

ਆਤਮਨੇਪਦੀ ਲ੍ਰਿਟ, ਲੋਟ, ਵਿਧਿ ਲਿਙ।

आत्मनेपदी लृट्, लोट्, विधिलिङ्।

यदि त्वं सत्कर्म करिष्यसि, तर्हि अवश्यं शुभं फलं लप्स्यसे।
जीवनस्य विषमासु परिस्थितिष्वपि नाहं दैन्यं श्रयिष्ये।
मरणोपरान्तमपि राष्ट्रभक्तानां यशः चिरं काशिष्यते।
एते शुकशावकाः द्वित्रिदिवसेषु उत्पन्नेषु पक्षेषु उड्डयिष्यन्ते।
श्वः त्वं दिल्लीतः अमृतसराय प्रस्थास्यसे ?
यूयं शीतलम् उष्णं वा पेयं पेष्यध्वे ? अहं तु शीतलमेव पेष्ये।
वयं स्वमातॄः पितॄन् च सेवामहे।
पुत्रि ! आत्मसदृशं भर्तारं लभस्व।
त्वं सद्गुणैः दुर्गुणेषु विजयस्व।
ये दीनाः अनाथाः सन्ति तान् अन्नवस्त्रादिभिः भरन्ताम्।
स्वकुलपरम्परां निजसंस्कृतिं च श्रयन्ताम्।
परद्रव्यं लोष्ठवत् ज्ञात्वा परेषां धनं न हरेरन्।
यूयं शत्रून् दृष्ट्वा भीत्या न कम्पेध्वम्।
वयं जीवने सुखं दुःखं च समानतया सहेमहि।
कदाचित् कुपुत्रो जायेत, किन्तु माता कदापि कुमाता न भवति।
ग्रीष्मात् त्राणाय शीतलं पेयं पीयेरन्।
स्वहस्तैः एव भोजनं पचन्ताम्, मा आपणात् सिद्धम् अन्नं नयन्ताम्।
यूयं परीक्षासु उत्तमान् अङ्कान् लभेध्वं येन विद्यालयस्य गौरवं वर्धेत।

ਸ਼ਬਦਕੋਸ਼ (शब्दकोशः)—

लभ्	प्राप्त करना	ਪ੍ਰਾਪਤ ਕਰਨਾ
श्रिञ्	आश्रय लेना, सेवा करना	ਸੇਵਾ ਕਰਨਾ
काश्	चमकना	ਚਮਕਣਾ
प्र–स्था	प्रस्थान करना (जाना)	ਜਾਣਾ
पीङ्	पीना	ਪੀਣਾ
भृञ्	भरण (पालन) करना	ਪਾਲਣ ਕਰਨਾ
सिद्ध	पका हुआ अन्न	ਪਕਿਆ ਹੋਇਆ ਅੰਨ
वृध्	वढ़ना	ਵਧਣਾ

ਨਿਰਦੇਸ਼ (निर्देशः)—

1. ਪਹਿਲੇ ਦੀ ਤਰ੍ਹਾਂ (ਸਤਾਲੀਵਾਂ ਪਾਠ ਦੇ ਨਿਰਦੇਸ਼ ਵੇਖੋ)।
   पूर्ववत् (सप्तचत्वारिंश-पाठ का निर्देश देखें)।

2. ਪਾਠ ਵਿੱਚ "भ्वादि, अदादि, दिवादिगण" ਤੋਂ ਧਾਤੂਰੂਪ ਦਿੱਤੇ ਗਏ ਹਨ।
   इस पाठ में भ्वादि, अदादि, दिवादिगण से धातुरूप दिये गये हैं।

ਵਿਆਕਰਣ (व्याकरणम्)—

वृतु (रहना) आत्मनेपदी लृट्, लोट् तथा विधिलिङ् में।

लृट्	ए० व०	ब० व०
प्र० पु०	वर्तिष्यते	वर्तिष्यन्ते
म० पु०	वर्तिष्यसे	वर्तिष्यध्वे
उ० पु०	वर्तिष्ये	वर्तिष्यामहे

लोट्	ए० व०	ब० व०
प्र० पु०	वर्तताम्	वर्तन्ताम्
म० पु०	वर्तस्व	वर्तध्वम्
उ० पु०	वर्तै	वर्तामहै

विधि लिङ्	ए० व०	ब० व०
उ० पु०।	वर्तेत	वर्तेरन्
म० पु०	वर्तेथाः	वर्तेध्वम्
उ० पु०	वर्तेय	वर्तेमहि ।

ਅਭਿਆਸ (अभ्यासः)—

1. ਹੇਠ ਲਿਖਿਆਂ ਕ੍ਰਿਆ-ਪਦਾਂ ਦੇ ਲਕਾਰ ਪੁਰੁਸ਼ ਵਚਨ ਦੀ ਜਾਣਕਾਰੀ ਦਿਓ—
   निम्नलिखित क्रिया-पदों के लकार, पुरुष तथा वचन का परिचय दें—
   शोभिष्यध्वे, आरभेरन्, वर्धेमहि,
   शिक्षेत, सहिष्यामहे, उड्डयध्वम् ।

2. ਬ੍ਰੈਕਟ ਵਿੱਚ ਦਿੱਤੇ ਨਿਰਦੇਸ਼ ਦੇ ਅਨੁਸਾਰ ਧਾਤੂਰੂਪ ਲਿਖੋ—
   कोष्ठक में दिये गये निर्देश के अनुसार धातुरूप लिखें—
   लभ् (लोट्, म० पु०, व० व०), सह् (लृट्, प्र० पु०, ए० व०)
   उत्–डी (विधिलिङ्, उ० पु०, ब० व०), वृध् (विधिलिङ्, म० पु०, ए० व०), कम्प् (लोट्, उ० पु०, ए० व०) ।

3. ਲ੍ਰਿਟ, ਲੋਟ ਅਤੇ ਵਿਧਿ ਲਿੰਙ ਲਕਾਰ ਦੇ ਸਹੀ ਕ੍ਰਿਆ-ਪਦਾਂ ਨਾਲ ਖਾਲੀ ਸਥਾਨ ਭਰੋ—
   लृट्, लोट् तथा विधिलिङ् लकार के उपयुक्त क्रिया-पदों से रिक्त स्थान भरें—
   जनाः सदुपायेन परिश्रमेण च धनं……… (लभ्)।
   त्वं समयेन कार्यम् ……………… (आ–रभ्)।
   एते बालकाः समयेन सर्वं …………… (शिक्ष्)।
   उदिते सूर्ये तडागे कमलानि ………… (शोभ्)।
   माघमासे पशवोऽपि शीतेन ………… (कम्प्)।

4. ਹਠ ਲਿਖੇ ਕ੍ਰਿਆਪਦਾਂ ਵਿੱਚੋਂ ਵਿਧਿ ਲਿੰਙ ਵਾਲੇ ਪਦਾਂ ਨੂੰ ਅਲੱਗ ਕਰੋ—
निम्नलिखित क्रियापदों में से विधिलिङ् वाले पदों को अलग करें—

वर्धेत, कम्पध्वम्, सहेय, आरप्स्यन्ते,
वर्धेरन्, लप्स्यते, लभन्ताम्, लभेध्वम् ।

5. ਹੇਠ ਲਿਖੇ ਕ੍ਰਿਆਪਦਾਂ ਦਾ ਵਾਕਾਂ ਵਿੱਚ ਪ੍ਰਯੋਗ ਕਰੋ—
निम्नलिखित क्रियापदों का वाक्यों में प्रयोग करें—

लभताम्, सहेत, अवर्धत, शिक्षिष्यामहे, शोभस्व ।

6. 'ਕ' ਕਾਲਮ ਵਿੱਚ ਦਿੱਤੇ ਕ੍ਰਿਆਪਦਾਂ ਨੂੰ 'ਖ' ਕਾਲਮ ਵਿੱਚ ਦਿੱਤੇ ਸਹੀ ਵੇਰਵੇ ਨਾਲ ਜੋੜੋ—
'क' स्तम्भ में प्रदत्त क्रियापदों को 'ख' स्तम्भ में प्रदत्त उपयुक्त विवरण के साथ जोड़ें—

क	ख
वर्धेत	लोट्, उ० पु०, ए० व० ।
सहै	लोट्, म० पु०, ए० व० ।
वर्तस्व	विधिलिङ्, प्र० पु०, ए० व० ।
वर्धेरन्	लृट्, उ० पु०, ब० व० ।
सेविष्यामहे	विधिलिङ्, प्र० पु०, ए० व० ।

7. ਕ੍ਰਿਆਪਦਾਂ ਨੂੰ ਸ਼ੁੱਧ ਕਰੋ—
क्रियापदों को शुद्ध कीजिये—

भवान् समयेन कार्यम् आरभ्य समयेन च समापय ।
भोः शिष्याः ! अद्यैव गुरुकुलं गत्वा शिक्षस्व ।
सः आदौ कष्टं सहिष्यसे चेत् अन्ते सुखमपि लप्स्यसे ।

यूयं गुरुं सेविष्यते चेत् शुभं फलं लप्स्यते ।
भवन्तः राजसदनं गत्वा यथेच्छं धनं लभताम् ।

8. ਬ੍ਰੈਕਟ ਵਿੱਚ ਦਿੱਤੇ ਲਕਾਰ ਅਨੁਸਾਰ ਹੇਠ ਲਿਖੇ ਕ੍ਰਿਆਪਦਾਂ ਨੂੰ ਬਦਲੋ —
कोष्ठक में निर्दिष्ट लकार के अनुसार निम्नलिखित क्रियापदों को परिवर्तित करें—

जायेत (लोट्) सेवेरन् (लट्)
वर्तेय (लृट्) कम्पिष्यते (लोट्)
वर्धताम् (लट्) शोभेय (लृट्)

9. ਆਪਣੀ ਭਾਸ਼ਾ ਵਿੱਚ ਅਨੁਵਾਦ ਕਰੋ—
अपनी भाषा में अनुवाद करें—

पिञ्जरात् मुक्ताः पक्षिणः यथेच्छम् उड्डयन्ताम् ।
संसारे मनुष्याः सत्कार्यं कृत्वा यशसा वर्धेरन् ।
हे कृष्ण ! अहं विजयं, राज्यं, स्वर्गं वा न कांक्षे ।
भारतस्य संस्कृतिः संस्कृतं च विजयताम् ।
भवन्तः अर्थलाभाय अभीष्टं स्थानं गम्यताम् ।

10. ਸੰਸਕ੍ਰਿਤ ਵਿੱਚ ਅਨੁਵਾਦ ਕਰੋ—

ਸਾਡੇ ਦੇਸ ਦਾ ਹਰ ਖਿਲਾੜੀ ਚੰਗਾ ਖੇਡ ਦੇ ਸਾਡੇ ਦੇਸ਼ ਦਾ ਮਾਨ ਵਧਾਏਗਾ (वृध्) ।

ਪੜ੍ਹਾਏ ਹੋਏ ਪਾਠ ਨੂੰ ਵਿਦੀਆਰਥੀ ਨੂੰ ਕਲਾਸ ਵਿੱਚ ਹੀ ਸਮਝ ਲੈਣਾ ਚਹੀਦਾ (बुध्) ।

ਤੁਸੀ ਪੜ੍ਹ-ਲਿਖ ਕੇ ਚੰਗਾ ਅਹੁਦਾ ਪ੍ਰਾਪਤ ਕਰੋ (लभ्) ।

ਸੱਚ ਅਤੇ ਝੂਠ ਵਿੱਚ ਸੱਚ ਕੀ ਹੀ ਜਿੱਤ ਹੋਵੇਗੀ (वि–जि) ।

ਸਾਨੂੰ ਆਪਣੇ ਗੁਰੂਆਂ ਦੀ ਸੇਵਾ ਕਰਨੀ ਚਹੀਦੀ (सेव्) ।

संस्कृत में अनुवाद कीजिये—

हमारे देश का हर खिलाड़ी अच्छा खेल कर हमारे देश का गौरव बढ़ायेगा (वृध्) ।

पढ़ाये हुए पाठ को विद्यार्थी को कक्षा में ही समझ लेना चाहिये (बुध्) ।

आप लोग पढ़-लिख कर अच्छा पद प्राप्त करें (लभ्) ।

सत्य और असत्य में सत्य की ही विजय होगी (वि–जि) ।

हमें अपने गुरुजनों की सेवा करनी चाहिये (सेव्) ।

एकः स्वादु न भुञ्जीत एकश्चार्थान् न चिन्तयेत् ।
एको न गच्छेदध्वानं नैकः सुप्तेषु जागृयात् ।।

पञ्चाशः पाठः

ਉਭੇਪਦੀ-ਧਾਤੂ ।

उभयपदी-धातु

लट्, लङ्, लृट्, लोट् तथा विधिलिङ् ।

उद्याने विकसितानि कुसुमानि सर्वेषां मनांसि हरन्ते ।
इमाः औषधयः हरिष्यन्ति तव व्याधीन् ।
यदा क्षितिपति एव अन्यायं कुरुते तदा कः तं निरोद्धुं क्षमः ।
अहम् अध्ययनानन्तरम् अध्यापनमेव करिष्यामि ।
सभापतयः समागताः, सम्प्रति कुर्वंतां स्वागतगानम् ।
अवकरनिकरं गृहात् दूरं प्रक्षिपेत् ।
प्रायः जनाः स्वगृहस्य अवकरनिकरं मार्गे एव प्रक्षिपन्ति ।
किं भवन्तः मामपि विदेशं नेष्यन्ति ?
अहं विदेशात् वहुमूल्यानि वस्तूनि आनेष्ये ।
आपणात् क्रीतानि इमानि वस्तुजातानि गृहं नय ।
इदानीं रजनी गता, शय्यां मुञ्चस्व ।
शिक्षिताः युवकाः ग्रामं नैव मुञ्चेयुः ।
निदाघस्य सायंकाले उद्यानस्य वालपादपान् सिञ्चेयुः ।
वर्षाकाले आर्द्राः तरवः, अतः मा सिञ्चेथाः ।
रुदन् दशरथः भरताय राज्यम् अयाचत ।
भगीरथः लोककल्याणाय शिवं गङ्गाम् अयाचत् ।
आकाशात् वेगेन पतन्तीं गङ्गां शिवः शिरसि अदधात् ।

जापाननरेशः विवाहसमये स्वराष्ट्रियवेशम् अधत्त ।
अद्य विद्यालयस्य वार्षिकः समारोहः,
सुस्वादुभोजनानि पचन्तु अतिथिभ्यः ।
अहं रुग्णस्य कृते कृशरान्नं पचे ।

ਸ਼ਬਦਕੋਸ਼ (शब्दकोशः)—

क्षितिपति	राजा	ਰਾਜਾ
क्षम्	समर्थ होना	ਕਾਬਲ
अवकर-निकरम्	कूड़े का ढेर	ਕੂੜੇ ਦਾ ਢੇਰ
निदाघ	ग्रीष्म	ਗਰਮੀ
पादप	वृक्ष	ਰੁੱਖ
आर्द्र	गीला	ਗਿੱਲਾ
कृशरान्न	खिचड़ी	ਖਿਚੜੀ

ਨਿਰਦੇਸ਼ (निर्देशः)—

1. ਕੁੱਝ ਧਾਤੂ ਉਭੇਪਦੀ ਹੁੰਦੇ ਹਨ ਜਿਨਾਂ ਦਾ ਰੂਪ 'परस्मैपद' ਅਤੇ 'आत्मनेपद' ਇਨ੍ਹਾਂ ਦੋਨਾਂ ਵਿੱਚ ਚਲਦੇ ਹਨ। ਜਿਵੇਂ—
कुछ धातु उभयपदी होते हैं, जिनका रूप परस्मैपद तथा आत्मनेपद दोनों में चलता है।
जैसे—यज् — यजति / यजते, हृञ् — हरति / हरते।
भज् — भजति / भजते, श्रिङ् — श्रयति / श्रयते।
नीञ् — नयति / नयते, धृञ् — धरति / धरते ।
धा — दधाति / धत्ते, सिञ्च्—सिञ्चति/सिञ्चते ।

ਵਿਆਕਰਣ (व्याकरणम्)—

पच् (पकाना), लट्, परस्मैपदी

प्र० पु०	पचति	पचन्ति
म० पु०	पचसि	पचथ
उ० पु०	पचामि	पचामः

आत्मनेपदी

	ਏ० ਵ०	ਬ० ਵ०
प्र० पु०	पचते	पचन्ते
म० पु०	पचसे	पचध्वे
उ० पु०	पचे	पचामहे

ਅਭਿਆਸ (अभ्यासः)—

1. ਹੇਠ ਲਿਖੇ ਕ੍ਰਿਆਪਦਾਂ ਵਿੱਚੋਂ ਜਿਹੜੇ ਕ੍ਰਿਆ ਪਦ "ਆਤਪਨੇਪਦ" ਵਿੱਚ ਹਨ, ਉਨ੍ਹਾਂ ਨੂੰ "ਪਰਸਮੈਪਦ" ਵਿੱਚ ਜਿਹੜੇ "ਪਰਸਮੈਪਦ" ਵਿੱਚ ਹਨ, ਉਨ੍ਹਾਂ ਨੂੰ "ਆਤਮਨੇਦ" ਵਿੱਚ ਬਦਲੋ—
निम्नलिखित क्रियापदों में से जो आत्मनेपद में हैं, उन्हें परस्मैपद में तथा जो परस्मैपद में हैं, उन्हें आत्मनेपद में बदलें—
कुरुते, भजेरन्, अपचत्, भक्षते, सिञ्चति।

2. ਹੇਠ ਕ੍ਰਿਆਪਦਾਂ ਵਿੱਚੋਂ "ਪਰਸਮੈਪਦ" ਕ੍ਰਿਆਪਦਾਂ ਨੂੰ ਅਲੱਗ ਕਰੋ—
निम्नलिखित क्रियापदों से परस्मैपदान्त पदों को अलग कीजिये—
भजामहे, हरिष्यामः, धरेत, नयथ,
अपचत्, भजामि, यजे, यजतु।

3. ਹੇਠ ਲਿਖੇ ਕ੍ਰਿਆਪਦਾਂ ਦੇ ਲਕਾਰ, ਪੁਰੁਸ਼ ਅਤੇ ਵਚਨ ਦੀ ਜਾਣਕਾਰੀ ਦਿਓ—
निम्नलिखित क्रियापदों के लकार, पुरुष तथा वचन का परिचय दें—
अवहः, ब्रूमः, बिभर्मि, हरस्व, धरन्तु, नयते, नयन्ति।

4. ਹੇਠ ਲਿਖੇ ਕ੍ਰਿਆਪਦਾਂ ਦੀ ਮੂਲ ਧਾਤੂ ਪਛਾਣੋ—
निम्नलिखित क्रियापदों की मूलधातु पहचानिये।
वर्तते, वक्ष्यति, ददताम्, श्रयेः,
अभरत्, धरिष्यामहे, बुध्यस्व, युध्यध्वे।

5. ਬ੍ਰੈਕਟ ਵਿੱਚ ਦਿੱਤੇ ਧਾਤੂ ਤੋਂ ਸਹੀ ਕ੍ਰਿਆਪਦ ਬਣਾ ਕੇ ਖਾਲੀ ਸਥਾਨ ਭਰੋ—

कोष्ठक में निर्दिष्ट धातु से उचित क्रियापद बनाकर रिक्तस्थान भरें—

आकाशे मेघाः सन्ति किन्तु जलं न ··· ··· ··· (मुच्)।
अस्मद्देशस्य कृषकाः वैज्ञानिकपद्धत्या ·· ··· (कृष्)।
अहं ग्रामं गत्वा बाल्यमित्रैः सह ··· ··· ··· (मिल्)।
किं त्वम् इदं कार्यं न ··· ··· ··· ··· ··· ··· (कृ)?
चौराः मे बहूनि द्रव्याणि ··· ··· ··· ··· (चुर्)।

6. ਹੇਠ ਲਿਖੇ ਪਦਾਂ ਦਾ ਵਾਕਾਂ ਵਿੱਚ ਪ੍ਰਯੋਗ ਕਰੋ—

निम्नलिखित पदों का वाक्यों में प्रयोग करें—

सेक्ष्यति, चिनुते, अददात्, अब्रवीत्, नयतु, सहिष्यते।

7. ਸਹੀ ਕ੍ਰਿਆਪਦ ਲਗਾਓ—

उपयुक्त क्रियापद लगायें—

पक्षिणः व्याघ्रस्य जालं ··· ··· ··· ··· (हरथ / हरन्ति)।
कृषकाः देशस्य अन्नाभावं दूरीकर्तुं ··· ··· (कर्षन्ति/कर्षामहे)।
केवलम् आत्मनः कृते वयं न ·· ··· ··· (पचामः/ पचामि)।
ग्रामस्य नार्यः अस्याः नद्याः जलं ··· ··· (नेष्यथ / नेष्यन्ति)।
सन्तः ईश्वरं ··· ··· ··· ··· ··· ··· ··· (भजते / भजन्ति)।

8. ਉਭੈਪਦੀ ਧਾਤੂ ਕਿਸਨੂੰ ਕਹਿੰਦੇ ਹਨ? ਪਾਠ ਵਿੱਚ ਆਈ ਉਭੈਪਦੀ ਧਾਤੂਆਂ ਤੋਂ ਇਲਾਵਾ ਕਿਸੇ ਦੋ ਉਭੈਪਦੀ ਧਾਤੂਆਂ ਦੇ ਲ੍ਰਿਟ ਅਤੇ ਲੰਙ ਲਕਾਰ ਵਿੱਚ ਰੂਪ ਲਿਖੋ।

उभयपदी धातु किसे कहते हैं? पाठ में आए उभयपदी धातुओं के अतिरिक्त किन्हीं दो उभयपदी धातुओं का रूप लृट् तथा लङ् लकार में लिखें।

9. ਆਪਣੀ ਭਾਸ਼ਾ ਵਿੱਚ ਅਨੁਵਾਦ ਕਰੋ—
अपनी भाषा में अनुवाद करें—

य: स्वल्पेन ज्ञानेन सन्तुष्टो भवति तस्य ज्ञानं न वर्धते ।
धनिक: मकरसंक्रान्तौ दरिद्रेभ्य: दानम् अददात् ।
वयं केवलं स्वोदरपूरणाय वृत्तिं न करिष्यामहे ।
उद्यानस्य पुष्पाणि सहृदयानां मनांसि हरन्ति
स्वर्गं कामयन्त: मनुष्या: ज्योतिष्टोमं यजन्ते ।

10. ਸੰਸਕ੍ਰਿਤ ਵਿੱਚ ਅਨੁਵਾਦ ਕਰੋ—

ਹਰੀਸ਼ ਭੁੱਖ ਤੋਂ ਦੁਖੀ ਹੋ ਕੇ ਸ਼ਹਿਦ ਚੱਟ ਰਿਹਾ ਹੈ (लिह्) ।
ਇਸਤ੍ਰੀਆਂ ਵਾਲ ਸਜਾਉਣ ਲਈ ਫੁੱਲ ਤੋੜ ਰਹੀਆਂ ਹਨ (चिञ्) ।
ਰੁੱਖ ਦੀ ਛਾਂ ਵਿੱਚ ਮੁਸਾਫਰ ਚਾਵਲ ਪਕਾ ਰਿਹੇ ਹਨ (पच्) ।
ਪੁੱਤਰ ਦੀ ਇੱਛਾ ਕਰਨ ਵਾਲਾ ਪੁੱਤਰੇਸ਼ਟੀ ਜੱਗ ਕਰੇ (यज्) ।
ਗਿਆਨ ਸਦਾ ਵਧਦਾ ਹੈ (वृध्) ।
ਆਪਣੇ ਪਰਿਵਾਰ ਦਾ ਪਾਲਣਾ ਸਾਰੇ ਕਰਦੇ ਹਨ (भृञ्) ।

संस्कृत में अनुवाद करें—

हरीश क्षुधा से पीड़ित होकर मधु चाट रहा है (लिह्) ।
स्त्रियां केश को सजाने के लिये फूल चुन रही हैं (चिञ्) ।
पेड़ की छाया में पथिक भात पका रहा है (पच्) ।
पुत्र की कामना करने वाला पुत्रेष्टि यज्ञ करे (यज्) ।
ज्ञान नित्य बढ़ता है (वृध्) ।
अपने परिवार का भरण सभी करते हैं (भृञ्)

वरं मौनेन नीयन्ते कोकिलैरिव वासरा: ।
यावत् सर्वजनानन्ददायिनी गौ: प्रवर्तते ।।

एकपञ्चाशः पाठः

ਣਿਜੰਤ ਧਾਤੂ—ਲੱਟ, ਲੋਟ, ਵਿਧਿਲਿੰਗ, ਲੰਗ ਅਤੇ ਲ੍ਰਿਟ ਲਕਾਰਾਂ ਵਿੱਚ ।

णिजन्त धातु—लट्, लोट्, विधिलिङ्, लङ् तथा लृट् में ।

माता रुदन्तं शिशुं चन्द्रं दर्शयति ।
मधुरं गीतं गायन्ती स्वापयति शिशुम् अम्बा ।
यशोदा कृष्णम् अङ्के उपवेशयित्वा गोदुग्धं पाययति ।
सूर्यः कमलानि विकासयति कुमुदानि च निमीलयति ।
ग्रीष्मे पिपासितान् शीतलं जलं पायय ।
त्वं भोजनं पाचय, अहं तावत् अन्यत् सम्पादयानि ।
यूयं उच्चावचस्थाने अवधानतया पदानि स्थापयत ।
मामपि श्रावयतु स्वां नवीनां कविताम् ।
किं मां भवन्तः दर्शनशास्त्रम् अध्यापयिष्यन्ति ?
उपनयनानन्तरमहं पुत्रं वेदं पाठयिष्यामि ।
त्वमिदं मम प्रार्थनापत्रं कार्यालयं प्रापयिष्यसि ?
ग्रीष्मावकाशे छात्रावासात् स्वं पुत्रं गृहम् आनयिष्यामि ।
शैशवे संस्कारो नान्यथा भवति, तस्मात्
शैशवात् एव संस्कृतं पाठयेयुः ।
हरितं वृक्षं मा विच्छेदयेयुः ।
यूयं सम्यक् विचार्य कार्यं साधयेत ।
अध्यापकाः छात्रैः विद्यालयस्य समारोहे नाटकं कारयेयुः ।
दशरथः सुमन्त्रेण रामं वनम् अनाययत् ।

स्वामी भृत्येन भारं गृहम् अवाहयत् ।
सीता रामेण स्वर्णमृगम् अघातयत् ।
कालिदासस्य मेघदूते यक्षः मेघेन सन्देशं
स्वभार्यां प्रति प्रापयत् ।

ਸ਼ਬਦਕੋਸ਼ (शब्दकोशः)—

स्वप्	सोना	ਸੌਣਾ
नि–मील्	वन्द करना	ਬੰਦ ਕਰਨਾ
उच्चावच	ऊँची-नीची जगह	ਉੱਚੀ-ਨੀਂਵੀ ਥਾਂ
वि–छिद्	काटना	ਕੱਟਣਾ
साध्	सिद्ध करना (पूर्ण करना)	ਸਿੱਧ ਕਰਨਾ (ਪੂਰਾ ਕਰਨਾ)
प्र–आप्	प्राप्त होना	ਪ੍ਰਾਪਤ ਹੋਣਾ

ਨਿਰਦੇਸ਼ (निर्देशः)—

1. ਜਦੋਂ ਵਿਅਕਤੀ ਕੋਈ ਕੰਮ ਖੁਦ ਨ ਕਰਕੇ ਦੂਸਰੇ ਤੋਂ ਕਰਵਾਂਦਾ ਹੈ ਜਾਂ ਕੰਮ ਕਰਨ ਦੀ ਪ੍ਰੇਰਣਾ ਦਿੰਦਾ ਹੈ, ਉਸ ਪ੍ਰੇਰਣਾ ਤੋਂ ਹੋਣੇ ਵਾਲੀ ਕ੍ਰਿਆ ਪ੍ਰੇਰਣਾਰਥਕ ਕ੍ਰਿਆ ਅਖਵਾਂਉਂਈ ਹੈ। ਜਿਵੇਂ—ਪੜ੍ਹਨਾ ਤੋਂ ਪੜ੍ਹਵਾਉਣਾ, ਕਰਨਾ ਤੋਂ ਕਰਣਾਵਉਣਾ, ਪਕਾਣਾ ਤੋਂ ਪਕਵਾਉਣਾ ਆਦਿ ਕ੍ਰਿਆਵਾਂ ਪ੍ਰੇਰਣਾਰਥਕ ਕਹੀਆਂ ਜਾਂਦੀਆਂ ਹਨ।

   जव व्यक्ति कोई कार्य स्वयं न करके दूसरे से करवाता है अथवा कार्य करने के लिये प्रेरित करता है, उस प्रेरणा से होने वाली क्रिया प्रेरणार्थक कहलाती है। जैसे—पढ़ना से पढ़ाना, करना से करवाना, पकाना से पकवाना इत्यादि क्रियाएँ प्रेरणार्थक कही जाती हैं।

2. ਕਿਸੇ ਧਾਤੂ ਵਿੱਚ ਜਦੋਂ ਪ੍ਰੇਰਣਾ ਦਾ ਅਰਥ ਲਿਆਣਾ ਹੋਵੇ ਤਾਂ ਧਾਤੂ ਅਤੇ ਤਿਙ ਪ੍ਰਤੇ ਦੇ ਦਰਮਿਆਨ "णिच्" ਜੋੜ ਦਿੰਦੇ ਹਨ। ਅਤੇ "णिच्" ਦਾ 'अय्' ਹੋ ਜਾਂਦਾ ਹੈ। ਜਿਵੇਂ—

2. किसी धातु में जब प्रेरणा का अर्थ लाना हो, तो धातु और तिङ् प्रत्ययों के बीच में 'णिच्' जोड़ देते हैं तथा 'णिच्' का 'अय्' हो जाता है। जैसे—

पठ् + णिच् (अय्) + ति = पाठयति।

हृ + णिच् (अय्) + ति = हारयति।

3. ਣਿਜੰਤ ਧਾਤੂਆਂ ਦੇ ਰੂਪ ਚੁਰਾਦਿਗਣ ਧਾਤੂਆਂ ਦੀ ਤਰ੍ਹਾਂ ਸਾਰਿਆਂ ਲਕਾਰਾਂ, ਤਿਨ੍ਹਾਂ ਵਾਕਾਂ ਅਤੇ ਦੋਨਾਂ ਪਦਾਂ (ਆਤਮਨੇਪਦ, ਪਰਸਮਈਪਦ) ਵਿੱਚ ਚਲਦੇ ਹਨ।

णिजन्त धातुओं के रूप चुरादिगण के धातुओं के समान सभी लकारों, तीनों वाच्यों तथा दोनों पदों (आत्मनेपदी, परस्मैपदी) में चलते हैं।

4. ਆਮ ਤੌਰ ਤੇ ਆ, ਏ, ਐ, ਓ ਨਾਲ ਖਤਮ ਹੋਣ ਵਾਲੇ ਧਾਤੂਆਂ ਵਿੱਚ 'ਅਯ' ਤੋਂ ਪਹਿਲਾਂ 'ਪ' ਜੋੜ ਦਿੱਤਾ ਜਾਂਦਾ ਹੈ। ਜਿਵੇਂ –

प्रायः आ, ए, ऐ, ओ से अन्त होने वाले धातुओं में 'अय्' के पूर्व 'प्' जोड़ दिया जाता है। जैसे—

दा—दापयति, स्ना—स्नापयति, गै—गापयति।

ਵਿਆਕਰਣ (व्याकरणम्)—

ਹੇਠ ਲਿਖੀ ਧਾਤੂਆਂ ਦੇ ਪ੍ਰੇਰਣਾਰਥਕ ਰੂਪ—

निम्नलिखित धातुओं के प्रेरणार्थक रूप—

बुध्	(बोधति)	प्रेर०—	बोधयति
अद्	(अत्ति)	"	आदयति
खाद्	(खादति)	"	खादयति
कुप्	(कुप्यति)	"	कोपयति
मुञ्च्	(मुञ्चति)	"	मोचयति
कृ	(करोति)	"	कारयति
चुर्	(चोरयति)	"	चोरयति
हन्	(हन्ति)	"	घातयति

ਅਭਿਆਸ (अभ्यासः)—

1. ਹੇਠ ਲਿਖੇ ਕ੍ਰਿਆਪਦਾਂ ਦੀ ਅਰਥ ਆਪਣੀ ਭਾਸ਼ਾ ਵਿੱਚ ਲਿਖੋ—
   निम्नलिखित क्रियापदों का अर्थ अपनी भाषा में बताएँ—
   स्मारयिष्यसि, नर्तयिष्यति, असाधयत्, नाशयतु, नमयेत्।

2. ਹੇਠ ਲਿਖੇ ਕ੍ਰਿਆਪਦਾਂ ਦੀ ਮੂਲ ਧਾਤੂ ਪਛਾਣੋ—
   निम्नलिखित क्रियापदों के मूलधातुओं को पहचानें—
   दापयति, आदयतु, पाययिष्यति, गापयेयुः, कारयसि।

3. ਹੇਠ ਲਿਖੇ ਧਾਤੂਆਂ ਦੇ ਰੂਪ ਬ੍ਰੈਕਟ ਵਿੱਚ ਦੱਸੇ ਕਾਲ ਅਨੁਸਾਰ ਲਿਖੋ—
   निम्नलिखित धातुओं के रूप कोष्ठक में निर्दिष्ट काल के अनुसार लिखें—
   श्रु (भूतकाल), भू (वर्तमानकाल), पठ् (भविष्यत् काल)
   कृ (विधिलिङ्), गम् (लोट् लकार), स्था (वर्तमान काल)।

4. ਹੇਠ ਲਿਖੇ ਕ੍ਰਿਆਪਦਾਂ ਦੇ ਲਕਾਰ, ਪੁਰੁਸ਼ ਅਤੇ ਵਚਨ ਦੀ ਜਾਣਕਾਰੀ ਦਿਓ—
   निम्नलिखित क्रियापदों के लकार पुरुष तथा वचन का परिचय दें—
   भावये, जागरिष्यति, अहारयत्, ग्राहयेय, क्रन्दयेः।

5. ਇੱਕ ਪਦ ਬਣਾਓ—
   एकपद बनायें—
   श्रोतुं प्रेरयति, ग्रहीतुं प्रेरयतु, अध्येतुं प्रेरयत्
   भोक्तुं प्रेरयिष्यामि, स्तोतुं प्रेरयेत्।

6. ਹੇਠ ਲਿਖੇ ਵਾਕਾਂ ਵਿੱਚ ਕ੍ਰਿਆਪਦਾਂ ਨੂੰ ਸ਼ੁੱਧ ਕਰੋ—
   निम्नलिखित वाक्यों में क्रियापदों को शुद्ध करें—
   रजको वस्त्राणि रञ्जयामि।

हरिः शिशुं सर्पेण भीषयते ।
त्वं बालकेन भारं वाहयति ।
व्याधः वने पशून् घातयसि ।
माता शिशुं दुग्धं पाययसि ।

7. ਅਰਥ ਵਿੱਚ ਅੰਤਰ ਦੱਸੋ—
अर्थ-भेद दिखाइये—

भीषयते	—	भाययति ।
चलयति	—	चालयति ।
विस्मायति	—	विस्मापयति ।
निशामयति	—	निशम्यति ।

8. ਬ੍ਰੈਕਟ ਵਿੱਚ ਦੱਸੇ ਧਾਤੂ ਦੇ ਣਿਜੰਤ ਰੂਪ ਨਾਲ ਖਾਲੀ ਸਥਾਨ ਭਰੋ—
कोष्ठक में दिये धातु के णिजन्त रूप से रिक्त-स्थान भरें—

अयं साधुः जनान् रामायणकथां ··· ··· ··· ··· (श्रु)।
असौ स्मारकः मञ्चस्थान् अभिनेतॄन् ··· ··· ··· (स्मृ)।
नाविकः जनान् नदीतीरं ··· ··· ··· ··· ··· (उत्+तॄ)।
तृषार्तं तं शीतलं जलं ··· ··· ··· ··· ··· ··· (पा)।
भवान् एतान् बालकान् उपदेशवाक्यैः ··· ··· (बुध्)।

9. ਆਪਣੀ ਭਾਸ਼ਾ ਵਿੱਚ ਅਨੁਵਾਦ ਕਰੋ—
अपनी भाषा में अनुवाद करें—

स्वतन्त्रतादिवसे शिक्षकः छात्रान् मिष्ठान्नं खादयति ।

शिशुः बालसुलभलीलया पितरौ हासयति ।
मातामही रात्रौ अस्मान् कथां श्रावयति ।
शरीरं वा पातयेत् कार्यं वा साधयेत् ।
सीता भर्त्सनया लक्ष्मणं वनं गमयति ।

10. ਸੰਸਕ੍ਰਿਤ ਵਿੱਚ ਅਨੁਵਾਦ ਕਰੋ—

ਵਿਭੀਸ਼ਣ ਨੇ ਰਾਵਣ ਨੂੰ ਬਹੁਤ ਸਮਝਾਇਆ ।

ਅਧਿਆਪਕ ਵਿਦੀਆਰਥੀਆਂ ਤੋ ਕਵਿਤਾ ਲਿਖਵਾਉਂਣਗੇ ।

ਸਰਿਤਾ ਰੁੱਖ ਤੋਂ ਅੰਬ ਡਿਗਾਂਦੀ ਹੈ ।

ਲੋਕ ਆਪਣੇ ਮਤਲਬ ਲਈ ਹਰੇ-ਭਰੇ ਰੁੱਖ ਨ ਕਟਵਾਉਣ ।

ਆਦਮੀ ਭੋਲੇ-ਭਾਲੇ ਪਸ਼ੂਆਂ ਨੂੰ ਨ ਮਰਵਾਉਣ ।

संस्कृत में अनुवाद करें—

विभीषण ने रावण को बहुत समझाया ।

शिक्षक छात्रों से कविता लिखवायेंगे ।

सरिता पेड़ से आम गिराती है ।

लोग अपने स्वार्थ के लिये हरे-भरे पेड़ को नहीं कटायें ।

मनुष्य निरीह पशुओं को न मरवायें ।

प्रच्छादयति दुरात्मा सुजनः प्रकटयति काले परगुणान् ।
तिरयति भुवनानि तमस्तान्येव रविः प्रकाशयति ।।

द्विपञ्चाशः पाठः

व्यिंजनठमंघी ।

व्यञ्जनसन्धि ।

प्रियभाषणे न कश्चिद् व्ययो भवति न वा कष्टमापतति ।

तूष्णीं तिष्ठ ! सम्प्रति शिशुश्शेते ।

गुणिजनेषु निष्फला याच्ञा अपि वरं,
अधमेषु सार्थका अपि नोचिता ।

इष्टं प्रति सर्वेषामाग्रहो भवति ।

श्रीमद्भगवद्गीतायाः तट्टीकानाञ्चाध्ययनम् अवश्यं कर्तव्यम् ।

अद्यत्वे राष्ट्रीयैकतायाः अस्ति महती आवश्यकता ।

इदानीं प्रत्येकमपि कार्यं विद्युच्छक्त्या अल्पसमयेन
सम्पादयितुं शक्यते ।

काकः कोकिलश्च द्वावपि वर्णेन तुल्यौ परं
वागुच्चारणकालमेव तयोः भेदो ज्ञायते ।

भागवतकथायां भक्ताः तल्लीनाः भवन्ति ।

विदुषाम् उल्लेखः सर्वत्र भवति ।

अल्पमपि परगुणं पर्वतीकुर्वन्तः सन्तः कियन्तः सन्ति ?

आकर्षकाणि अभ्रङ्कषाणि भवनानि बलाद्धरन्ति
दर्शकानां मनांसि ।

उत्कलप्रदेशे अतिप्रसिद्धं भगवतः जगन्नाथस्य मन्दिरम् अस्ति ।

भ्रमणं हि नाम उत्कृष्टो व्यायामः ।

विद्यारम्भे वागीश्वरीं सरस्वतीम् अर्चयेयुः ।

स्वच्छमेतज्जलं सर्वथा पातुं योग्यमस्ति ।

राष्ट्रस्योन्नयनं प्रत्येकेषां नागरिकानां कर्तव्यम् ।

ਸ਼ਬਦਕੋਸ਼ (शब्दकोशः)—

व्यय	खर्च	ਖਰਚ
निष्फल	व्यर्थ	ਵਿਅਰਥ
याच्ञा	याचना (माँगना)	ਮੰਗਣਾ
परगुण	दूसरों का गुण	ਦੂਜਿਆਂ ਦਾ ਗੁਣ
पर्वत–ई–कृ	अपर्वत को पर्वत बनाना	ਪਹਾੜ ਦੀ ਤਰ੍ਹਾਂ (ਥੱਡਾ) ਬਨਾਣਾ
अभ्रङ्कष	बादलों को छूने वाला, (बहुत ऊँचा)	ਬੱਦਲਾ ਨੂੰ ਛੂਣ ਵਾਲਾ, (ਬਹੁਤ ਉੱਚਾ)
वागीश्वरी	वाणी की देवी	ਵਾਨੀ ਦੀ ਦੇਵੀ

ਨਿਰਦੇਸ਼ (निर्देशः)—

ਪਦ ਦੇ ਅੰਤ ਵਿੱਚ ਆਉਣ ਵਾਲੇ ਵਿਅੰਜਨ ਦਾ ਪਦ ਦੇ ਸ਼ੁਰੂ ਵਿੱਚ ਆਉਣ ਵਾਲੇ ਵਿਅੰਜਨ ਜਾਂ ਸਵਰ ਨਾਲ ਸੰਜੋਗ ਹੋਣ ਤੇ ਵਿਅੰਜਨ ਸੰਧੀ ਹੁੰਦੀ ਹੈ।
पदान्त व्यञ्जन का पदादि व्यञ्जन या स्वर से संयोग होने पर व्यञ्जन-सन्धि होती है ।

ਵਿਆਕਰਣ (व्याकरणम्)—

ਸ਼ਚੁੱਤਵ ਸੰਧੀ

1. 'ਸ' ਜਾਂ 'ਤ ਵਰਗ' (ਤ, ਥ ਦ, ਧ, ਨ) ਦੇ ਬਾਅਦ 'ਸ਼' ਜਾਂ ਚ ਵਰਗ (ਚ, ਛ, ਜ, ਝ, ਞ) ਹੋਵੇ ਤਾਂ 'ਸ' ਨੂੰ 'ਸ਼' ਅਤੇ ਤ ਵਰਗ ਨੂੰ ਚ ਵਰਗ ਹੋ ਜਾਂਦਾ ਹੈ। ਜਿਵੇਂ—

शचुत्व सन्धि—

'स्' या तवर्ग (त्, थ्, द्, ध्, न्) के बाद 'श्' या चवर्ग (च्, छ्, ज्, झ्, ञ्) हो, तब 'स्' का 'श्' तथा तवर्ग का क्रमशः चवर्ग हो जाता है । जैसे—

सत् + चरितम् = सच्चरितम्
शिशुस् + शेते = शिशुश्शेते

कस् + चित् = कश्चित्

तत् + छवि: = तच्छवि:

ਸ਼ਟੁੱਤਵ ਸੰਧੀ—

2. 'ਸ' 'ਜਾਂ ਤ ਬਰਗ' ਦੇ ਬਾਅਦ 'ਸ਼' (ष) ਜਾਂ 'ਟ ਬਰਗ' (ਟ, ਠ, ਡ, ਢ, ਣ) ਹੋਵੇ ਤਾਂ 'ਸ' ਦਾ 'ਸ਼' (ष) ਅਤੇ ਤ ਬਰਗ ਦਾ ਟ ਬਰਗ ਹੋ ਜਾਂਦਾ ਹੈ। ਜਿਵੇਂ—

ष्टुत्वसन्धि—

पदान्त में 'स्' या तवर्ग हो और पदादि में 'ष्' या टवर्ग (ट्, ठ्, ड्, ढ्, ण्) हो, तो 'स्' का 'ष्' तथा तवर्ग का क्रमश: टवर्ग हो जाता है। जैसे—

तत् + टीका = तट्टीका

उत् + डयनम् = उड्डयनम्

रामस् + षष्ठः = रामष्षष्ठः

3. ਪਦਾਂਤ 'ਤ, ਦ, ਨ' ਦੇ ਬਾਅਦ 'ਲ' ਹੋਵੇ ਤਾਂ ਤ, ਦ, ਨ ਦੀ ਜਗਾਂ ਤੇ 'ਲ' ਹੋ ਜਾਂਦਾ ਹੈ। ਅਤੇ ਜਿੱਥੇ 'ਨ' ਹੋਵੇ ਉੱਥੇ 'ਨ' ਤੋਂ ਪਹਿਲੇ ਦਾ ਸਵਰ ਸਾਨੁਨਾਸਕ ਹੋ ਜਾਂਦਾ ਹੈ। ਜਿਵੇਂ—

यदि पदांत त्, द्, न् के वाद पदादि 'ल्' हो, तो त्, द्, न् के स्थान पर 'ल्' हो जाता है और जहाँ 'न्' हो वहाँ 'न्' के पूर्व का स्वर सानुनासिक (ँ) हो जाता है। जैसे—

उत् + लेख: = उल्लेख:

महान् + लाभ: = महाँल्लाभ:

4. ਅਗਰ ਪਹਿਲੇ ਵਰਗ ਦਾ ਪਹਿਲਾ ਵਰਣ (ਕ, ਚ, ਟ, ਤ, ਪ) ਹੋਵੇ ਅਤੇ ਅੱਗੇ 'ਨ' ਜਾਂ 'ਮ' ਹੋਵੇ ਤਾਂ ਪਹਿਲੇ ਵਰਣ ਨੂੰ ਉਸੀ ਵਰਗ ਦਾ ਪੰਜਵਾਂ ਵਰਣ ਹੋ ਜਾਂਦਾ ਹੈ। ਜਿਵੇਂ—

यदि पदान्त में वर्गों का प्रथम वर्ण (क्, च्, ट्, त्, प्) हो और पदादि न् या म् हो, तो वर्गों के प्रथम वर्ण का उसी वर्ग का

पाँचवाँ वर्ण हो जाता है । जैसे—

दिक् + नागः = दिङ्नागः

जगत् + नाथः = जगन्नाथः

5. ਅਗਰ ਪਦ ਦੇ ਅੰਤ ਵਿੱਚ 'ਮ' ਪਹਿਲੇ ਹੋਵੇ ਅਤੇ ਬਾਅਦ ਵਿੱਚ ਕੋਈ ਵਿਅੰਜਨ ਹੋਵੇ ਤਾਂ ਮ ਦੀ ਜਗਾਂ ਅਨੁਸਆਰ ਹੋ ਜਾਂਦਾ ਹੈ। ਜਿਵੇਂ—
यदि पदान्त में 'म्' हो और पदादि कोई व्यञ्जन हो, तो 'म्' का अनुस्वार (ं) हो जाता है। जैसे—

मृत्युम् + जयति = मृत्युञ्जयः

सम् + गमः = संगमः

6. ਪਦ ਦੇ ਅੰਤ ਵਿੱਚ ਆਉਣ ਵਾਲੇ 'ਤ, ਨ' ਤੋ ਬਾਅਦ 'ਸ਼' ਹੋਵੇ ਤਾਂ ਤ ਦੀ ਜਗਾਂ 'ਚ' ਅਤੇ ਬਾਅਦ ਵਾਲੇ 'ਸ਼' ਦੀ ਜਗ੍ਹਾਂ 'ਛ' ਹੋ ਜਾਂਦਾ ਹੈ ਅਤੇ ਪਦਾਂਤ 'ਨ' ਦੀ ਜਗਾਂ 'ਞ' ਹੋ ਜਾਂਦਾ ਹੈ। ਜਿਵੇਂ—
पदान्त त् के वाद 'श्' हो, तो 'त्' का च् और 'श्' का 'छ्' हो जाता है तथा पदान्त 'न्' के वाद 'श्' हो तो 'न्' का 'ञ्' हो जाता है। जैसे—

तत् + श्रुत्वा = तच्छ्रुत्वा

भगवत् + शङ्करः = भगवच्छङ्करः

धावन् + शशः = धावञ्शशः

7. ਵਰਗ ਦੇ ਪੰਜਵੇਂ ਅੱਖਰ ਨੂੰ ਛੱਡ ਕੇ ਕੋਈ ਵੀ ਵਿਅੰਜਨ ਵਰਣ ਹੋਵੇ ਅਤੇ ਅੱਗੇ 'ਹ' ਆਵੇ ਤਾਂ ਪਹਿਲੇ ਵਰਣ ਨੂੰ ਉਸੀ ਵਰਗ ਦਾ ਤੀਸਰਾ ਅੱਖਰ ਅਤੇ 'ਹ' ਨੂੰ ਉਸੀ ਵਰਗ ਦਾ ਚੌਥਾ ਅੱਖਰ ਹੋ ਜਾਂਦਾ ਹੈ। ਜਿਵੇਂ—
वर्गों के पाँचवें अक्षरों को छोड़कर कोई भी व्यञ्जन वर्ण पदान्त में हो और पदादि में 'ह' आये, तो पदान्तीय वर्ण का उसी वर्ग का तीसरा अक्षर तथा 'ह' का उसी वर्ग का चौथा अक्षर हो जाता है।

जैसे—तत् + हितम् = तद्धितम्

अप् + हरणम् = अब्भरणम्

वाक् + हरिः = वाग्घरिः

8. ਪਦਾਂਤ ਹਰਿਸ ਸਵਰ ਦੇ ਬਾਅਦ ਙ, ਣ, ਨ ਹੋਵੇ ਅਤੇ ਉਨ੍ਹਾਂ ਤੋਂ ਅੱਗੇ ਕੋਈ ਸਵਰ ਹੋਵੇ ਤਾਂ ਙ, ਣ, ਨ ਦੋਗੁਣੇ ਹੋ ਜਾਂਦੇ ਹਨ। ਅਰਥਾਤ ਙ, ਣ, ਨ ਦੋ-ਦੋ ਹੋ ਜਾਂਦੇ ਹਨ। ਜੈਸੇ—

पदान्त में ह्रस्व स्वर के बाद यदि ङ्, ण्, न् हो और पदादि कोई स्वर हो, तो ङ्, ण् न् का द्वित्व हो जाता है। अर्थात् दो-दो हो जाते हैं। जैसे—

प्रत्यङ् + आत्मा = प्रत्यङ्ङात्मा

धावन् + अश्वः = धावन्नश्वः

9. ਪਹਿਲੇ ਪਦ ਦੇ ਅੰਤ ਵਿੱਚ ਆਉਣ ਵਾਲਾ ਕ, ਚ, ਟ, ਤ, ਪ ਹੋਵੇ ਅਤੇ ਬਾਅਦ ਵਿੱਚ ਕੋਈ ਸਵਰ ਜਾਂ ਵਰਗ ਦਾ ਤੀਸਰਾ, ਚੌਥਾ ਜਾਂ ਯ, ਰ, ਲ, ਵ ਅੱਖਰ ਹੋਵੇ ਤਾਂ ਪਹਿਲਾ ਅੱਖਰ ਨੂੰ ਉਸੀ ਵਰਗ ਦਾ ਤੀਸਰਾ ਅੱਖਰ ਹੋ ਜਾਂਦਾ ਹੈ। ਜਿਵੇਂ—

पदान्त में क्, च्, ट्, त्, प् हो तथा पदादि में कोई स्वर या वर्ग का तीसरा, चौथा अथवा य्, र्, ल्, व् हो, तो पदान्तीय अक्षर का उसी वर्ग का तीसरा अक्षर हो जाता है। जैसे—

वाक् + ईशः = वागीशः ।

जलमुक् + गर्जति = जलमुग्गर्जति।

ਅਭਿਆਸ (अभ्यासः)—

1. ਸੰਧੀ ਕਰੋ—

सन्धि कीजिये—

तत् + छत्रम्,	अच् + अन्तः
तत् + लीनः,	संपत् + जालम्
सत् + शास्त्रम्,	धावन् + अश्वः

2. ਸੰਧੀ ਛੇਦ ਕਰੋ—

सन्धि-विच्छेद कीजिये—

एतदस्ति, किम्पुरुषः, तन्नास्ति,

किङ्करोषि, वाङ्मात्रम्, पठन्नस्मि ।

3. ਸ਼ੁੱਧ ਸੰਧੀ ਤੇ ਨਿਸ਼ਾਨ (✓) ਲਗਾਓ—

शुद्ध सन्धि को चिह्नित (✓) करें—

तडिल्लता / तडिललता ।

तच्छिवः / तच्शिवः ।

शृण्वन्नस्ति / शृण्वनस्ति ।

किङ्करोषि / किम्करोषि ।

4. ਪਾਠ ਤੋਂ ਇਲਾਵਾ ਸ਼ਚੁੱਤਵ ਸੰਧੀ ਦੇ ਪੰਜ ਉਦਾਹਰਣ ਦਿਓ । ਜਿਵੇਂ—

पाठ के अतिरिक्त पाँच श्चुत्व-सन्धि के उदाहरण प्रस्तुत करें ।

जैसे—सच्चरित्रम् ।

5. ਸਵਰ ਸੰਧੀ ਅਤੇ ਵਿਅੰਜਨ ਸੰਧੀ ਨੂੰ ਅਲੱਗ-ਅਲੱਗ ਕਰੋ—

स्वर-सन्धि तथा व्यञ्जन-सन्धि को अलग-अलग लिखें—

तदपि, इत्यादि, तदापि, ममैव,

किन्नरः, संदेहः, तस्यापि, सज्जनः ।

6. ਵਾਕਾਂ ਵਿੱਚ ਪ੍ਰਯੋਗ ਕਰੋ—

वाक्यों में प्रयोग करें—

कुर्वन्नस्ति, पश्चात्तापः, नराणाम्,

विद्युल्लेखा, महद्धनम्, तच्छिष्यः ।

7. 'ਕ' ਕਾਲਮ ਵਿੱਚ ਦਿੱਤੀ ਸੰਧੀ ਨੂੰ 'ਖ' ਕਾਲਮ ਵਿੱਚ ਦਿੱਤੀ ਯੋਗ ਸੰਧੀ ਪ੍ਰਕਿਰਿਆ ਨਾਲ ਜੋੜੋ ।

7. 'क' स्तम्भ में प्रदत्त सन्धि को 'ख' स्तम्भ में प्रदत्त उपयुक्त सन्धि प्रक्रिया के साथ जोड़ें—

क	ख
तन्मित्रम्	त् → च्
तच्छात्र:	त् → ल्
उल्लेख:	त् → न्
किङ्कर:	क् → ग्
दिग्गज:	म् → ङ्

8. ਸੰਧੀ ਕਰੋ—
सन्धि कीजिये—

वाक् + दानम्	जगत् + ईश:
दिक् + अम्बर:	सत् + आचार:
अच् + अन्त:	तत् + धनम्
षट् + दर्शनम्	जगत् + बन्धु:

9. ਆਪਣੀ ਭਾਸ਼ਾ ਵਿੱਚ ਅਨੁਵਾਦ ਕਰੋ—
अपनी भाषा में अनुवाद करें—

परमात्मा ईश्वरात् पृथङ्नास्ति ।

ज्ञानं विना त्वज्जीवनं व्यर्थमेवास्ति ।

दैवायत्तं कुले जन्म मदायत्तञ्च पौरुषम् ।

सच्चिदानन्दस्य ब्रह्मण: किं स्वरूपम् ?

ईश्वरस्य कृपया सर्वे जना: नीरोगा: भवेयु: ।

10. ਸੰਸਕ੍ਰਿਤ ਵਿੱਚ ਅਨੁਵਾਦ ਕਰੋ—

ਰਸਹੀਣ (निर् + रस) ਫਲ ਕਿਸਨੂੰ ਚੰਗਾ ਲਗਦਾ ਹੈ।

ਜੀਵਨ ਭਰ (यावत् + जीवन) ਤੁਸੀ ਸੁਖੀ ਰਹੋ।

ਸ਼ਾਂਤ (निर् + रव्) ਮਾਹੌਲ ਰਿਸ਼ਿਆ ਨੂੰ ਚੰਗਾ ਲੱਗਦਾ ਹੈ।

ਵਾਣੀ ਦੇਵੀ (वाक् + देवी) ਵਿਦੀਆਵਾਂ ਦੀ ਮੂਲ ਦੇਵਤਾ ਹੈ।

ਜਗਤ ਦਾ ਸਵਾਮੀ (जगत् + ईश्वर) ਸਭ ਦੀ ਰੱਖਿਆ ਕਰਦਾ ਹੈ।

संस्कृत में अनुवाद करें—

रस-हीन (निर् + रस) फल किसको अच्छा लगता है ?

जीवन भर (यावत् + जोवन) आप सुखो रहें।

शान्त (निर् + रव्) परिवेश ऋषियों को अच्छा लगता है।

वाणी देवी (वाक् + देवी) विद्याओं की अधिष्ठात्री देवता है।

जगत् का स्वामी (जगत् + ईश्वर) सब की रक्षा करता है।

परगुणपरमाणून् पर्वतीकृत्य नित्यम्।
निजहृदि विलसन्तः सन्ति सन्तः कियन्तः॥

त्रिपञ्चाशः पाठः

टाबुडाप् ।

स्त्रीप्रत्यय (टाप् एवं ङीष्-ङीप्)।

सरोजिनीनायडू भारतकोकिला आसीत् ।

नवरात्रेषु जनाः कुमारीपूजां कुर्वन्ति ।

मम कन्यासु ज्येष्ठा अपर्णा सुशिक्षिता अस्ति ।

सङ्गीतगोष्ठ्यां गायिका अनुराधा श्रोतॄन् मुग्धान् अकारयत् ।

कलाभिः वर्धमानः चन्द्रः पूर्णिमायां पूर्णचन्द्रो भवति ।

महाराजदशरथस्य तिस्रः राज्ञ्यः आसन् ।

पुरा नार्योऽपि युद्धकलायां प्रवीणाः भवन्ति स्म ।

आचार्याणी मातुः तुल्या पूज्या भवति ।

अद्यत्वे युवतयोऽपि सोत्साहेन सेनायां नियुक्ताः भवन्ति ।

मम मातुलानी मयि अत्यधिकं स्निह्यति ।

लक्ष्मीं प्राप्य जनाः दर्पिताः भवन्ति ।

पितामह्याः भजनं गीतञ्च प्रत्यहं प्रशिक्षस्व ।

गोपिकासु राधिका अत्यधिका प्रिया आसीत् श्रीकृष्णस्य ।

राजस्थानप्रान्ते चैत्रमासे कुमार्यः पार्वतीसहितं शिवं पूजयन्ति, इदं च पर्व तत्र 'गणगौर' इति नाम्ना प्रसिद्धम् ।

ਸ਼ਬਦਕੋਸ਼ (शब्दकोशः)—

आचार्याणी	आचार्य की पत्नी	ਗੁਰੂ ਦੀ ਪਤਨੀ
मातुलानी	मामी	ਮਾਮੀ
दर्प	घमंड	ਘਮੰਡ
पितामही	दादी	ਦਾਦੀ
प्रत्यहं	प्रति दिन	ਹਰ ਰੋਜ

ਨਿਰਦੇਸ਼ (निर्देशः)—

1. ਸੰਸਕ੍ਰਿਤ ਵਿੱਚ ਤਿੱਨ ਲਿੰਗ ਹੁੰਦੇ ਹਨ—ਇਸਤ੍ਰੀ ਲਿੰਗ, ਪੁੱਲਿੰਗ ਅਤੇ ਨਪੁੰਸਕ ਲਿੰਗ। ਇਹ ਪਿਛਲੇ ਪਾਠਾਂ ਵਿੱਚ ਦੱਸਿਆ ਜਾ ਚੁਕਾ ਹੈ। ਕੁੱਝ ਸ਼ਬਦ ਨਿੱਤ ਪੁੱਲਿੰਗ ਹੁੰਦੇ ਹਨ, ਜਿਵੇਂ—भानुः, रविः, हरिः ਆਦਿ। ਕੁੱਝ ਸ਼ਬਦ ਨਿੱਤ ਇਸਤ੍ਰੀ ਲਿੰਗ ਹੁੰਦੇ ਹਹ, ਜਿਵੇਂ—लता, प्रजा, पृथ्वी, भूमि ਆਦਿ। ਕੁੱਝ ਸ਼ਬਦ ਨਿੱਤ ਨਪੁੰਸਕ ਲਿੰਗ ਹੁੰਦੇ ਹਨ, ਜਿਵੇਂ—पत्रम्, फलम्, जलम् ਆਦਿ।

   संस्कृत में तीन लिङ्ग होते हैं—स्त्रीलिङ्ग, पुंल्लिङ्ग और नपुंसक-लिङ्ग। यह पिछले पाठों में बताया जा चुका है। कुछ शब्द नित्य पुं० होते हैं, जैसे—भानुः, रविः, हरिः इत्यादि। कुछ शब्द नित्य स्त्रीलिङ्ग होते हैं, जैसे—लता, प्रजा, पृथ्वी, भूमि इत्यादि। कुछ शब्द नित्य नपुं० लिङ्ग होते हैं, जैसे—पत्रम्, फलम्, जलम् इत्यादि।

2. ਕੁੱਝ ਸ਼ਬਦ ਏਸੇ ਵੀ ਹੁੰਦੇ ਹਨ ਜਿਹੜੇ ਮੂਲ ਰੂਪ ਵਿੱਚ ਪੁੱਲਿੰਗ ਹੁੰਦੇ ਹਨ ਪਰੰਤੂ ਉਨ੍ਹਾਂ ਨਾਲ 'टाप्' (आ), 'ङीप्', 'ङीष्' (ई) ਆਦਿ ਇਸਤ੍ਰੀ ਲਿੰਗ ਪ੍ਰਤੇ ਜੋੜ ਕੇ ਇਨਾਂ ਦਾ ਰੂਪ ਇਸਤ੍ਰੀ ਲਿੰਗ ਵਿੱਚ ਬਣਦਾ ਹੈ। ਜਿਵੇਂ—

   कुछ शब्द ऐसे भी होते हैं, जो मूलतः तो पुंल्लिङ्ग होते हैं, पर इनमें 'टाप्' (आ), 'ङीप्', 'ङीष्' (ई) इत्यादि स्त्रीलिङ्ग प्रत्यय जोड़ने पर इनका रूप स्त्री० में भी बनता है। यथा—

अज	अज + टाप् (आ) = अजा	
बाल	बाल + टाप् (आ) = बाला	
नर्तक	नर्तक + ङीष् (ई) = नर्तकी	
गौर	गौर + ङीष् (ई) = गौरी	
राजन्	राजन् + ङीप् (ई) = राज्ञी	

ਵਿਆਕਰਣ (व्याकरणम्)—

1. ਅਕਾਰਾਂਤ ਸ਼ਬਦਾਂ ਵਿੱਚ ਇਸਤ੍ਰੀ ਬੋਧਕ 'ਟਾਪ੍' ਪ੍ਰਤੇ ਲੱਗਦਾ ਹੈ। 'ਟਾਪ੍' ਦੇ ਟ੍ ਅਤੇ ਪ੍ ਦਾ ਲੋਪ ਹੋ ਜਾਂਦਾ ਹੈ। 'ਆ' ਬਾਕੀ ਰਹਿ ਜਾਂਦਾ ਹੈ।
अकारान्त शब्दों में स्त्रीबोधक 'टाप्' प्रत्यय लगता है। 'टाप्' के ट् और प् का लोप होकर 'आ' शेष रह जाता है।
अज + आ = अजा, मूषक + आ = मूषिका,
अश्व + आ = अश्वा, चटक + आ = चटका।

2. 'ऋकारान्त' ਅਤੇ 'नकारान्त' ਸ਼ਬਦਾਂ ਵਿੱਚ ਇਸਤ੍ਰੀਬੋਧਕ 'ङीप्' ਪ੍ਰਤੇ ਲਗਾਇਆ ਜਾਂਦਾ ਹੈ। 'ङीप्' ਦਾ ਸਿਰਫ 'ई' ਬਾਕੀ ਰਹਿ ਜਾਂਦਾ ਹੈ। ਜਿਵੇਂ—
ऋकारान्त और नकारान्त शब्दों में स्त्रीबोधक ङीप् प्रत्यय लगाया जाता है। 'ङीप्' का मात्र 'ई' शेष रहता है।
कर्तृ+ई=कर्त्री, दण्डिन् + ई = दण्डिनी, राजन् + ई = राज्ञी, धातृ + ई = धात्री, श्वन् + ई = शुनी।

3. ਨਰਵਾਚਕ ਪੁੱਲਿੰਗ ਸ਼ਬਦਾਂ ਨੂੰ ਇਸਤ੍ਰੀਵਾਚਕ ਬਣਾਉਣ ਲਈ 'ङीष्' ਪ੍ਰਤੇ ਲਗਾਇਆ ਜਾਂਦਾ ਹੈ। 'ङीष्' ਦਾ ਸਿਰਫ 'ई' ਬਾਕੀ ਰਹਿ ਜਾਂਦਾ ਹੈ। ਜਿਵੇਂ—
नरवाचक पुंल्लिङ्ग शब्दों को स्त्रीवाचक बनाने के लिये 'ङीष्' प्रत्यय लगाया जाता है। ङीष् का (ई) शेष रहता है। जैसे—
गोप + ई = गोपी, ब्राह्मण + ई = ब्राह्मणी,
नर्तक + ई = नर्तकी, रजक + ई = रजकी।

4. इन्द्र, भव, रुद्र, मातुल, उपाध्याय, आचार्य ਆਦਿ ਸ਼ਬਦਾਂ ਨਾਲ ङीप् ਪ੍ਰਤੇ ਜੋੜਨ ਤੋਂ ਪਹਿਲਾਂ 'आन्' ਜੋੜਿਆ ਜਾਂਦਾ ਹੈ। ਜਿਵੇਂ—
इन्द्र, भव, रुद्र, मातुल, उपाध्याय, आचार्य आदि शब्दों में 'ङीप्' प्रत्यय जोड़ने से पहले 'आन्' जोड़ा जाता है। जैसे—

मातुल + आन् + ई = मातुलानी।
इन्द्र + आन् + ई = इन्द्राणी।
आचार्य + आन् + ई = आचार्याणी।

इसी प्रकार रुद्राणी, भवानी, यवनानी आदि।

ਅਭਿਆਸ (अभ्यासः)—

1. ਹੇਠ ਲਿਖੇ ਸ਼ਬਦਾਂ ਦਾ ਇਸਤ੍ਰੀਲਿੰਗ ਰੂਪ ਕੀ ਹੋਵੇਗਾ ?
निम्नलिखित शब्दों का स्त्रीलिङ्ग रूप क्या होगा ?

राजन्, पुत्र, श्रीमत्, उपाध्याय।

2. ਹੇਠ ਲਿਖੇ ਸ਼ਬਦਾਂ ਦਾ ਪੁਲਿੰਗ ਰੂਪ ਬਣਾਓ—
निम्नलिखित शब्दों का पुंल्लिङ्ग रूप बनायें—

सुता, विदुषी, कुमारी, गौरी, अजा, नायिका, हंसी।

3. ਹੇਠ ਲਿਖੇ ਸ਼ਬਦਾਂ ਦੇ ਛੇਵੀ ਅਤੇ ਸੱਤਵੀ ਵਿਭਕਤੀ ਦੇ ਰੂਪ ਲਿਖੋ—
निम्नलिखित शब्दों की षष्ठी तथा सप्तमी विभक्तियों में रूप लिखें—

पत्नी, कन्या, देवी, गंगा।

4. ਹੇਠ ਲਿਖੇ ਪਦਾਂ ਵਿੱਚੋਂ ਇਸਤ੍ਰੀਵਾਚਕ ਪਦਾਂ ਨੂੰ ਅਲੱਗ ਕਰੋ—
निम्नलिखित पदों में से स्त्रीवाचक पदों को अलग करें—

नर्तकीनाम्, ब्राह्मणानाम्, गौरीः, साधोः,
गोपी, सुन्दर्याः, तरुणम्।

5. ਹੇਠ ਲਿਖੇ ਪਦਾਂ ਵਿੱਚੋਂ ਮੂਲ ਸ਼ਬਦ ਅਤੇ ਇਸਤ੍ਰੀਵਾਚਕ ਪ੍ਰਤੇਆਂ ਨੂੰ ਅਲੱਗ ਕਰੋ—
निम्नलिखित पदों में से मूल शब्दों तथा स्त्रीवाचक प्रत्ययों को पृथक् करें। जैसे—चटका = चटक + टाप् (आ)।
सेविका, चतुरा, राज्ञी, भवानी, ब्राह्मणी।

6. ਸ਼ੁੱਧ ਕਰੋ—
शुद्ध करें—
किशोरा, अश्वी, ब्राह्मणा, शिक्षकी, राज्ञा।

7. ਪਾਠ ਵਿੱਚ ਆਏ ਸ਼ਬਦਾਂ ਤੋਂ ਇਲਾਵਾ ਕੁੱਝ ਆਕਾਰਾਂਤ ਅਤੇ ਈਕਾਰਾਂਤ ਇਸਤ੍ਰੀਵਾਚਕ ਸ਼ਬਦ ਲਿਖੋ।
पाठ में आये शब्दों के अतिरिक्त कुछ आकारान्त तथा ईकारान्त स्त्रीवाचक शब्दों को लिखें।

8. ਠੀਕ ਸ਼ਬਦਾਂ ਨਾਲ ਖਾਲੀ ਸਥਾਨ ਭਰੋ—
सही शब्द से रिक्त स्थान भरें—
आचार्यस्य पत्नी ... ... आचार्याणी / आचार्यी ।
शूद्रस्य स्त्री ... ... शूद्रा / शूद्राणी ।
मातुलस्य पत्नी ... ... मातुलानी / मातुला।
इन्द्रस्य पत्नी ... ... इन्द्रा / इन्द्राणी।
क्षत्रियस्य पत्नी ... ... क्षत्रिया / क्षत्रियी।

9. ਆਪਣੀ ਭਾਸ਼ਾ ਵਿੱਚ ਅਨੁਵਾਦ ਕਰੋ—
अपनी भाषा में अनुवाद करें—
कुन्ती पाण्डोः पत्नी आसीत्।
भवान्याः प्रसादात् सर्वं कार्यं सेत्स्यति।
तस्य राज्ञः सेविका काचित् शूद्रा अस्ति।
वैश्यस्य पत्नी वैश्या एव भवति।

रूपवती अहल्या महर्षेः गौतमस्य भार्या आसीत् ।

अद्यत्वे युवतीनाम् अपि सेनासु प्रवेशोऽनुमन्यते ।

10. ਸੰਸਕ੍ਰਿਤ ਵਿੱਚ ਅਨੁਵਾਦ ਕਰੋ—

ਸਾਰੀਆਂ ਇਸਤ੍ਰੀਆਂ ਨੂੰ ਆਪਣੀ ਨੂੰਹ ਦੇ ਨਾਲ ਬੇਟੀ ਦੀ ਤਰ੍ਹਾਂ ਬਰਤਾਵ ਕਰਣੀ ਚਹਿੰਦੀ ।

ਇਸਤ੍ਰੀ ਅਧਿਆਪਕ ਬੱਚਿਆਂ ਨੂੰ ਪਿਆਰ ਨਾਲ ਪੜ੍ਹਾਂਉਦੀ ਹੈ ।

ਦਰੋਪਦੀ ਪੰਚ ਪਾਂਡਵਾ ਦੀ ਪਤਨੀ ਸੀ ।

ਜਨਕਨੰਦਨੀ ਸੀਤਾ ਮਿਥਿਲਾ ਦੀ ਰਹਿਣ ਵਾਲੀ ਸੀ ।

ਮੁੱਖ ਮਹਿਮਾਨ ਨਾਟਕ ਦੇ ਮੁੱਖ ਨਾਰੀ ਪਾਤਰ ਨੂੰ ਇਨਾਮ ਦੇਵਗੇ ।

संस्कृत में अनुवाद करें—

हर स्त्री को अपनी बहू के साथ बेटी की तरह आचरण करना चाहिये ।

महिला शिक्षक बच्चों को प्रेमपूर्वक पढ़ाती हैं ।

द्रौपदी पाँच पाण्डवों की पत्नी थी ।

जनकनन्दिनी सीता मिथिला की रहने वाली थी ।

मुख्यातिथि नाटक के मुख्य नारी-पात्र को पुरस्कार देंगे ।

तन्वी विग्रहिणी कलंकरहिता मुक्ताफलालंकृता
सद्वंशा गजगामिनी पुलकिता दन्तप्रभाभासिता ।
श्यामा चारुपयोधरा सुरुचिरा पुंसां मनोहारिणी
कामं वक्षसि ते पतत्त्वहरहः खड्गाग्रधारा रिपोः ॥

चतुःपञ्चाशः पाठः

ਵਿਸਰਗ ਸੰਧੀ ।

विसर्ग-सन्धि ।

पूर्णिमायाः निशायाम् आकाशे पूर्णश्चन्द्रः शोभते ।
विद्यालयस्य गोष्ठ्याम् अध्यापकाश्छात्राश्च भागं ग्रहीष्यन्ति ।
वर्षाकाले सर्वत्र हरितास्तरवः सुशोभन्ते ।
अर्जुनस्य धनुष्टङ्कारं भीष्मोऽशृणोत् ।
अस्मिन् चित्रफलके तिस्रो युवतयो दृश्यन्ते, सर्वाश्च दर्शनीयाः ।
पाण्डवेषु अर्जुनः सर्वश्रेष्ठो धनुर्धर आसीत् ।
यो नरः सुखात् दरिद्रतां याति, स धृतः शरीरेण मृत इव जीवति ।
यथा क्षीणोऽपि चन्द्रः पुनरुपचीयते, एवं सन्तोऽपि विपत्तिषु न सन्तप्ताः भवन्ति ।
अज्ञाः अल्पमेव प्रारभन्ते किन्तु व्यग्रा अधिका भवन्ति ।
अभिज्ञानशाकुन्तलमिव पुनारचना दुलर्भा ।
उद्यानपालकः प्रतिदिनं प्रातः पुष्पेभ्य उद्यानं गच्छति ।
संस्कृतस्य अन्ताराष्ट्रिय-सम्मेलनं गतवर्षे उज्जयिन्यामभवत् ।
कटुभाषणं शत्रुतां वर्धयति, अतोऽस्माभिः प्रियवादिभिर्भाव्यम् ।
रज्जूरूपं धारितैस्तृणैर्बलवान् गजोऽपि बध्यते ।
जगति प्रारम्भत एव एकताया महत्त्वम् अस्ति ।
एष मत्तो गज इत एवागच्छति ।

ਸ਼ਬਦਕੋਸ਼ (शब्दकोशः)—

निशा	रात्रि	ਰਾਤ
गोष्ठी	सभा	ਸਭਾ
धनुष्टङ्कार	धनुष का टङ्कार (शब्द)	ਧਨੁਸ਼ ਦੀ ਅਵਾਜ
धनुर्धर	धनुष धारण करने वाला	ਧਨੁਸ਼ ਧਾਰਣ ਕਰਨ ਵਾਲਾ
चित्रफलक	मढ़ा हुआ चित्र	ਮੜ੍ਹੀ ਹੋਈ ਤਸਵੀਰ
या	जाना	ਜਾਣਾ
उप-चि	पुष्ट होना (बढ़ना)	ਵਧਣਾ
अज्ञ	अज्ञानी	ਮੂਰਖ
व्यग्र	घबड़ाया हुआ	ਘਬਰਾਉਣਾ
रज्जू	रस्सी	ਰੱਸੀ

ਨਿਰਦੇਸ (निर्देशः)—

1. ਸਵਰ ਜਾਂ ਵਿਅੰਜਨ ਤੋਂ ਬਾਅਦ ਵਿਸਰਗ (:) ਵਿੱਚ ਜਿਹੜਾ ਬਦਲਾਵ ਆਉਂਦਾ ਹੈ ਉਸਨੂੰ ਵਿਸਰਗ ਸੰਧੀ ਕਹਿੰਦੇ ਹਨ।
   स्वर या व्यञ्जन के परे विसर्ग (:) में जो परिवर्तन होते हैं, उसे विसर्ग-सन्धि कहते हैं।

ਵਿਆਕਰਣ (व्याकरणम्)—

1. ਵਿਸਰਗ ਤੋਂ ਬਾਅਦ ਚ-ਛ, ਟ-ਠ, ਤ-ਥ ਹੋਵੇ ਤਾਂ ਤਰਤੀਬਵਾਰ ਵਿਸਰਗ ਨੂੰ ਸ਼, ਸ਼, (ष) ਸ ਹੋ ਜਾਂਦਾ ਹੈ। ਜਿਵੇਂ—
   विसर्ग से परे च्-छ्, ट्-ठ्, त्-थ् हो, तो क्रम से विसर्ग का श्, ष्, स् हो जाता है। जैसे—

बालकः	+	चंचलः	=	बालकश्चंचलः।
चोरः	+	छलति	=	चोरश्छलति।
धनुषः	+	टङ्कारः	=	धनुषष्टङ्कारः।
वानरः	+	तरति	=	वानरस्तरति।
नरः	+	थूत्करति	=	नरस्थूत्करोति.

2. ਵਿਸਰਗ ਤੋਂ ਅੱਗੇ ਕ, ਖ, ਪ, ਫ ਹੋਵੇ ਤਾਂ ਵਿਸਰਗ ਵਿੱਚ ਕੋਈ ਬਦਲਾਵ ਨਹੀ ਆਉਂਦਾ ਹੈ। ਅਰਥਾਤ ਵਿਸਰਗ ਹੀ ਰਹਿ ਜਾਂਦਾ ਹੈ। ਵਿਸਰਗ ਤੋਂ ਬਾਅਦ ਜੇਕਰ ਸ਼, ਸ਼ (ष), ਸ ਹੋਵੇ ਤਾਂ ਵਿਸਰਗ ਦਾ ਤਰਤੀਬਵਾਰ ਸ਼੍, ष੍, ਸ ਹੋ ਜਾਂਦਾ ਹੈ, ਜਾਂ ਵਿਸਰਗ ਹੀ ਰਹਿ ਜਾਂਦਾ ਹੈ।

विसर्ग से परे क, ख, प, फ हो तो विसर्ग में कोई परिवर्तन नहीं होता है। अर्थात् विसर्ग ही रह जाता है। विसर्ग के वाद यदि श, ष, स हो तो विसर्ग का क्रम से श्, ष्, स् हो जाता है अथवा विसर्ग ही रह जाता है।

3. ਵਿਸਰਗ ਤੋਂ ਪਹਿਲੇ 'ਅ' ਹੋਵੇ ਅਤੇ ਅੱਗੇ ਵੀ 'ਅ' ਹੋਵੇ ਤਾਂ ਵਿਸਰਗ ਨੂੰ 'ੳ' ਹੋ ਜਾਂਦਾ ਹੈ ਅਤੇ ਅੱਗੇ ਵਾਲੇ 'ਅ' ਦਾ ਪੂਰਬਰੂਪ (ऽ) ਹੋ ਜਾਂਦਾ ਹੈ। ਜਿਵੇਂ—

विसर्ग से पहले 'अ' हो और परे भी 'अ' हो तो विसर्ग का 'ओ' हो जाता है तथा आगे वाले 'अ' का पूर्वरूप (ऽ) हो जाता है। जैसे—

रामः + अस्ति = रामो > रामोऽस्ति।

शिवः + अर्च्यः = शिवो > शिवोऽर्च्यः।

4. ਵਿਸਪਗ ਤੋਂ ਪਹਿਲੇ 'ਅ' ਹੋਵੇ ਅਤੇ ਅੱਗੇ ਵਰਗ ਦਾ ਤੀਸਰਾ, ਚੋਥਾ, ਪੰਜਵਾਂ ਅੱਖਰ ਅਤੇ ਯ, ਰ, ਲ, ਵ ਹੋਵੇ ਤਾਂ ਵਿਸਰਗ ਨੂੰ 'ੳ' ਹੋ ਜਾਂਦਾ ਹੈ। ਵਿਅੰਜਨ ਵਰਣਮਾਲਾ ਵਿੱਚ ਪੰਜ ਵਰਗ ਮੱਨੇ ਜਾਂਦੇ ਹਨ।

ਕਵਰਗ—ਕ ਖ ਗ ਘ ਙ

ਚਵਰਗ—ਚ ਛ ਜ ਝ ਞ

ਟਵਰਗ—ਟ ਠ ਡ ਢ ਣ

ਤਵਰਗ—ਤ ਥ ਦ ਧ ਨ

ਪਵਰਗ—ਪ ਫ਼ ਬ ਭ ਮ

विसर्ग से पहिले 'अ' हो और परे वर्ग का तीसरा, चौथा, पाँचवाँ, अक्षर तथा य्, र्, ल्, व् हो, तो विसर्ग का ओ हो जाता है। (व्यञ्जन वर्णमाला में वर्ग पाँच माने जाते हैं—क वर्ग, च वर्ग, ट वर्ग, त वर्ग, प वर्ग। प्रत्येक वर्ग में पाँच अक्षर होते हैं, जैसे क वर्ग में—'क, ख, ग, घ, ङ। इसी प्रकार पाँचों वर्गों को जानना चाहिये)। जैसे—

बालकः + हसति = बालको हसति।

रामः + गच्छति = रामो गच्छति।

देवः + वन्द्यः = देवो वन्द्यः।

मृगः + धावति = मृगो धावति।

5. ਵਿਸਰਗ ਤੋਂ ਪਹਿਲਾਂ 'ਅ, ਆ' ਨੂੰ ਛੱਡ ਕੇ ਕੋਈ ਵੀ ਸਵਰ ਹੋਵੇ ਅਤੇ ਅੱਗੇ ਕੋਈ ਸਵਰ ਹੋਵੇ ਜਾਂ ਵਰਗ ਦਾ ਤੀਸਰਾ, ਚੌਥਾ ਅਤੇ ਪੰਜਵਾਂ ਵਰਣ ਹੋਵੇ ਤਾਂ ਵਿਸਰਗ ਨੂੰ 'ਰ੍' ਹੋ ਜਾਂਦਾ ਹੈ। ਜੇਕਰ ਅੱਗੇ ਸਵਰ ਵਰਣ ਹੋਵੇ ਤਾਂ 'ਰ੍' ਸਵਰ ਵਿੱਚ ਮਿਲ ਜਾਂਦਾ ਹੈ, ਜੇਕਰ ਵਿਅੰਜਨ ਵਰਣ ਹੋਵੇ ਤਾਂ 'ਰ੍' ਵਿਅੰਜਨ ਵਰਣ ਦੇ ਉੱਪਰ ਲਗਾਇਆ ਜਾਂਦਾ ਹੈ। ਜਿਵੇਂ—

विसर्ग से पूर्व में 'अ, आ' को छोड़कर कोई भी स्वर हो और परे कोई स्वर या वर्ग का तीसरा, चौथा तथा पाँचवाँ वर्ण हो, तो विसर्ग का 'र्' हो जाता है। यदि परे स्वर वर्ण हो, तो 'र्' स्वर में मिल जाता है, यदि व्यञ्जन वर्ण हो तो 'र्' व्यञ्जन वर्ण के ऊपर (रेफ) लगाया जाता है। जैसे—

हरिः + अयम् = हरिरयम्।

भानुः + उदेति = भानुरुदेति।

कविः + वर्णयति = कविर्वर्णयति।

गुरुः + गच्छति = गुरुर्गच्छति।

6. ਵਿਸਰਗ ਤੋਂ ਪਹਿਲਾ 'ਆ' ਹੋਵੇ ਅਤੇ ਬਾਅਦ ਕੋਈ ਸਵਰ ਜਾਂ ਵਰਗ ਦਾ ਤੀਸਰਾ, ਚੌਥਾ, ਪੰਜਵਾ ਅਤੇ ਯ੍, ਰ੍, ਲ੍, ਵ੍ ਵਿੱਚੋਂ ਕੋਈ ਵੀ ਅੱਖਰ ਹੋਵੇ ਤਾਂ ਵਿਸਰਗ ਦਾ ਅਲੋਪ ਹੋ ਜਾਂਦਾ ਹੈ। ਜਿਵੇਂ—

विसर्ग से पूर्व 'आ' हो और परे कोई स्वर या वर्ग का तीसरा, चौथा, पाँचवा तथा य, र, ल, व में से कोई भो अक्षर हो, तो विसर्ग का लोप हो जाता है। जैसे—

अश्वाः	+	धावन्ति	=	अश्वा धावन्ति ।
बालकाः	+	अत्र	=	बालका अत्र ।

7. ਵਿਸਰਗ ਤੋਂ ਪਹਿਲਾਂ 'ਅ' ਹੋਵੇ ਤੇ ਪਰੇ 'ਅ' ਨੂੰ ਛੱਡ ਕੇ ਕੋਈ ਵੀ ਸਵਰ ਹੋਵੇ ਤਾਂ ਵਿਸਰਗ ਦਾ ਅਲੋਪ ਹੋ ਜਾਂਦਾ ਹੈ। ਜਿਵੇਂ—

विसर्ग से पूर्व में 'अ' हो और परे 'अ' को छोड़ कर कोई भो स्वर हो, तो विसर्ग का लोप हो जाता है। जैसे—

कृष्णः	+	एति	=	कृष्ण एति ।
जनः	+	इच्छति	=	जन इच्छति ।

8. ਵਿਸਰਗ ਦੇ ਬਾਅਦ ਜੇਕਰ 'ਰ੍' ਹੋਵੇ ਤਾਂ ਵਿਸਰਗ ਦਾ ਅਲੋਪ ਹੋ ਜਾਂਦਾ ਹੈ ਅਤੇ ਵਿਸਰਗ ਤੋਂ ਪਹਿਲਾ ਜੇਕਰ 'ਅ, ਇ, ਉ' ਹੋਵੇ ਤਾਂ ਉਨ੍ਹਾਂ ਦਾ ਦੀਰਘ ਹੋ ਜਾਂਦਾ ਹੈ। ਜਿਵੇਂ—

विसर्ग के परे यदि 'र्' हो, तो विसर्ग का लोप हो जाता है तथा विसर्ग से पूर्व में यदि ह्रस्व 'अ, इ, उ हो, तो उनका दीर्घ हो जाता है। जैसे—

पुनः	+	रमते	=	पुनारमते ।
शिशुः	+	रोदिति	=	शिशूरोदिति ।
कविः	+	रचयति	=	कवीरचयति ।
अन्तः	+	राष्ट्रियम्	=	अन्ताराष्ट्रियम् ।

9. ਵਿਸਰਗ ਤੋਂ ਪਹਿਲਾਂ 'ਸ:' ਅਤੇ 'एषः' ਹੋਵੇ ਅਤੇ ਅੱਗੇ 'ਅ' ਨੂੰ ਛੱਡ ਕੇ ਕੋਈ ਵੀ ਸਵਰ ਹੋਵੇ ਤਾਂ ਵਿਸਰਗ ਦਾ ਅਲੋਪ ਹੋ ਜਾਂਦਾ ਹੈ। ਜਿਵੇਂ—

विसर्ग से पूर्व 'सः' तथा 'एषः' हो और परे 'अ' छोड़कर कोई भी स्वर एवं व्यञ्जन हो, तो विसर्ग का लोप हो जाता है। जैसे—

सः + शम्भुः = स शम्भुः।

एषः + गुरुः = एष गुरुः।

ਅਭਿਆਸ (अभ्यासः)—

1. ਹੇਨ ਲਿਖੇ ਸ਼ਬਦਾਂ ਵਿੱਚ ਸੰਧੀ ਕਰੋ—
निम्नलिखित शब्दों में सन्धि करें—

गावः + चरन्ति,	वालकाः + तरन्ति,
साधुः + अवदत्,	सिंहः + अवदत्,
सः + वदति,	एषः + गच्छति,
गौः + गच्छति,	सः + अयम्,
चौरः + छलति,	मनः + हरः।

2. ਹੇਠ ਲਿਖੇ ਸ਼ਬਦਾਂ ਵਿੱਚ ਸੰਧੀ ਛੇਦ ਕਰੋ—
निम्नलिखित शब्दों में सन्धि-विच्छेद करें—

पुनश्चरति,	हंसस्तरति,
देवो याति,	मुनेरपि,
य आगमिष्यति,	देवा गच्छन्ति,
कोऽयम्,	स एव।

3. ਸਹੀ ਸੰਧਿ ਬ੍ਰੈਕਟ ਵਿੱਚ ਲਿਖੋ—
उपयुक्त सन्धि कोष्ठक में लिखें—

मुनिरयम् / मुनिअयम् ( )।

ततो एवम् / तत एवम् ( )।

मनश्चञ्चलम् / मनोचञ्चलम् ( )।

मनवलम् / मनोवलम् ( )।

धेनुरागता / धेनुआगता ( )।

4. ਸ਼ੁੱਧ ਸ਼ਬਦਾਂ ਨਾਲ ਖਾਲੀ ਜਗਾਂ ਭਰੋ—
शुद्ध पदों से रिक्त स्थान भरें—

(नरायं / नरोऽयं) ··· ··· ··· ग्रामं गच्छति ।

(गुरवोऽपि/गुरवापि) ··· ··· ··· अस्माकं पितरो भवन्ति ।

(छात्रा एव/छात्रारेव) ··· ··· ··· विद्यालयस्य भूषणम् ।

(कविरयम्/कविअयम्) ···· ···· सभायां स्वकवितां पठति ।

(पशवर्च / पशवश्च) ··· ··· परस्परं भावविनिमयं कुर्वन्ति ।

5. ਹੇਠ ਲਿਖੇ ਸੰਧੀ ਯੁਕਤ ਸ਼ਬਦਾਂ ਵਿੱਚੋਂ ਵਿਸਰਗ ਸੰਧੀ ਦੇ ਉਦਾਹਰਣ ਅਲੱਗ ਕਰੋ—
निम्नलिखित सन्धि-युक्त शब्दों से विसर्ग-सन्धि के उदाहरणों को अलग करें—

रमेशः, वालका एव, प्रभोऽत्र, किञ्चिदिदम्,
इत्यत्र, मनस्तु, हरेरयम्, तवास्तु, मनोरथः ।

6. ਵਿਸਰਗ ਸੰਧੀ ਕਿਸਨੂੰ ਕਹਿੰਦੇ ਹਨ ? ਉਦਾਹਰਣ ਸਹਿਤ ਲਿਖੋ ।
विसर्ग-सन्धि किसको कहते हैं ? उदाहरण सहित लिखें ।

7. ਉਦਾਹਰਣ ਦਿਓ—
उदाहरण प्रस्तुत करें, जब—

(क) विसर्ग का 'स्' हो,
(ख) विसर्ग का 'श्' हो,
(ग) विसर्ग का 'ष्' हो,

(घ) विसर्ग का 'ओ' हो,
(ङ) विसर्ग का लोप हो,
(च) विसर्ग का 'र्' हो।

8. ਸੰਧੀ ਕਰਕੇ ਉਨ੍ਹਾਂ ਦਾ ਵਾਂਕਾ ਵਿੱਚ ਪ੍ਰਯੋਗ ਕਰੋ—
सन्धि करके उनका वाक्यों में प्रयोग करें—

मूर्खः + अपि,	गुरोः + आगमनम्,
कविः + आसीत्,	हरिः + शेते,
निः + कलंकः,	छात्राः + अपठन्।

9. ਆਪਣੀ ਭਾਸ਼ਾ ਵਿੱਚ ਅਨੁਵਾਦ ਕਰੋ—
अपनी भाषा में अनुवाद करें—
सद्व्यवहारस्सर्वान् क्रेतुं शक्नोति ।
इमं संसारं पुण्यबलेनैव मनुष्यस्तरति।
अस्य वृक्षस्याधः आतपात् भीताः पथिका उपविशन्ति
मुनिरयं परमधार्मिकोऽस्ति।
एष भ्रमरः इतस्ततः पुष्पेषु भ्रमति ।

10. ਸੰਸਕ੍ਰਿਤ ਵਿੱਚ ਅਨੁਵਾਦ ਕਰੋ—
ਬੁਰੇ ਕੰਮ ਕਰਨ ਕਾਰਨ ਰਾਵਣ ਪੂਰੇ ਪਰਿਵਾਰ
ਸਹਿਤ ਮਾਰਿਆ ਗਿਆ।
ਪਾਸ਼ ਹੋਵੇ ਮੁੰਡਿਆਂ ਵਿੱਚੋਂ ਗੋਪਾਲ ਛੇਵਾਂ ਹੈ।
ਸਕੂਲ ਆ ਕੇ ਵਿਦੀਆਰਥੀ ਸਭ ਤੋਂ ਪਹਿਲਾਂ
ਗੁਰੂ ਨੂੰ ਪ੍ਰਣਾਮ ਕਰਦਾ ਹੈ।
ਕਿਸੇ ਦੀ ਵੀ ਮਿਹਨਤ ਬੇਕਾਰ ਨਹੀਂ ਜਾਂਦੀ।
ਬੱਚਿਆਂ ਦੀ ਖੁਸ਼ੀ ਨਾਲ਼ ਮਾਤਾ ਖੁਸ਼ ਹੁੰਦੀਆਂ
ਹਨ।

संस्कृत में अनुवाद करें—

दुष्कृत्य करने के कारण रावण सवंश मारा गया ।

उत्तीर्ण बालकों में गोपाल छठा है ।

विद्यालय आकर छात्र सर्वप्रथम गुरु को नमस्कार करता है ।

किसी का भी परिश्रम निष्फल नहीं होता ।

बच्चों की खुशी से माताएँ प्रसन्न होती हैं ।

तास्तु वाचः समायोज्या याश्चित्ताकर्षणक्षमाः ।
स्वेषां परेषां विदुषां द्विषामविदुषामपि ।।

छिन्नोऽपि रोहति वृक्षश्चन्द्रः क्षीणोऽपि वर्धते ।
इति विमृशन्तः सन्तः सन्तप्यन्ते न लोकेऽस्मिन् ।।

पञ्चपञ्चाशः पाठः

ਸਮਾਸ (ਅਬਈਭਾਵ, ਤੱਤਪੁਰਸ਼, ਕਰਮਧਾਰੇ, ਦਵਿਗੁ)।

समास (अव्ययीभाव, तत्पुरुष, कर्मधारय, द्विगु)।

संसारेऽस्मिन् प्रत्येकं जीवस्य महत्त्वं वर्तते ।

अद्यत्वे अस्माकं देशे अनुदिनं सर्वक्षेत्रेषु विवादोऽभिवर्धते ।

पुरा ग्रन्थानां निर्विघ्नं समाप्त्यर्थं मङ्गलाचरणं कुर्वन्ति स्म ग्रन्थकाराः ।

चक्रवर्तिनः राज्ञः दुष्यन्तस्य राज्यसीमा आसमुद्रम् आसीत् ।

अस्माभिः शरणप्राप्तानाम् आर्तानां च रक्षा कर्तव्या ।

अवकाशक्षणान् उपभोक्तुं मम पुत्रो ग्रामगतोऽधुना ।

विद्याविहीनो नरः पृथिव्यां भारभूतोऽस्ति ।

पादाहतं रजोऽपि उत्थाय मूर्धानम् अधिरोहति ।

आकश्मीरात् कन्याकुमारीपर्यन्तं मम यात्रा सुखयुता अभवत् ।

राष्ट्रपतिसदने पंजाबीसंस्कृतशब्दकोशस्य लोकार्पणमभवत् ।

कुम्भकारः कुम्भमृत्तिकाम् आनेतुं नदीतटम् अगच्छत् ।

स्वयमेव वृक्षपतितं आम्रफलं मधुरं भवति ।

गङ्गायाः दर्शनमात्रेणापि मनुष्याः पापमुक्ताः भवन्ति ।

धनलोभिनः चोरभयात् रात्रावपि सुखं न स्वपन्ति ।

राजपुरुषा यद्यपि रक्षकाः तथापि तेभ्यः बिभ्यति जनाः।

ब्रह्मपुत्रस्य भीषणजलप्रवाहे यात्रियुता नौका जलमग्ना जाता।

श्रीमतीन्दिरागान्धी प्रशासनकुशला कार्यदक्षा चासीत् ।

सरोवरेऽस्मिन् रम्याणि नीलकमलानि विकसितानि सन्ति ।
भूषितबालकः कस्य मनो न आह्लादयति ?
कमलनयनं भगवन्तं विष्णुम् अहं वन्दे ।
घनश्यामः गोपवधूभिः सह रासलीलाम् अकरोत् ।
त्रिफलायाः बहुमहत्त्वं वर्णितम् आयुर्वेदशास्त्रे ।
काञ्चीपुर्यां श्रीशङ्कराचार्यस्य शताब्दीसमारोहः समायोजित आसीत् ।
'पञ्चवटी' नामके स्थाने सीतया सह रामः निवासम् अकरोत् ।
ईश्वरः त्रिभुवनस्य उत्पत्तेः, स्थितेः, संहारस्य च हेतुः ।

ਸ਼ਬਦਕੋਸ਼ (शब्दकोशः)—

आर्त	दुःखी	ਦੁਖੀ
पादाहत	पैरों से रौंदी गई	ਪੈਰਾ ਨਾਲ ਕੁਚਲੀ ਹੋਈ
रज	धूल	ਧੂੜ
मूर्धन्	शिर	ਸਿਰ
लोकार्पण	बिमोचन (समाज के सामने रखना)	ਸਮਾਜ ਦੇ ਸਾਹਮਣੇ, ਰੱਖਣਾ
कुम्भकार	कुम्हार (मिट्टी के बर्तन बनाने वाली एक जाति)	ਘੁਮਾਰ (ਮਿੱਟੀ ਦੇ ਭਾਂਡੇ ਬਣਾਉਣ ਵਾਲੀ ਇੱਕ ਜਾਤ)
भीज्	भय करना	ਡਰਨਾ
आ–ह्लाद्	प्रसन्न होना	ਖੁਸ਼ ਹੋਣਾ
हेतु	कारण	ਕਾਰਣ

ਨਿਰਦੇਸ਼ (निर्देशः)—

1. ਸਮਾਸ ਦਾ ਭਾਵ ਹੈ ਸੰਖੇਪ। ਮਤਲਬ ਦੋ ਤੋ ਜਿਆਦਾ ਸ਼ਬਦਾਂ ਦਾ ਇਸ ਪ੍ਰਕਾਰ ਬਣਾ ਦੇਣਾ, ਜਿਸ ਤੋ ਉਸਦਾ ਅਕਾਰ ਤਾਂ ਛੋਟਾ ਹੋ ਜਾਵੇ ਪਰੰਤੂ ਅਰਥ ਪੂਰਾ ਦੱਸਦਾ ਹੋਵੇ।

   समास का अर्थ है संक्षेप, अर्थात् दो या दो से अधिक शब्दों को इस प्रकार मिला देना, जिससे उनका आकार तो छोटा हो जाये किन्तु अर्थ पूरा व्यक्त होता हो।

2. ਸਮਾਸ ਹੋਣ ਤੇ ਪਦਾ ਦੇ ਵਿੱਚ ਦੀ ਵਿਭਕਤੀ ਦਾ ਅਲੋਪ ਹੋ ਜਾਂਦਾ ਹੈ।
समास होने पर पदों के बीच की विभक्ति का लोप हो जाता है।

3. ਸਮਾਸ ਦੇ ਚਾਰ ਭੇਦ ਹਨ—

1. ਅਬਈਭਾਵ	2. ਤੱਤਪੁਰਸ਼
3. ਬਹੁਬ੍ਰੀਹਿ	4. ਦਵੰਦਵ।

समास के चार भेद होते हैं—

1. अव्ययीभाव	2. तत्पुरुष
3. बहुव्रीहि	4. द्वन्द्व।

तत्पुरुष का भेद कर्मधारय होता है और कर्मधारय का भेद द्विगु।

ਵਿਆਕਰਣ (व्याकरणम्)—

ਅਬਈਭਾਵ—ਜਿਸ ਸਮਾਸ ਵਿੱਚ ਪੂਰਬਪਦ ਦਾ ਅਰਥ ਪ੍ਰਧਾਨ ਹੋਵੇ ਉਸਨੂੰ ਅਬਈਪਦ ਸਧਾਸ ਕਹਿੰਦੇ ਹਨ। ਇਹ ਸਮਾਸ ਵਿੱਚ ਪੂਰਬ-ਪਦ ਸਦਾ ਅਬਿਅ ਹੁੰਦਾ ਹੈ ਅਤੇ ਸਮਸਤ ਪਦ ਅਬਿਅ ਤੇ ਨਪੁੰਸਕ ਲਿੰਗ ਹੁੰਦਾ ਹੈ। अ-स्वपद (ਜਿਸਦੇ ਵਿਗ੍ਰਹਿ ਵਿੱਚ ਪੂਰਬਪਦ ਲਈ ਦੂਜੇ ਪਦ ਦਾ ਪ੍ਰਯੋਗ ਹੁੰਦਾ ਹੈ) ਹੋਣ ਦ ਕਾਰਣ ਇਹ ਸਮਾਸ ਨਿੱਤ ਮੱਠਿਆ ਜਾਂਦਾ ਹੈ। ਜਿਵੇਂ—

अव्ययी भाव—जिस समास में पूर्वपद का अर्थ प्रधान हो, उसे 'अव्ययीभाव' समास कहते हैं। इस समास का पूर्वपद सदा अव्यय होता है और समस्तपद अव्यय एवं नपुंसक-लिंग होता है। अ-स्वपद (जिसके विग्रह में पूर्वपद के लिये अन्य पद का प्रयोग होता है) होने के कारण यह समास प्राय: नित्य माना जाता है। जैसे—

कृष्णस्य समीपम् = उपकृष्णम्।
मक्षिकाणाम् अभाव: = निर्मक्षिकम्।

ਉੱਪਰ ਦੱਸੇ ਉਦਾਹਰਣਾਂ ਵਿੱਚ ਸਮਸਤ ਪਦਾਂ ਦੇ ਪੂਰਬਪਦ 'ਤਪ' ਅਤੇ 'ਨਿਰ੍' ਲਈ ਵਿਗ੍ਰਹਿ ਅ-ਸ੍ਵਪਦ 'ਸਮੀਪ' ਅਤੇ 'ਅਭਾਵ' ਦਾ ਪ੍ਰਯੋਗ ਕਿੱਤਾ ਗਿਆ ਹੈ।

उपर्युक्त उदाहरणों में समासयुक्त पदों के पूर्वपद 'उप' और 'निर्' के लिये विग्रह में अ-स्वपद 'समीप' और 'अभाव' का प्रयोग किया गया है।

ਤੱਤਪੁਰਸ਼—ਜਿਸ ਸਮਾਸ ਵਿੱਚ ਉੱਤਰਪਦ ਦਾ ਅਰਥ ਪ੍ਰਧਾਨ ਹੋਵੇ ਉਸਨੂੰ ਦਵੰਦ ਅਤੇ ਤੱਤਪੁਰਸ਼ ਸਮਾਸ ਕਹਿੰਦੇ ਹਨ। ਸਮਾਸ ਹੋਣ ਤੇ ਤੱਤਪੁਰਸ਼ ਦਾ ਉੱਤਰਪਦ ਦੇ ਅਨੁਸਾਰ ਹੀ ਲਿੰਗ ਅਤੇ ਵਚਨ ਹੁੰਦੇ ਹਨ। ਤੱਤਪੁਰਸ਼ ਸਮਾਸ ਵਿੱਚ ਦੋ ਪਦਾਂ ਦੇ ਦਰਮਿਆਨ ਦੂਜੀ, ਤੀਜੀ, ਚੌਥੀ, ਪੰਜਵੀ, ਛੇਵੇਂ, ਸੱਤਵੀ ਵਿਭਕਤੀਆਂ ਲੁਕੀਆਂ ਰਹਿੰਦੀਆਂ ਹਨ। ਜਿਵੇਂ—

तत्पुरुष—जिस समास में उत्तरपद का अर्थ प्रधान हो, उसको 'तत्पुरुष' समास कहते हैं। समास होने पर तत्पुरुष का उत्तरपद के अनुसार ही लिङ्ग तथा वचन होते हैं। तत्पुरुष समास में दो पदों के मध्य द्वितीया, तृतीया, चतुर्थी, पञ्चमी, षष्ठी तथा सप्तमी विभक्तियाँ छिपी रहती हैं। जैसे—

भयप्राप्तः = भयं प्राप्तः, खड्गहतः = खड्गेन हतः

भूतबलिः = भूताय बलिः, पापमुक्तः = पापात् मुक्तः

रजतपात्रम् = रजतस्य पात्रम्, युद्धनिपुणः = युद्धे निपुणः।

ਕਰਮਧਾਰੇ—ਕਰਮਧਾਰੇ ਸਮਾਸ ਤੱਤਪੁਰਸ਼ ਦਾ ਹੀ ਇੱਕ ਭੇਦ ਹੈ। ਤੱਤਪੁਰਸ਼ ਸਮਾਸ ਵਿੱਚ ਦੂਜੀ ਤੋਂ ਸੱਤਵੀ ਵਿਭਕਤੀ ਤੱਦ ਦਾ ਅਰਥ ਲੁਕਿਆ ਹੁੰਦਾ ਹੈ। ਜਦੋਂ ਕਿ ਕਰਮਧਾਰੇ ਸਮਾਸ ਸਿਰਫ਼ ਪਹਿਲੀ ਵਿਭਕਤੀ ਵਿੱਚ ਹੁੰਦਾ ਹੈ। ਇਸ ਸਮਾਸ ਵਿੱਚ ਪਹਿਲਾ ਪਦ ਵਿਸ਼ੇਸ਼ਣ ਹੁੰਦਾ ਹੈ ਅਤੇ ਦੂਜਾ ਪਦ ਵਿਸ਼ੇਸ਼ਯ। ਜਾਂ ਪਹਿਲਾ ਪਦ ਉਪਮਾਨ (ਜਿਸ

ਨਾਲ ਉਪਮਾ ਦਿੱਤੀ ਜਾਂਦੀ ਹੈ) ਅਤੇ ਦੂਸਰਾ ਪਦ ਓਪਮੇ (ਜਿਸਨੂੰ ਉਪਮਾ ਦਿੱਤੀ ਜਾਂਦੀ ਹੈ) ਹੁੰਦਾ ਹੈ। ਜਿਵੇਂ—

कर्मधारय—कर्मधारय समास तत्पुरुष का ही एक भेद है। तत्पुरुष समास में द्वितीया से सप्तमी विभक्ति तक का अर्थ छिपा होता है, जब कि कर्मधारय-समास केवल प्रथमा विभक्ति में ही होता है। इस समास में पहला पद विशेषण होता है तथा दूसरा पद विशेष्य, अथवा पहला पद उपमान (जिससे उपमा दी जाये) और दूसरा पद उपमेय (जिसकी उपमा दी जाये) होता है। जैसे—

नीलोत्पलम् = नीलम् उत्पलम्।
चन्द्रमुखम् = चन्द्रसदृशं मुखम्।

ਦਵਿਗੁ—ਦਵਿਗੁ ਸਮਾਸ ਵੀ ਤੱਤਪੁਰਸ਼ ਦਾ ਹੀ ਇੱਕ ਭੇਦ ਹੈ। ਇਸ ਸਮਾਸ ਵਿੱਚ ਪਹਿਲਾ ਪਦ ਸੰਖਿਆਵਾਚਕ ਤੇ ਦੂਸਰਾ ਪਦ ਕੋਈ ਸੰਗਿਆ (ਨਾਂਵ) ਹੁੰਦਾ ਹੈ। ਇਹ ਸਮਾਸ ਕਿਸੇ ਸਮੂਹ ਨੂੰ ਦੱਸਣ ਵਾਲਾ ਹੁੰਦਾ ਹੈ। ਸਮੂਹ ਦੇ ਭਾਵ ਨੂੰ ਇਸ ਸਮਾਸ ਵਿੱਚ 'ਸਮਾਂਹਾਰ' ਸ਼ਬਦ ਨਾਲ ਕਿਹਾ ਜਾਂਦਾ ਹੈ। ਸਮੂਹ ਦੇ ਅਰਥ ਵਿੱਚ ਸਮਾਸ ਕਰਨ ਤੇ ਉਹ ਪਦ ਹਮੇਸ਼ਾ ਨਪੁੰਸਕ ਲਿੰਗ ਇਕ ਵਚਨ ਹੀ ਰਹਿੰਦਾ ਹੈ। ਜਿਵੇਂ

द्विगु—द्विगु समास भी प्रकारान्तर से तत्पुरुष का ही एक भेद है। इस समास में पहला पद संख्यावाचक तथा दूसरा पद कोई संज्ञा होता है। यह समास किसी समूह का द्योतक होता है। 'समूह' अर्थ को ही इस समास में 'समाहार' शब्द से कहा जाता है। समूह अर्थ में समास करने पर वह पद सदा नपुंसक-लिङ्ग एकवचन में रहता है। जैसे—

चतुर्णां युगानां समाहारः = चतुर्युगम्।
पञ्चानां पात्राणां समाहारः = पञ्चपात्रम्।

ਵੱਟ, ਲੋਕ ਅਤੇ ਮੂਲ ਸ਼ਬਦਾਂ ਨਾਲ ਸਮਾਂਹਾਰ ਹੋਣ ਤੇ ਸਮਾਸਯੁਕਤ ਪਦ ਈਕਾਰਾਂਤ ਇਸਤ੍ਰੀਲਿੰਗ ਹੋ ਜਾਂਦਾ ਹੈ। ਜਿਵੇਂ—

'वट', 'लोक' तथा 'मूल' शब्दों के साथ समाहार होने पर समस्त पद ईकारान्त स्त्रीलिङ्ग हो जाता है। जैसे—

पञ्चानां वटानां समाहारः = पञ्चवटी।
त्रयाणां लोकानां समाहारः = त्रिलोकी।
पञ्चानां मूलानां समाहारः = पञ्चमूली।

ਅਭਿਆਸ (अभ्यासः)—

1. ਹੇਠ ਲਿਖੇ ਪਦਾਂ ਤੋਂ ਸਮਾਸ ਬਣਾਓ—
निम्नलिखित पदों से समास बनायें—

हरौ इति,	गिरेः समीपम्।
भूताय बलिः,	जले मग्नः।
दुःखस्य भोगः,	चन्द्र इव मुखम्।
पञ्चानां ग्रामाणां समाहारः,	शतानाम् अब्दानां समाहारः

2. ਹੇਠ ਲਿਖੇ ਪਦਾਂ ਦੇ ਸਮਾਸ ਦਾ ਨਾਂ ਲਿਖੋ—
निम्नलिखित समासों का नाम लिखिये—

त्रिलोकी,	पुरुषसिंहः,	सभापण्डितः,
महाराजः,	दुःखसमुद्रः,	भययुक्तः,
उपसमित्,	निर्मक्षिकम्,	अनुगङ्गम्।

3. ਹੇਠ ਲਿਖੇ ਸਮਸਤਪਦਾਂ ਦਾ ਵਿਗ੍ਰਹਿ ਕਰੋ—
निम्नलिखित समस्तपदों का विग्रह करें—

महाशयः, घृतपात्रम्, विद्याविहीनः, घनश्यामः,
त्रिभुवनम्, यथाशक्तिः, प्रतिदिनम्।

4. ਹੇਠ ਲਿਖੇ ਸਮਸਤਪਦਾਂ ਵਿੱਚੋਂ ਕਰਮਧਾਰੇ ਸਮਾਸ ਨੂੰ ਅਲੱਗ ਕਰੋ—
निम्नलिखित समस्त पदों से कर्मधारय समास को अलग करें—

कृष्णसर्पः,	हरिभक्तः,	नीलकमलम्,
महर्षिः,	पञ्चवटी,	चरणकमलम्,
उपकूलम्,	निर्विघ्नम्,	अनुरथम्।

5. ਸਹੀ ਵਿਗ੍ਰਹਿ ਉੱਤੇ ਠੀਕ (✓) ਦਾ ਚਿੰਨ ਲਗਾਓ—
उपयुक्त विग्रह पर सही का (✓) चिह्न लगायें—

घनश्यामः = घनस्य श्यामः/घन इव श्यामः ।

सुखभोगः = सुख इव भोगः/सुखस्य भोगः ।

देवदत्तः = देवेन दत्तः / देवाय दत्तः ।

जलमग्नः = जले मग्नः / जलेन मग्नः ।

यूपदारुः = यूपाय दारुः / यूपस्य दारुः ।

अनुरूपम् = रूपस्य योग्यम् / रूपस्य अनु ।

6. ਸਹੀ ਸਮਾਸਯੁਕਤ ਪਦ ਉੱਤੇ ਠੀਕ (✓) ਦਾ ਚਿੰਨ ਲਗਾਓ—
उपयुक्त समस्तपद पर सही का (✓) चिह्न लगाइये—

राज्याय लोभः — राज्यलोभः / राज्येलोभः ।

महांश्चासौ पुरुषः — महत्पुरुषः / महापुरुषः ।

चन्द्र इव मुखम् — चन्द्रेवमुखम् / चन्द्रमुखम् ।

नीलं च तत् उत्पलम् — नीलोत्पलम् / नीलमुत्पलम् ।

दिनं दिनम् इति — प्रतिदिनम् / दिनदिनम् ।

7. ਤੱਤਪੁਰਸ਼ ਅਤੇ ਕਰਮਧਾਰੇ ਵਿੱਚ ਕੀ ਫਰਕ ਹੈ ? ਸੰਖੇਪ ਵਿੱਚ ਦੱਸੋ ।
ਅਬਈਭਾਵ ਸਮਾਸ ਕਿਸਨੂੰ ਕਹਿੰਦੇ ਹਨ ?
तत्पुरुष और कर्मधारय में क्या अन्तर है ? संक्षेप में प्रस्तुत करें ।
अव्ययीभाव समास किसे कहते हैं ?

8. 'ਕ' ਕਾਲਮ ਵਿੱਚ ਦਿੱਤੇ ਸਮਾਸਯੁਕਤ ਪਦਾਂ ਨੂੰ 'ਖ' ਕਾਲਮ ਵਿੱਚ ਦੱਸੇ ਸਹੀ ਸਮਾਸ ਦੇ ਨਾਲ ਜੋੜੋ।
'क' स्तम्भ में प्रदत्त समस्तपदों को 'ख' स्तम्भ में प्रदर्शित उपयुक्त समास के साथ जोड़ें—

क	ख
चौर भयम्	द्विगु
त्रिभुवनम्	उपमित कर्मधारय
नीलोत्पलम्	तृतीया तत्पुरुष
पुरुषव्याघ्रः	पञ्चमी तत्पुरुष
विद्याविहीनः	कर्मधारय

9. ਆਪਣੀ ਭਾਸ਼ਾ ਵਿੱਚ ਅਨੁਵਾਦ ਕਰੋ—

अपनी भाषा में अनुवाद करें—

अयं बालकः प्रतिदिनं विद्यालयं गच्छति ।

रोगमुक्ताः जनाः प्रायः सुखिनो भवन्ति ।

मुनिकुमाराः यज्ञकाष्ठानि गृहीत्वा आश्रमं प्रत्यागच्छन्ति ।

राज्यसभायां सभापण्डितानां विशिष्टादरो भवति ।

तडागेऽस्मिन् बहूनि श्वेतपद्मानि शोभन्ते ।

चतुर्युगेषु भगवतोऽवताराः भवन्ति ।

10. ਸੰਸਕ੍ਰਿਤ ਵਿੱਚ (ਸਮਾਸ ਨਾਲ) ਅਨੁਵਾਦ ਕਰੋ—

ਤਾਕਤ ਦੇ ਅਨੁਸਾਰ ਕੰਮ ਕਰਨ ਚਾਹੀਦਾ ਹੈ।

ਤੇਲ ਦਾ ਬਰਤਨ ਹੱਥੋਂ ਡਿੱਗ ਗਿਆ ।

ਚੰਦਰਮਾ ਜਿਹਾ ਮੂੰਹ ਕਿਸਨੂੰ ਚੰਗਾ ਨਹੀਂ ਲੱਗਦਾ।

ਇਸ ਸਦੀ ਦਾ ਸਭ ਤੋ ਚੰਗਾ ਕਵੀ ਕੌਣ ਹੈ?

ਯੁੱਧ ਵਿੱਚ ਯੁੱਧਮਾਹਰ ਯੋਧਿਆਂ ਦੀ ਜਿੱਤ ਹੁੰਦੀ ਹੈ।

ਸਾਹਿਤ, ਸੰਗੀਤ ਤੇ ਕਲਾ ਤੋਂ ਰਹਿਤ ਮਨੁੱਖ ਪਸ਼ੂ ਬਰਾਬਰ ਹੈ।

संस्कृत में (समास के साथ) अनुवाद करें—

शक्ति के अनुसार कार्य करना चाहिये ।

तेल का पात्र हाँथों से गिर पड़ा ।

चन्द्रमा के समान मुख किसको अच्छा नहीं लगता ?

इस शताब्दी का श्रेष्ठ कवि कौन है ?

युद्ध में युद्धनिपुण योद्धाओं की विजय होती है।

साहित्य, सङ्गीत और कला से रहित मनुष्य पशु के समान होता है।

बुद्धिर्या सत्त्वरहिता स्त्रीत्वं तत् केवलं मतम् ।
सत्त्वं चानयसंपन्नं तत्पशुत्वं न पौरुषम् ।।

उपभोगकातराणां पुरुषाणामर्थसंचयपराणाम् ।
कन्यारत्नमिव गृहे तिष्ठन्त्यर्थाः परस्यार्थे ।।

ਖਟ੍ਪਞ੍ਚਾਸ਼ਃ ਪਾਠਃ

ਬਹੁਬ੍ਰੀਹਿ ਅਤੇ ਦਵੰਦਵ ਸਮਾਸ ।

बहुव्रीहि तथा द्वन्द्व-समास ।

उदारचरितानां तु वसुधैव कुटुम्वकम् ।
मानिनः सदा मानैकधनाः भवन्ति ।
सर्वासु अवस्थासु रमणीयत्वम् आकृतिविशेषाणाम् ।
चतुराननो ब्रह्मा अस्य जगतः स्रष्टा ।
समुद्रः पीताम्बरं वीक्ष्य हरये लक्ष्मीं, दिगम्बरं वीक्ष्य शिवाय च विषम् अददात् ।
निर्गतभयाः नराः सुखिनो भवन्ति ।
आहारे व्यवहारे च त्यक्तलज्जः सुखी भवति ।
प्राज्ञः विरूपामपि कुलजां कन्यां वरयेत् ।
'स्त्रीशूद्रौ न पठेताम् वेदम्' इति न साधु मन्यन्ते आधुनिकाः विद्वांसः ।
स्त्रीपुरुषौ द्वावेव सद्गृहस्थरथस्य चक्रद्वयम् ।
वीतरागभयक्रोधाः ऋषयः तीक्ष्णं तपस्तप्यन्ते ।
शिक्षा नाम हि जीवने शुभाशुभयोः अवबोधिनी अस्ति ।
जगतः पितरौ पार्वतीपरमेश्वरौ अहं वन्दे ।
धर्मार्थकाममोक्षाः चत्वारः पुरुषार्थाः भवन्ति ।
पित्राज्ञया रामलक्ष्मणौ वनम् अगच्छताम् ।
दधिघृतयुक्तं भोजनं सर्वेषां कृते नैव सुलभम् ।
आहारनिद्राभयं सर्वेषु जन्तुषु समानमेव, तत्र मानवेषु एको धर्म एव विशेषः ।

ਸ਼ਬਦਕੋਸ਼ (शब्दकोशः)—

मानैकधन	मान ही एकमात्र है धन जिसका	ਮਾਨ ਹੀ ਜਿਸਦਾ ਇੱਕ ਮਾਤਰ ਧੰਨ ਹੈ
आकृतिविशेष	आकर्षकरूप	ਦਿੱਲ ਖਿੱਚਦਾ ਰੂਪ
साभिलाष	अभिलाषा से युक्त	ਇੱਛਾ ਤੋਂ ਯੁਕਤ
चतुरानन	चार मुखों वाला (ब्रह्मा)	ਚਾਰ ਮੂੰਹਾਂ ਵਾਲਾ (ਬ੍ਰਹਮਾ)
दिगम्बर	दिशायें ही जिनका वस्त्र है (शिव)	ਦਿਸਾਵਾਂ ਹੀ ਜਿਸਦੇ ਕੱਪੜੇ ਹਨ (ਸ਼ਿਵ)
प्राज्ञ	विद्वान्	ਵਿਦਵਾਨ
विरूपा	जो रूपवती न हो	ਜਿਹੜੀ ਮੋਹਣੀ ਨ ਹੋਵੇ

ਨਿਰਦੇਸ਼ (निर्देशः)—

1. ਬਹੁਬ੍ਰੀਹਿ ਸਮਾਸ ਵਿੱਚ ਪਹਿਲਾ ਪਦ ਅਤੇ ਉੱਤਰ ਪਦ ਆਪਣੇ ਅਰਥ ਦਾ ਗਿਆਨ ਕਰਾਉਣ ਦੇ ਨਾਲ-ਨਾਲ ਕਿਸੇ ਦੂਸਰੇ ਪਦ (ਕਿਸੀ ਆਦਮੀ ਜਾਂ ਵਸਤੂ) ਦਾ ਗਿਆਨ ਵੀ ਕਰਾਂਉਂਦੇ ਹਨ।

   बहुब्रीहि समास में पूर्वपद तथा उत्तरपद अपने अर्थ का बोध कराने के साथ-साथ अन्यपद (किसी व्यक्ति या वस्तु) का भी बोध कराते हैं।

2. ਇਸ ਸਮਾਸ ਵਿੱਚ ਤੀਸਰੇ ਪਦ ਦੀ ਪ੍ਰਧਾਨਤਾ ਹੁੰਦੀ ਹਨ।

   इस समास में अन्यपद की प्रधानता होती है।

3. ਤੀਸਰਾ ਪਦ ਜਿਸ ਲਿੰਗ ਅਤੇ ਜਿਸ ਵਚਨ ਦਾ ਹੁੰਦਾ ਹੈ, ਸਮਾਸਯੁਕਤ ਪਦ ਉਸੀ ਲਿੰਗ ਅਤੇ ਉਸੀ ਵਚਨ ਵਿੱਚ ਹੋਵੇਗਾ।

   अन्य पद जिस लिङ्ग तथा वचन का होता है, समस्त पद भी उसी लिङ्ग तथा उसी वचन में होता है।

4. ਬਹੁਬ੍ਰੀਹਿ ਸਮਾਸ ਦੇ ਵਿਗ੍ਰਹਿ ਵਿੱਚ यः, यम्, येन, यस्मै, यस्मात्, यस्य, यस्मिन् ਸਰਵਨਾਂਵਾਂ ਦਾ ਪ੍ਰਯੋਗ ਹੁੰਦਾ ਹੈ। ਜਿਵੇਂ—
बहुब्रीहि समास के विग्रह में यः, यम्, येन, यस्मै, यस्मात्, यस्य, यस्मिन् सर्वनामों का प्रयोग होता है। जैसे—

पीतम् अम्बरं यस्य सः = पीताम्बरः।

ਦਵੰਦਵ ਸਮਾਸ—

द्वन्द्व-समास—

1. ਇਸ ਸਮਾਸ ਵਿੱਚ ਦੋਨਾਂ ਪਦਾਂ ਦੀ ਪ੍ਰਧਾਨਤਾ ਰਹਿੰਦੀ ਹੈ। ਜਿਵੇਂ—
द्वन्द्व-समास में दोनों पदों की प्रधानता रहती है। जैसे—

माता च पिता च = मातापितरौ।

2. ਦੋ ਜਾਂ ਦੋ ਤੋਂ ਜਿਆਦਾਂ ਪਦਾਂ ਵਿਚੋਂ ਵੀ ਇਹ ਸਮਾਸ ਹੁੰਦਾ ਹੈ।
दो या दो से अधिक पदों में भी यह समास होता है।

3. ਦਵੰਦਵ ਸਮਾਸ ਵਿੱਚੋਂ ਜਦੋਂ ਬਹੁਤੇ ਪਦ ਹੋਣ ਤਾਂ ਘੱਟ ਅੱਖਰਾਂ ਵਾਲਾ ਪਦ, ਇਸਤ੍ਰੀਲਿੰਗਵਾਚਕ ਪਦ ਬਾਕੀ ਪਦਾਂ ਦੇ ਪਹਿਲੇ ਰੱਖਿਆ ਜਾਂਦਾ ਹੈ। ਜਿਵੇਂ—
द्वन्द्व-समास में जब अनेक पद हों, तब कम अक्षरों वाला तथा स्त्रीलिङ्गवाचक पद अन्य पदों से पहले रखा जाता है। जैसे—

शिवश्च केशवश्च = शिवकेशवौ।
गौरी च शङ्करश्च = गौरीशङ्करौ।

4. ਦਵੰਦਵ ਸਮਾਸ ਵਿੱਚ ਵਿਗ੍ਰਹਿ ਕਰਦੇ ਸਮੇ ਹਰੇਕ ਪਦ ਤੋਂ ਬਾਅਦ 'च' ਲਗਾਦਿਆ ਜਾਂਦਾ ਹੈ। ਜਿਹੜਾ ਆਖਰੀ ਪਦ ਹੁੰਦਾ ਹੈ ਉਸ ਅਨੁਸਾਰ ਹੀ ਸਮਾਸਯੁਕਤ ਪਦ ਦਾ ਲਿੰਗ ਹੁੰਦਾ ਹੈ ਅਤੇ ਪਦਾਂ ਦੀ ਗਿਣਤੀ ਅਨੁਸਾਰ ਹੀ ਵਚਨ ਰੱਖਿਆ ਜਾਂਦਾ ਹੈ। ਜਿਵੇਂ—

द्वन्द्व समास में विग्रह करते समय प्रत्येक पद के बाद 'च' लगाया जाता है। जो अंतिम पद होता है, उसी के अनुसार समस्त-पद का लिङ्ग होता है तथा पदों की संख्या के अनुसार वचन का निर्धारण होता है। जैसे—

मयूरी च कुक्कुटश्च = मयूरीकुक्कुटौ ।
कन्दं च मूलं च फलं च = कन्दमूलफलानि ।

ਅਭਿਆਸ (अभ्यासः)—

1. ਹੇਠ ਲਿਖੇ ਪਦਾਂ ਨੂੰ ਸਮਾਸਯੁਕਤ ਪਦ ਬਣਾਓ—
निम्नलिखित व्यस्तपदों को समस्त बनायें—

रामश्च कृष्णश्च =
कण्ठे कालो यस्य =
निर्गतं भयं यस्मात् =
पत्रं च पुष्पं च फलं च =
चन्द्र इव मुखं यस्याः सा =

2. ਹੇਠ ਲਿਖੇ ਸਮਾਸਯੁਕਤ ਪਦਾਂ ਦਾ ਵਿਗ੍ਰਹਿ ਕਰੋ—
निम्नलिखित समस्त पदों का विग्रह कीजिये—

सुमुखः, चक्रपाणिः, दशाननः, मातापितरौ,
रामलक्ष्मणभरतशत्रुघ्नाः, कन्दमूलफलानि ।

3. ਹੇਠ ਲਿਖੇ ਸਮਾਸਯੁਕਤ ਪਦਾਂ ਦੇ ਸਮਾਸਾਂ ਦਾ ਨਾਂ ਲਿਖੋ—
निम्नलिखित समस्त-पदों के समास का नाम लिखें—

अर्थकामौ, पीताम्बरः, कमलनेत्रः,
शतपत्रम्, अनादिः, सीतारामौ ।

4. ਹੇਠ ਲਿਖੇ ਸਮਾਸਯੁਕਤ ਪਦਾਂ ਵਿੱਚੋਂ ਬਹੁਬ੍ਰੀਹਿ ਸਮਾਸ ਦੇ ਉਦਾਹਰਣ ਛਾਂਟੋ—

निम्नलिखित समस्त-पदों में से बहुव्रीहि-समास के उदाहरण छाँटिये—

पितापुत्रौ, राजपुरुषः, दुःखसमुद्रः, धर्मार्थकाममोक्षाः, महाशयः, सहानुजः, वीरपुरुषः, विरूपः ।

5. ਸਹੀ ਵਿਗ੍ਰਹਿ ਉੱਤੇ ਠੀਕ (✓) ਦਾ ਨਿਸ਼ਾਨ ਲਗਾਓ—

उपयुक्त विग्रह पर सही (✓) चिह्न लगायें—

शब्दार्थौ = शब्दश्च अर्थश्च / शब्दार्थश्च शब्दार्थश्च ।

श्वश्रूश्वशुरौ = श्वश्रूश्च श्वशुरश्च / श्वशुरश्च श्वशुरश्च ।

कमलनेत्रः = कमलं नेत्रे यस्य / कमलम् इव नेत्रे यस्य ।

चतुर्युगम् = चतुर्णां युगानां समाहारः / चत्वारः युगाः अस्मिन् ।

महाराजः = महतां राजः / महांश्चासौ राजा ।

6. ਸਹੀ ਸਮਾਸਯੁਕਤ ਪਦ ਤੇ ਠੀਕ (✓) ਦਾ ਨਿਸ਼ਾਨ ਲਗਾਓ—

उपयुक्त समस्त-पद पर सही (✓) का चिह्न लगायें—

भीमश्च अर्जुनश्च = भीमार्जुनौ / अर्जुनभीमौ ।

पिता च माता च = मातापितरौ / पितामातरौ ।

पराजिताः रिपवो येन = पराजितरिपवः/पराजितरिपुः ।

कमलम् इव नेत्रे यस्य सः = कमलनेत्रः / कमलनेत्रम् ।

प्राप्तम् उदकं यं सः = प्राप्तोदकः / उदकप्राप्तः ।

7. 'ਕ' ਕਾਲਮ ਵਿੱਚ ਦਿੱਤੇ ਪਦਾਂ ਨੂੰ 'ਖ' ਕਾਲਮ ਵਿੱਚ ਦੱਸੇ ਸਹੀ ਸਮਾਸ ਨਾਲ ਜੋੜੋ—

'क' स्तम्भ में प्रदत्त पदों को 'ख' स्तम्भ में प्रदर्शित उपयुक्त समास के साथ जोड़ें—

क	ख
कन्दमूलफलानि	बहुव्रीहि
मातापितरौ	बहुव्रीहि
चन्द्रशेखरः	द्वन्द्व

क	ख
चन्द्रकान्तिः	द्वन्द्व
चक्रपाणिः	द्वन्द्व

8. ਦਵੰਦਵ ਅਤੇ ਬਹੁਬ੍ਰੀਹਿ ਸਮਾਸ ਦੇ ਕੁੱਝ ਅਜਿਹੇ ਉਦਾਹਰਣ ਦਿਓ ਜਿਹੜੇ ਇਸ ਪਾਠ ਵਿੱਚ ਨ ਆਏ ਹੋਣ ।
द्वन्द्व तथा बहुव्रीहि समास के कुछ ऐसे उदाहरण प्रस्तुत करें, जो इस पाठ में न आये हों ।

9. ਆਪਣੀ ਭਾਸ਼ਾ ਵਿੱਚ ਅਨੁਵਾਦ ਕਰੋ—
अपनी भाषा में अनुवाद करें—

धर्मात्मनां यशः त्रिभुवनेषु प्रसरति ।

रामभरतलक्ष्मणशत्रुघ्नेषु रामो ज्येष्ठ आसीत् ।

एते महाशयाः मम हितैषिणः सन्ति ।

चतुर्मुखो ब्रह्मा इदं विश्वमसृजत् ।

भीमार्जुनयुधिष्ठिराः कुन्त्याः पुत्रा आसन् ।

10. ਸੰਸਕ੍ਰਿਤ ਵਿੱਚ ਅਨੁਵਾਦ ਕਰੋ—

ਰਾਮ ਅਤੇ ਕ੍ਰਿਸ਼ਨ ਭਗਵਾਨ ਦੇ ਅਵਤਾਰ ਹਨ ।

ਸ਼ੂਰਪਨਖਾ ਰਾਵਣ ਦੀ ਭੈਣ ਸੀ ਜਿਸਨੂੰ ਲਸ਼ਮਨ ਨੇ ਬੇਸ਼ਕਲ ਬਣਾ ਦਿੱਤਾ ।

ਨਿਡਰ ਆਦਮੀ ਸਦਾ ਸੁਖੀ ਰਹਿੰਦਾ ਹੈ ।

ਅਰਥ ਅਤੇ ਕਾਮ ਨੇ ਧਰਮ ਅਤੇ ਮੋਖ ਨੂੰ ਵੱਸ਼ ਵਿੱਚ ਕਰ ਲਿਆ ਹੈ ।

ਜਿਸ ਰਾਜਾ ਦੇ ਸਾਰੇ ਦੁਸ਼ਮਣ ਹਾਰ ਗਏ ਹੋਣ ਉਹ ਚੱਕਰਵਰਤੀ ਕਹਿਲਾਉਂਦਾ ਹੈ ।

संस्कृत में अनुवाद करें—

राम और कृष्ण भगवान् के अवतार थे।

शूर्पणखा रावण की बहन थी, जिसको लक्ष्मण ने विरूप कर दिया।

निर्गतभय-पुरुष सदा सुखी रहता है।

अर्थ और काम ने धर्म और मोक्ष को वश में कर लिया।

जिस राजा के सभी शत्रु पराजित हो गये हों, वह चक्रवर्ती कहलाता है।

किं वाससस्तत्र विचारणीयं वासः प्रधानं खलु योग्यतायाः।
पीताम्बरं वीक्ष्य ददौ स्वकन्यां दिगम्बरं वीक्ष्य विषं समुद्रः॥

वागर्थाविव सम्पृक्तौ वागर्थप्रतिपत्तये।
जगतः पितरौ वन्दे पार्वतीपरमेश्वरौ॥

सप्तपञ्चाशः पाठः

ଉପପଦ ବିଭକ୍ତି ।

उपपद विभक्ति ।

नदीमुभयतः यात्रिणः नौकां प्रतीक्षन्ते ।

वर्षाकाले ग्रामं परितः जलमेव दृश्यते ।

ये चौर्यं कृत्वा उदरं पालयन्ति, तान् धिक् ।

फल्गुनद्यां सैकतम् अधः जलं प्राप्यते ।

मातुः हृदयं कन्यां प्रति स्निग्धं भवति ।

प्रयागे गङ्गां यमुनां चान्तरा सरस्वती प्रवहति इति पौराणिकी मान्यता ।

साक्षरतामनु निर्धनता अपि गमिष्यति भारतस्य ।

वर्षाः प्रतिवृक्षं समानं सिञ्चन्ति, किन्तु प्रकृतिवशात् मधुराम्लफलानि भवन्ति ।

श्रमेण विना विद्या न लभ्यते कथञ्चन ।

साक्षरतां विना राष्ट्रस्य समुन्नतिः दुर्लभा ।

हनुमान् वानरैः सह सीतायाः अन्वेषणम् अकरोत् ।

धर्मेण सदृशो नास्ति अन्यो बन्धुः महीतले ।

कार्यारम्भे विघ्नविनाशकाय श्रीगणेशाय नमः ।

रूपयौवनप्रभुत्वाविवेकितासु एकैकम् अपि अनर्थाय अलम् ।

विदेशं गन्तुमुद्यताय पुत्राय मातापितरौ 'स्वस्ति' इति
अवदताम् ।

ईश्वरात् अन्यः कः रक्षितुं समर्थः इदं जगत् ?
ऋते धर्मात् राजनीतेः का स्थितिः ?
पुत्रस्य कृते माता कियन्ति कष्टानि सहते ।
जीवेषु मानवः श्रेष्ठाः मानवेषु च पण्डिताः ।

ਨਿਰਦੇਸ਼ (निर्देशः)—

1. ਵਿਵਕਤੀਆਂ ਦਾ ਪ੍ਰਯੋਗ ਦੋ ਤਰੀਕੇ ਨਾਲ ਕੀਤਾ ਜਾਂਦਾ ਹੈ। ਕ੍ਰਿਆ ਨੂੰ ਨਿਮਿੱਤ ਮੰਨ ਕੇ ਅਤੇ ਪਦ ਨੂੰ ਨਿਮਿੱਤ ਮੰਨ ਕੇ। ਜਦੋਂ ਕ੍ਰਿਆ ਨਿਮਿੱਤ ਮੰਨ ਕੇ ਵਿਵਕਤੀ ਦਾ ਪ੍ਰਯੋਗ ਹੁੰਦਾ ਹੈ ਤਦੋਂ ਉਸਨੂੰ 'ਕਾਰਕ ਵਿਵਕਤੀ' ਕਹਿੰਦੇ ਹਨ। ਜਿਵੇਂ—'भक्तः मुक्तये हरिं भजति' (ਭਗਤ ਮੁਕਤੀ ਵਾਸਤੇ ਹਰਿ ਨੂੰ ਭਜਦਾ ਹੈ) ਇੱਥੇ 'भक्तः' 'मुक्तये' ਅਤੇ 'हरिं' ਇਨਾਂ ਪਦਾਂ ਵਿੱਚ ਤਰਤੀਬਵਾਰ ਪਹਿਲੀ, ਚੌਥੀ ਤੇ ਦੂਜੀ ਵਿਵਕਤੀ ਦਾ ਪ੍ਰਯੋਗ 'भज्' ਕ੍ਰਿਆ ਨੂੰ ਨਮਿੱਤ ਮੰਨ ਕੇ ਕੀਤਾ ਗਿਆ ਹੈ। ਇਸ ਲਈ ਇਹ ਸਾਰੇ ਪ੍ਰਯੋਗ ਕਾਰਕ ਵਿਵਕਤੀ ਦੇ ਹਨ।

   विभक्तियों का प्रयोग दो प्रकार से किया जाता है। क्रिया को निमित्त मानकर तथा पद को निमित्त मानकर। जब क्रिया को निमित्त मानकर विभक्ति का प्रयोग होता है, तब उसको 'कारक विभक्ति' कहते हैं। जैसे—'भक्तः मुक्तये हरिं भजति' (भक्त मुक्ति के लिए हरि को भजता है)। यहाँ 'भक्तः' 'मुक्तये' और 'हरिं' इन पदों में कमशः प्रथमा, चतुर्थी तथा द्वितीया विभक्ति का प्रयोग 'भज्' क्रिया को निमित्त मानकर किया गया है। इस लिये ये सभी प्रयोग कारक-विभक्ति के हैं।

2. ਜਦੋਂ ਪਦ ਨੂੰ ਨਮਿੱਤ ਮੰਨ ਕੇ ਵਿਵਕਤੀ ਦਾ ਪ੍ਰਯੋਗ ਕੀਤਾ ਜਾਂਦਾ ਹੈ ਤਦੋਂ ਉਸਨੂੰ ਉਪਪਦ ਵਿਵਕਤੀ ਕਹਿੰਦੇ ਹਨ। ਜਿਵੇਂ—'भास्कराय नमः'

ਇੱਥੇ 'ਨਮ:' ਪਦ ਨੂੰ ਨਮਿੱਤ ਮੰਨ ਦੇ 'ਭਾਸ੍ਕਰ' ਪਦ ਵਿੱਚ ਚੌਥੀ ਵਿਵਕਤੀ ਦਾ ਪ੍ਰਯੋਗ ਕੀਤਾ ਗਿਆ ਹੈ।

जब पद को निमित्त मानकर विभक्ति का प्रयोग किया जाय, तो उसे उपपद-विभक्ति कहते हैं। जैसे—'भास्कराय नमः' यहाँ 'नमः' इस पद को निमित्त मानकर 'भास्कर' में चतुर्थी विभक्ति का प्रयोग किया गया।

3. ਸ਼ੇਸ਼ ਉਪਪਦ ਵਿਵਕਤੀਆਂ ਵਾਸਤੇਂ ਦੂਜੀ ਬਿਆਕਰਣ ਦੀ ਕਿਤਾਬਾਂ ਨੂੰ ਵੇਖੋ।

शेष उपपद विभक्तियों के लिए अन्य प्रामाणिक पुस्तक देखें।

ਵਿਆਕਰਣ. (व्याकरणम्)—

ਉਪਪਦ ਵਿਵਕਤੀਆਂ—

उपपद-विभक्तियाँ—

ਦੂਜੀ - ऋते ... ...धिक् ਇਨ੍ਹਾਂ ਪਦਾਂ ਦੇ ਜੋਗ ਵਿੱਚ ਦੂਜੀ ਵਿਵਕਤੀ ਲੱਗਦੀ ਹੈ।

द्वितीया—ऋते, अन्तरेण, विना, अभितः, परितः, सर्वतः, उभयतः, अनु, अन्तरा, प्रति, धिक् के योग में द्वितीया विभक्ति होती है।

ਤੀਜੀ—'सह, साकं' ਆਦਿ ਦੇ ਜੋਗ ਵਿੱਚ ਤੀਜੀ ਵਿਵਕਤੀ ਲੱਗਦੀ ਹੈ।

तृतीया—सह, साकं, सार्धम्, सदृश, हेतु, विना, अलं, प्रयोजन आदि के योग में तृतीया विभक्ति होती है।

ਚੌਥੀ—नमः ... वषट् ਦੇ ਜੋਗ ਵਿੱਚ ਚੌਥੀ ਵਿਵਕਤੀ ਲੱਗਦੀ ਹੈ।

चतुर्थी— नमः, स्वस्ति, स्वाहा, स्वधा अलं, वषट् के योग में चतुर्थी विभक्ति होती है।

ਪੰਜਵੀ—ਪ੍ਰਿਥਕ ਆਦਿ ਅਰਥਾਂ ਵਿੱਚ ਪੰਜਵੀ ਵਿਵਕਤੀ ਆਉਂਦੀ ਹੈ ।

पञ्चमी—पृथक्, विना, आदि अर्थों में पञ्चमी विभक्ति होती है ।

ਛੇਵੀਂ—सम्बन्ध······ अन्तः ਅਨਾਦਰ ਅਰਥ ਵਿੱਚ, ਹੇਤੂ ਸ਼ਬਦ ਦੇ ਪ੍ਰਯੋਗ ਵਿੱਚ ਅਤੇ ਨਮਿੱਤ ਅਰਥ ਵਾਲੇ ਸ਼ਬਦਾ ਦੇ ਯੋਗ ਵਿੱਚ ਛੇਵੀਂ ਵਿਵਕਦੀ ਹੁੰਦੀ ਹੈ ।

षष्ठी—सम्बन्ध, स्मरणार्थक धातु, दूर एवं समोपवाचक शब्द, कृते, समक्ष, मध्ये, अन्तरे, अन्तः, अनादर अर्थ में, हेतु शब्द के प्रयोग में तथा निमित्तार्थक शब्दों के साथ षष्ठी-विभक्ति होती है ।

ਸੱਤਵੀ—निर्धारण ਆਦਿ ਸ਼ਬਦਾ ਅਤੇ ਵਰਗਾਂ ਅਰਥ ਦੱਸਣ ਵਾਲੇ ਸ਼ਬਦਾਂ ਦੇ ਯੋਗ ਵਿੱਚ ਸੱਤਵੀ ਵਿਵਕਤੀ ਆਉਂਦੀ ਹੈ ।

सप्तमी—निर्धारण, स्नेह, आदर, अनुराग तथा तदर्थक शब्दों के योग में सप्तमी विभक्ति होती है ।

ਅਭਿਆਸ (अभ्यासः)—

1. ਹੇਠ ਲਿਖੇ ਸ਼ਬਦਾਂ ਦੇ ਪ੍ਰਯੋਗ ਵਿੱਚ ਕਿਸ ਵਿਵਕਤੀ ਦਾ ਪ੍ਰਯੋਗ ਹੁੰਦਾ ਹੈ ?
निम्नलिखित शब्दों के प्रयोग में किस विभक्ति का प्रयोग होता है ?

   उभयतः,   क्रुध्,   अलम् ।

2. ਕਿਸ ਉਪਪਦ ਵਿੱਚ ਦੂਜੀ, ਤੀਜੀ ਤੇ ਪੰਜਵੀ ਵਿਵਕਤੀ ਦਾ ਪ੍ਰਯੋਗ ਹੁੰਦਾ ਹੈ ?
किन-किन उपपदो के प्रयोग में द्वितीया, तृतीया तथा पञ्चमो विभक्ति का प्रयोग होता है ?

3. ਉਪਪਦ ਵਿਵਕਤੀ ਦੇ ਪ੍ਰਯੋਗ ਨੂੰ ਧਿਆਨ ਵਿੱਚ ਰਖ ਕੇ ਹੇਠ ਲਿਖੇ ਵਾਕਾਂ ਨੂੰ ਸ਼ੁੱਧ ਕਰੋ—

उपपद विभक्ति को ध्यान में रखकर निम्नलिखित वाक्यों का संशोधन करें—

पार्वतीसहितं शिवं नमः ।

पिता पुत्राय अभिक्रुध्यति ।

पितरौ दुहितरं स्निह्यतः ।

चौराय दुर्जनाय च धिक् ।

4. ਉਪਪਦ ਵਿਵਕਤੀ ਦੇ ਬਾਰੇ ਵਿੱਚ ਪਾਠ ਵਿੱਚ ਆਏ ਉਦਾਹਰਣਾਂ ਤੋਂ ਇਲਾਵਾ ਕੁੱਝ ਅਜਿਹੇ ਉਦਾਹਰਣ ਦੱਸੋ ਜਿਨ੍ਹਾਂ ਵਿੱਚ ਦੂਜੀ, ਤੀਜੀ ਤੇ ਚੌਥੀ ਵਿਵਕਤੀ ਦਾ ਪ੍ਰਯੋਗ ਹੁੰਦਾ ਹੈ।

उपपद-विभक्ति के सन्दर्भ में पाठ में आये उदाहरणों के अतिरिक्त कुछ ऐसे उदाहरण प्रस्तुत करें, जिनमें द्वितीया, तृतीया तथा चतुर्थी विभक्ति का प्रयोग होता है।

5. ਬ੍ਰੈਕਟ ਵਿੱਚ ਦਿੱਤੇ ਸ਼ਬਦਾਂ ਨੂੰ ਸਹੀ ਵਿਵਕਤੀ ਲਗਾਕੇ ਖਾਲੀ ਸਥਾਨ ਭਰੋ—

कोष्ठक में प्रदत्त शब्दों में उपयुक्त विभक्ति लगाकर रिक्तस्थान भरें—

……… (मार्ग) उभयतः वृक्षाः सन्ति ।

तस्य …… (गृह) बहिरुद्यानं शोभते ।

काकः ………… (पक्षि) चतुरोऽस्ति ।

शूराः पुरुषाः…… (सिंह) तुल्याः भवन्ति ।

………… (भगवत्) वासुदेवाय नमः ।

6. ਹੇਠ ਲਿਖੇ ਉਪਪਦਾਂ ਦਾ ਵਾਕਾਂ ਵਿੱਚ ਪ੍ਰਯੋਗ ਕਰੋ—

निम्नलिखित उपपदों का वाक्यों में प्रयोग करें—

प्रति, स्वस्ति, नाना, पृथक्, स्वस्ति, अन्तरा ।

7. ਸਹੀ ਉਪਪਦਾਂ ਦਾ ਪ੍ਰਯੋਗ ਕਰਕੇ ਖਾਲੀ ਸਥਾਨ ਭਰੋ—
उपयुक्त उपपदों का प्रयोग करके रिक्त स्थान भरें—

सेवकः स्वामिना ········ आगच्छति ।
················ अतिविस्तरेण ।
शिक्षकः दुष्टाय शिष्याय ······ ····· ।
कस्मै बालकाय मोदकं न ············ ।
उदिते·········· कमलानि विकसन्ति ।
कवीनां कविषु वा कालिदासः ········ ।

8. 'ਕ' ਕਾਲਮ ਵਿੱਚ ਦਿੱਤੇ ਉਪਪਦਾਂ ਨੂੰ 'ਖ' ਕਾਲਮ ਵਿੱਚ ਦੱਸੀ ਸਹੀ ਵਿਭਕਤੀ ਨਾਲ ਜੋੜੋ—
'क' स्तम्भ में प्रदत्त उपपदों को 'ख' स्तम्भ में उपयुक्त विभक्ति के साथ जोड़ें—

क	ख
परितः	तृतीया
साकं	पञ्चमी
सदृश	द्वितीया
अभितः	तृतीया
प्रभृति	द्वितीया

9. ਆਪਣੀ ਭਾਸ਼ਾ ਵਿੱਚ ਅਨੁਵਾਦ ਕਰੋ—
अपनी भाषा में अनुवाद करें—

अलं परनिन्दया कलहेन च ।
रामः वने सीतां विना कष्टम् अन्वभवत् ।
युद्धक्षेत्रे एक एव रामः रावणाय अलमासीत् ।
गोपालः श्यामात् स्थूलतरोऽस्ति ।
हिमालयं यावत् भारतस्य सीमा वर्तते ।

10. ਸੰਸਕ੍ਰਿਤ ਵਿੱਚ ਅਨੁਵਾਦ ਕਰੋ—

ਪਿੰਡ ਵਿੱਚ ਚਾਰੋਂ ਪਾਸੇ ਪਾਣੀ ਹੀ ਪਾਣੀ ਹੈ।

ਅਮਰ ਸਾਲ ਭਰ ਪੜ੍ਹਦਾ ਹੈ।

ਸ਼ਾਮ ਹੋਣ ਤੇ ਪੰਛੀ ਆਪਣੇ ਆਲ੍ਹਣੇ ਵੱਲ ਮੁੜ ਰਿਹੇ ਹਨ।

ਆਓਂ ਅਸੀਂ ਸਾਰੇ ਮਿਲ ਕੇ ਈਸ਼ਵਰ ਨੂੰ ਪ੍ਰਣਾਮ ਕਰੀਏ।

ਪੜ੍ਹਨ ਵਾਲੇ ਮੁੰਡਿਆਂ ਵਿੱਚ ਹਰੀਸ਼ ਹੁਸ਼ਿਆਰ ਹੈ।

संस्कृत में अनुवाद करें—

गाँव के चारों ओर पानी ही पानी है।

अमर साल भर अध्ययन करता है।

शाम होने पर पक्षी अपनी नीड की ओर लौट रहे हैं।

आओ, हम सब मिलकर ईश्वर को नमस्कार करें।

पढ़ने वाले लड़कों में हरीश मेधावी है।

गुरुर्ब्रह्मा गुरुर्विष्णुः गुरुर्देवो महेश्वरः।
गुरुः साक्षात् परं ब्रह्म तस्मै श्रीगुरवे नमः।।

अष्टापञ्चाशः पाठः

ਤਰਪ, ਤਮਪ, ਪ੍ਰਤੇ ਤਿੰਨਾ ਲਿੰਗਾ ਵਿੱਚ ।

तरप्, तमप् प्रत्यय तीनों लिङ्गों में ।

सकण्टकात् लघुमार्गात् निष्कण्टको दीर्घतरो मार्गो वरम् ।

गङ्गा-यमुनयोर्मध्ये यमुना गभीरतरा नदी अस्ति ।

इयम् आगच्छति मम प्रियतरा सखि प्रियंवदा ।

आम्राद् द्राक्षाफलं लघुतरं किन्तु मधुरतरं फलमस्ति ।

महाभारतस्यापेक्षया रामायणं लघुतरं काव्यमस्ति ।

ग्रीष्मस्य दिनं रात्र्याः अपेक्षया दीर्घतरं भवति ।

नलभीमयोर्मध्ये नलः प्रवीणतरः पाचक आसीत् ।

गिरिषु हिमालयः उन्नततमः किन्तु विन्ध्यात् उन्नततरः ।

बदरीफलं निकृष्टतमं फलं सर्वेषु फलेषु ।

पाण्डवेषु युधिष्ठिरः धीरतमः नकुलश्च सुन्दरतमः ।

सूर्यमन्दिरेषु कोणार्कसूर्यमन्दिरं बृहत्तममस्ति ।

इयं परिचारिका अन्यासु परिचारिकासु कार्ये कुशलतमा ।

सर्वेषु वाद्ययन्त्रेयु वीणा प्राचीनतमा अस्ति ।

दशरथस्य तिसृषु राज्ञिषु कैकेयी प्रियतमा आसीत् ।

अस्ति संस्कृतनाटकेषु रमणीयतमं नाटकमभिज्ञानशाकुन्तलम् ।

असौ चपलतमः बालकः भरतः सिंहशावकैः सह क्रीडति ।

ਸ਼ਬਦਕੋਸ਼ (शब्दकोशः)—

सकण्टक	काँटों से युक्त	ਕੰਡਿਆਂ ਨਾਲ ਭਰਪੂਰ
वरम्	अच्छा, ठीक	ਚੰਗਾ, ਠੀਕ
निकृष्ट	खराब	ਖਰਾਬ
बदरीफलम्	बेर का फल	ਬੇਰ (ਇਕ ਫਲ)
बृहत्तम	सबसे बड़ा	ਸਭ ਤੋਂ ਵੱਡਾ
परिचारिका	सेविका	ਨੌਕਰਾਣੀ
चपल	चञ्चल	ਚੁਲਬੁਲ
शावक	बच्चा	ਬੱਚਾ

ਨਿਰਦੇਸ਼ (निर्देशः)—

1. ਤੁਲਨਾ ਵਿੱਚ ਜਿੱਥੇ ਦੋ ਵਿੱਚੋਂ ਇੱਕ ਨੂੰ ਵੱਧ ਵਿਖਾਇਆ ਜਾਵੇ ਉੱਥੇ ਵਿਸ਼ੇਸ਼ਣ ਵਿੱਚ ਤਰਪ ਪ੍ਰਤੇ ਜੋੜਿਆ ਜਾਂਦਾ ਹੈ। ਤਰਪ ਦਾ 'ਤਰ' ਬਾਕੀ ਬਚਦਾ ਹੈ। ਜਿਵੇਂ—'रामकृष्णयोः कृष्णः सुन्दरतरः' (ਰਾਮ ਅਤੇ ਕ੍ਰਿਸ਼ਨ ਵਿੱਚ ਕ੍ਰਿਸ਼ਨ ਸੁੰਦਰ ਹੈ। ਇਸ ਵਾਕ ਵਿੱਚ ਰਾਮ ਤੇ ਕ੍ਰਿਸ਼ਨ ਦੀ ਤੁਲਨਾ ਵਿੱਚ ਕ੍ਰਿਸ਼ਨ ਨੂੰ ਜਿਆਦਾ ਸੁੰਦਰ ਦੱਸਿਆ ਗਿਆ ਹੈ, ਇਸ ਲਈ 'ਸੁੰਦਰ' ਇਸ ਵਿਸ਼ੇਸ਼ਣ ਵਿੱਚ ਤਰਪ (ਤਰ) ਪ੍ਰਤੇ ਲਗਾਇਆ ਗਿਆ ਹੈ।

   तुलना द्वारा जहाँ दो में से एक का अतिशय दिखाया जाय, वहाँ विशेषण में 'तरप्' प्रत्यय जोड़ा जाता है। तरप् का 'तर' शेष रहता है। जैसे—'रामकृष्णयोः कृष्णः सुन्दरतरः' (राम और कृष्ण में कृष्ण सुन्दर है)। इस वाक्य में राम और कृष्ण की तुलना में कृष्ण को अधिक सुन्दर बताया गया है। इसलिये 'सुन्दर' इस विशेषण में 'तरप्' (तर) प्रत्यय लगाया गया है।

2. ਜ਼ਿੱਥੇ ਬਹੁਤਿਆਂ ਵਿੱਚੋਂ ਇੱਕ ਨੂੰ ਵੱਧ ਵਿਖਾਇਆ ਜਾਵੇ ਉੱਥੇ ਵਿਸ਼ੇਸ਼ਣ ਵਿੱਚ ਤਮਪ (ਤਮ) ਪ੍ਰਤੇ ਲੱਗਦਾ ਹੈ। ਜ਼ਿਵੇਂ—'नदीषु गंगा पवित्रतमा अस्ति' (ਨਦੀਆਂ ਵਿੱਚ ਗੰਗਾ ਸਭ ਤੋਂ ਜਿਆਦਾ ਪਵਿੱਤਰ ਹੈ) ਇਸ ਵਾਕ

2. ਵਿੱਚ ਸਾਰੀਆਂ ਨਦੀਆਂ ਤੋਂ ਵੱਧ ਪਵਿੱਤਰ ਗੰਗਾ ਹੈ। ਇਹ ਦੱਸਣ ਲਈ ਪਵਿੱਤਰ ਵਿਸ਼ੇਸ਼ਣ ਵਿੱਚ 'ਤਮਪ' ਪ੍ਰਤੇ ਲਗਾਇਆ ਗਿਆ ਹੈ।

जहाँ अनेक में एक का अतिशय दिखाया जाये, वहाँ विशेषण में 'तमप्' (तम) प्रत्यय लगता है। जैसे—'नदीषु गंगा पवित्रतमा अस्ति' (नदियों में गंगा सबसे अधिक पवित्र नदी है)। इस वाक्य में सभी नदियों से अधिक पवित्र गंगा है, इसको दर्शाने के लिये 'पवित्र' विशेषण में 'तमप्' प्रत्यय लगाया गया है।

3. ਵਿਸ਼ੇਸ਼ਣ ਹੋਣ ਦੀ ਵਜਹ ਨਾਲ 'ਤਰਪ' ਅਤੇ 'ਤਮਪ' ਪ੍ਰਤੇ ਵਾਲੇ ਸ਼ਬਦਾਂ ਦੇ ਰੂਪ ਤਿਨਾਂ ਲਿੰਗਾ ਵਿੱਚ ਚੱਲਦੇ ਹਨ। ਇਨ੍ਹਾਂ ਦੇ ਰੂਪ ਪੁਲਿੰਗ, ਇਸਤਰੀਲਿੰਗ ਤੇ ਨਪੁੰਸਕ ਲਿੰਗ ਵਿੱਚ ਤਰਤੀਬਵਾਰ ਰਾਮ, ਲਤਾ, ਅਤੇ ਫਲ ਦੀ ਤਰ੍ਹਾਂ ਚਲਦੇ ਹਨ।

विशेषण होने के कारण तरप् और तमप् प्रत्ययान्त शब्दों के रूप तीनों लिङ्गों में चलते हैं। इनके रूप पुंल्लिङ्ग, स्त्रीलिङ्ग तथा नपुंसकलिङ्ग में क्रमशः राम, लता तथा फल की तरह चलते हैं।

ਵਿਆਕਰਣ (व्याकरणम्)—

ਤਰਪ ਅਤੇ ਤਮਪ ਪ੍ਰਤੇਆਂ ਵਾਲੇ ਸ਼ਬਦਾਂ ਦੇ ਕੁੱਝ ਉਦਾਹਰਣ—

'तरप्' और 'तमप्' प्रत्ययान्त शब्दों के कुछ उदाहरण—

शब्द	तरप्	तमप्
गुरु	गुरुतरः	गुरुतमः
लघु	लघुतरः	लघुतमः
कुशल	कुशलतरः	कुशलतमः
महान्	महत्तरः	महत्तमः
शुक्ल	शुक्लतरः	शुक्लतमः
दीर्घ	दीर्घतरः	दीर्घतमः

ਅਭਿਆਸ (अभ्यासः)—

1. ਹੇਠ ਲਿਖੇ ਸ਼ਬਦਾਂ ਨਾਲ ਤਰਪ ਪ੍ਰਤੇ ਲਗਾ ਕੇ ਪੁਲਿੰਗ ਵਿੱਚ ਦੂਜੀ ਤੇ ਤੀਜੀ ਵਿਵਕਤੀ ਦੇ ਰੂਪ ਲਿਖੋ—
निम्नलिखित शब्दों से तरप् प्रत्यय लगाकर पुंल्लिग में द्वितीया एवं तृतीया विभक्ति में रूप लिखें—

क्षुद्र, अल्प, कृश, दृढ़, पटु ।

2. ਹੇਠ ਲਿਖੇ ਸ਼ਬਦਾਂ ਨਾਲ ਤਮਪ ਪ੍ਰਤੇ ਲਗਾ ਕੇ ਤੀਜੀ ਤੇ ਚੌਥੀ ਵਿਵਕਤੀ ਦੇ ਰੂਪ ਲਿਖੋ—
निम्नलिखित शब्दों में तमप् प्रत्यय लगाकर स्त्रीलिङ्ग तृतीया और चतुर्थी विभक्ति में रूप लिखें—

सुन्दर, विशाल, गभीर, पृथु, निकट ।

3. ਹੇਠ ਲਿਖੇ ਸ਼ਬਦਾਂ ਨੂੰ ਵਾਕਾਂ ਵਿੱਚ ਪ੍ਰਯੋਗ ਕਰੋ—
निम्नलिखित शब्दों का वाक्यों में प्रयोग करें—

दूरतरः, क्षिप्रतमः, पटुतमा, प्रियतरा, बृहत्तमः ।

4. ਹੇਠ ਲਿਖੇ ਤਰਪ ਪ੍ਰਤੇ ਵਾਲੇ ਸ਼ਬਦਾ ਨੂੰ ਤਮਪ ਪ੍ਰਤੇ ਲਗਾ ਕੇ ਬਦਲੋ—
निम्नलिखित 'तरप्' प्रत्ययान्त, पदों को 'तमप्' प्रत्ययान्त पदों में बदलें—

क्षीणतरायाः, मधुरतरम्, दृढ़तरः, पृथुतराम्, लघुतरः ।

5. ਹੇਠ ਲਿਖੇ ਪਦਾਂ ਦਾ ਪ੍ਰਕ੍ਰੀਤੀ ਪ੍ਰਤੇ ਅਲੱਗ ਕਰਕੇ ਲਿੰਗ ਦੀ ਜਾਣਕਾਰੀ ਦਿਓ—
निम्नलिखित पदों का प्रकृति-प्रत्यय-विभाजन करके लिङ्ग-निर्देश भी करें—

चतुरतमेन, निकटतमा, बृहत्तमस्य, पटुतमान्, अल्पतरेषु ।

6. ਹੇਠ ਲਿਖੇ ਵਾਕਾਂ ਵਿੱਚ ਤਰਪ ਪ੍ਰਤੇ ਵਾਲੇ ਅਤੇ ਤਮਪ ਪ੍ਰਤੇ ਵਾਲੇ ਸ਼ਬਦਾਂ ਨੂੰ ਸ਼ੁੱਧ ਕਰੋ—
निम्नलिखत वाक्यों में तरप् प्रत्ययान्त तथा तमप् प्रत्ययान्त शब्दों में संशोधन करें—

महादेशेषु एशिया-महादेशः वृहत्तरः।
व्यास-कालिदासयोः व्यासः प्राचीनतमः।
भारतस्य वृहत्तमं नगरी का ?
महानदी उत्कलप्रदेशस्य दीर्घतमो नदी।
प्रयागः तीर्थेषु पवित्रतममस्ति ।

7. ਬ੍ਰੈਕਟ ਵਿੱਚ ਲਿਖੇ ਸ਼ਬਦਾਂ ਨੂੰ ਵਾਕਾਂ ਅਨੁਸਾਰ ਤਰਪ ਅਤੇ ਤਮਪ ਪ੍ਰਤੇ ਲਗਾ ਕੇ ਖਾਲੀ ਸਥਾਨ ਭਰੋ—
कोष्ठक में लिखे गये शब्दों में वाक्य के अनुसार तरप् और तमप् प्रत्यय लगाकर रिक्त स्थान भरें—

पाण्डवेषु भीमः .... (स्थूल)।
ऋतुषु वसन्तः सर्वेषां .... (अभीष्ट)।
मद्रास-पुरी समुद्रतटयोः पुर्याः समुद्रतटं ... (रमणीय)।
पाठेषु अयं पाठः .... (क्लिष्ट)।
राम-कृष्णयोः मध्ये रामः .... (उदार)।

8. ਹੇਠ ਲਿਖੇ ਪਦਾਂ ਨੂੰ ਬ੍ਰੈਕਟ ਵਿੱਚ ਦੱਸੇ ਲਿੰਗ ਅਨੁਸਾਰ ਬਦਲੋ—
निम्नलिखित पदों को कोष्ठक में निर्दिष्ट लिङ्ग के अनुसार परिवर्तित करें—

पटुतरस्य (स्त्री०), मृदुतमं (पुं०), कृशतमायाः (पुं०), गुरुतरा (नपुं०), दूरतमात् (स्त्री०), महत्तमः (नपुं०)।

9. ਆਪਣੀ ਭਾਸ਼ਾ ਵਿੱਚ ਅਨੁਵਾਦ ਕਰੋ—

अपनी भाषा में अनुवाद करें—

आस्ट्रेलिया विश्वस्य लघुतमो महादेशः।

पञ्जावः भारतस्य समृद्धतमः प्रदेशोऽस्ति।

जनसंख्या-दृष्ट्या उत्तरप्रदेशः भारतस्य बृहत्तमः प्रदेशः।

कोणार्कस्य उत्कृष्टतमा शिल्पकला कस्य चेतो न हरते ?

अनयोः कतरः धनितरः इति ज्ञातुं न शक्नोमि।

10. ਸੰਸਕ੍ਰਿਤ ਵਿੱਚ ਅਨੁਵਾਦ ਕਰੋ—

ਗ੍ਰਹਾਂ ਵਿੱਚ ਸੂਰਜ ਚੰਦਰਮਾ ਤੋਂ ਵੱਡਾ ਹੈ।

ਇਹ ਰਸਤਾ ਦੂਸਰੇ ਰਸਤੇ ਤੋਂ ਲੰਬਾ ਲੱਗਦਾ ਹੈ।

ਪਸ਼ੂਆਂ ਵਿੱਚੋਂ ਸਭਤੋਂ ਤਾਕਤਵਰ ਕੌਣ ਹੈ ?

ਗੰਗਾ ਤੋਂ ਜਮੁਨਾ ਜਿਆਦਾ ਡੂੰਘੀ ਹੈ।

ਗ੍ਰਹਾਂ ਵਿੱਚ ਸੂਰਜ ਦੇ ਸਭ ਤੋਂ ਨੇੜੇ ਗ੍ਰਹਿ ਕਿਹੜਾ ਹੈ ?

संस्कृत में अनुवाद करें—

ग्रहों में सूर्य चन्द्र से बड़ा है।

यह मार्ग दूसरे मार्ग से लम्बा प्रतीत होता है।

पशुओं में सबसे बलवान् कौन है ?

गंगा से जमुना ज्यादा गंभीर है।

ग्रहों में सूर्य के अत्यन्त समीप ग्रह कौन है ?

तृणाल्लघुतरं तूलं तूलादपि च याचकः।
वायुना न नीयतेऽसौ मामयं याचयिष्यति॥

एकोनषष्टि पाठः

ਲਯੁਟ ਅਤੇ ਯੱਤ ਪ੍ਰਤੇ ।

ल्युट् तथा यत् प्रत्यय ।

सहस्राधिकेषु वर्षेषु व्यतीतेष्वपि संस्कृतभाषायाः माधुर्यम् उदात्तत्वं नाद्यापि विस्मृतम् ।

संस्कृतभाषायाः प्राचीनग्रन्थेषु मानवकर्तव्याकर्तव्यादीनां सम्यक् निर्धारणमस्ति ।

वेदानां व्याख्यानं संस्कृतस्य ब्राह्मणग्रन्थेषु वर्तन्ते ।

अस्माकं गौरवग्रन्थाः षड्दर्शनानि अपि संस्कृते एव निबद्धानि सन्ति ।

भास-कालिदास-हर्षप्रभृतीनां कवीनाम् उदयेन सकलं जगत् आत्मानं धन्यं मन्यते ।

भगवतः श्रीकृष्णस्य हसनं गमनं वदनं सर्वमपि मधुरमस्ति ।

भगवतः कथा श्रद्धया प्रेम्णा चावधेया ।

लोचनाभ्यां विहीनस्य दर्पणः किं करिष्यति ?

अन्नदानादपि विद्यादानं वरं, यतः अन्नेन तु क्षणिका तृप्तिः भवति, विद्यया तु यावज्जीवनम् ।

पुत्रवियोगजं दुःखं महतामपि असह्यम् ।

अतिथये उष्णं पेयम् आनय ।

आधुनिकशिक्षाप्रणाल्यां श्रव्यदृश्ययन्त्राणां माध्यमेन शिक्षणं प्रचलति ।

सज्जनसङ्गे चित्तं नेयं, दीनजनाय च वित्तं देयम् ।

निरपराधस्य कस्यापि जन्तोः हिंसनं नूनं निन्द्यम् ।

जयदेवेन रचितं गीतगोविन्दं सर्वथा गेयं वर्तते ।

ਸ਼ਬਦਕੋਸ਼ (शब्दकोशः)—

व्यतीत	बीता हुआ	ਬੀਤਾ ਹੋਇਆ
विकृत	बिगड़ा हुआ	ਖਰਾਬ ਹੋਣਾ
निर्धारण	निश्चय	ਨਿਰਚਯ
अवधेय	ध्यान देने योग्य.	ਧਿਆਨ ਦੇਣ ਜੋਗ
वदन	मुख	ਮੁਖ

ਨਿਰਦੇਸ਼ (निर्देशः)—

1. (i) ਭਾਵ-ਵਾਚਕ ਸ਼ਬਦ ਬਨਾਉਣ ਲਈ ਧਾਤੂ ਤੋਂ ਬਾਅਦ ਲਯੁਟ ਪ੍ਰਤੇ ਲਗਾਇਆ ਜਾਂਦਾ ਹੈ। ਲਯੁਟ ਦਾ (ਅਨ) ਹੋ ਜਾਂਦਾ ਹੈ।

   भाववाचक शब्द बनाने के लिये धातु के बाद 'ल्युट्' प्रत्यय लगाया जाता है। ल्युट् का अन् हो जाता है।

   गम् + ल्युट् (अन्) गमनम्।

   हस् + ल्युट् (अन्) हसनम्।

   (ii) ਲਯੁਟ ਪ੍ਰਤੇ ਵਾਲੇ ਸ਼ਬਦ ਹਮੇਸ਼ਾ ਠਪੁੰਸਕਲਿੰਗ ਹੁੰਦੇ ਹਨ।

   ल्युट् प्रत्ययान्त शब्द सदा नपुंसक लिङ्ग में होते हैं।

2. (i) ਜੋਗ ਅਰਥ ਨੂੰ ਦੱਸਣ ਲਈ ਸੰਸਕ੍ਰਿਤ ਵਿੱਚ ਧਾਤੂ ਦੇ ਅੱਗੇ 'ਯੱਤ' ਪ੍ਰਤੇ ਲਗਾਇਆ ਜਾਂਦਾ ਹੈ। ਯੱਤ ਦਾ (ਯ) ਬਾਕੀ ਰਹਿ ਜਾਂਦਾ ਹੈ।

   'योग्य' अर्थ को व्यक्त करने के लिये धातु के आगे 'यत्' प्रत्यय लगाया जाता है। यत् का 'य्' शेष रहता है। यथा—

   दा + यत् = देयम्, गै + यत् = गेयम्

   (ii) ਯੱਤ ਪ੍ਰਤੇ ਵਾਲੇ ਸ਼ਬਦ ਭਾਵਵਾਚ ਜਾਂ ਕਰਮਵਾਚ ਵਿੱਚ ਵਰਤੇ ਜਾਂਦੇ ਹਨ।

   यत् प्रत्ययान्त शब्द भाववाच्य या कर्मवाच्य में प्रयुक्त होते हैं।

3. ਯੱਤ ਪ੍ਰਤੇ ਉਨ੍ਹਾਂ ਧਾਤੂਆਂ ਵਿੱਚ ਹੀ ਜੋੜਿਆ ਜਾਂਦਾ ਹੈ ਜਿਨ੍ਹਾਂ ਦੇ ਅਖੀਰ ਵਿੱਚ ਸਵਰ ਜਾਂ ਪਵਰਗ ਹੋਵੇ। ਅਜਿਹਾ ਪਵਰਗ ਜਿਸਦੀ ਉਪਧਾ ਵਿੱਚ 'ਅ' ਹੋਵੇ।

   यत् प्रत्यय उन्हीं धातुओं में जोड़े जाते हैं, जिनके अन्त में स्वर हो या 'पवर्ग' हो। ऐसा 'पवर्ग' जिसकी उपधा में 'अ' हो।

4. ਉਪਧਾ :—ਆਖਰੀ ਵਰਣ ਦੇ ਠੀਕ ਪਹਿਲੇ ਵਾਲੇ ਵਰਣ ਨੂੰ ਉਪਧਾ ਕਹਿੰਦੇ ਹਨ। ਜਿਵੇਂ—'ਲਭ' ਇਹ ਧਾਤੂ ਵਿੱਚ ਆਖਰੀ ਵਰਣ 'ਭ' ਇਸਦੇ ਠੀਕ ਪਹਿਲੇ ਦਾ ਵਰਣ 'ਲ' ਦਾ 'ਅ' ਹੈ। ਇਸਲਈ ਇੱਥੇ ਇਸ 'ਅ' ਨੂੰ ਉਪਧਾ ਕਹਾਂਗੇ।

   'उपधा' :—अंतिम वर्ण के ठीक पूर्व वाला वर्ण उपधा कहलाता है। जैसे—'लभ्' इस धातु में अंतिम वर्ण 'भ्' है उसके ठीक पहले का वर्ण 'ल' का 'अ' है। अतः यहाँ 'अ' उपधा कहलाएगा।

5. ਜੇਕਰ ਧਾਤੂ ਦਾ ਆਖਰੀ ਸਵਰ ਆ, ਏ, ਐ, ਓ, ਔ ਹੋਵੇ ਤਾਂ ਇਨ੍ਹਾਂ ਸਵਰਾਂ ਨੂੰ 'ਈ' ਹੋ ਜਾਂਦਾ ਹੈ। ਫਿਰ 'ਈ' ਨੂੰ ਗੁਣ ਹੋਕੇ 'ਏ' ਹੋ ਜਾਂਦਾ ਹੈ। ਜਿਵੇਂ—

   यदि धातु का अंतिम स्वर आ, ए, ऐ, ओ, औ हो, तो धातु में 'यत्' लगाने पर इन स्वरों का 'ई' हो जाता है, फिर 'ई' का गुण होकर 'ए' हो जाता है। जैसे—

   दा + यत् (य) = द् + ई + य = देयम्,
   नी + यत् (य) = न् + ई + य = नेयम्,
   गै + यत् (य) = ग् + ई + य = गेयम्।

6. ਉਪਰ ਲਿਖੇ ਨਿਯਮਾਂ ਤੋਂ ਇਲਾਵਾ ਵੀ ਕੁੱਝ ਹੋਰ ਆਖੀਰ ਵਿੱਚ ਵਿਅੰਜਨ ਵਾਲੇ ਧਾਤੂਆਂ ਵਿੱਚ 'ਯੱਤ' ਲਗਦਾ ਹੈ। ਜਿਵੇਂ—

   उपर्युक्त नियम के अतिरिक्त कुछ व्यञ्जनान्त धातुओं में भी 'यत्' प्रत्यय लगता है। जैसे—

   शस् = शस्यम्, जन् = जन्यम्।

ਵਿਆਕਰਣ (व्याकरणम्)—

ਯੱਤ ਪ੍ਰਤੇ ਵਾਲੇ ਰੂਪ—

यत् प्रत्ययान्त रूप—

चि + यत् = चेयम्

शप् + यत् = शप्यम्

जप् + यत् = जप्यम्

लभ् + यत् = लभ्यम्

छि + यत् = छेयम् (काटना)

गै + यत् = गेयम्

गम् + यत् = गम्यम्

पा + यत् = पेयम्

ਅਭਿਆਸ (अभ्यासः)—

1. ਹੇਠ ਲਿਖੀਆਂ ਧਾਤੂਆਂ ਨਾਲ ਯੱਤ ਪ੍ਰਤੇ ਲਗਾ ਕੇ ਪੁੰਲਿੰਗ ਵਿੱਚ ਦੂਜੀ ਵਿਭਕਤੀ ਦੇ ਰੂਪ ਲਿਖੋ—

   निम्नलिखित धातुओं से यत् प्रत्यय लगाकर पुंल्लिङ्ग में द्वितीया विभक्ति का रूप लिखें—

   लभ्, चि, गम्, शप्, जप् ।

2. ਹੇਠ ਲਿਖੀਆਂ ਧਾਤੂਆਂ ਨਾਲ ਲਯੁਟ ਪ੍ਰਤੇ ਲਗਾਕੇ ਨਪੁੰਸਕ ਲਿੰਗ ਪ੍ਰਥਮਾ ਵਿਭਕਤੀ ਇਕਵਚਨ ਵਿੱਚ ਰੂਪ ਲਿਖੋ—

   निम्नलिखित धातुओं से ल्युट् प्रत्यय लगाकर नपुंसकलिग प्रथमा विभक्ति एकवचन में शब्द-रूप लिखें—

   दा, कृ, पठ्, अनु-सृ, हृ ।

3. ਹੇਠ ਲਿਖੇ ਸ਼ਬਦਾਂ ਵਿਚੋਂ ਲਯੁਟ ਪ੍ਰਤੇ ਵਾਲੇ ਸ਼ਬਦਾਂ ਨੂੰ ਵੱਖ ਕਰੋ—
निम्नलिखित में से ल्युट् प्रत्ययान्त शब्दों को पृथक् करें—
रम्यम्, गमनम्, लभ्यम्, हरणम्, गम्यम्, दूषणम्, भूषणम्।

4. ਹੇਠ ਲਿਖੀਆਂ ਧਾਤੂਆਂ ਨਾਲ ਬ੍ਰੈਕਟ ਵਿੱਚ ਦਿੱਤੇ ਪ੍ਰਤੇ ਲਗਾ ਕੇ ਵਾਂਕਾਂ ਵਿੱਚ ਪ੍ਰਯੋਗ ਕਰੋ—
निम्नलिखित धातुओं से कोष्ठक में निर्दिष्ट प्रत्यय लगाकर शब्द बनाएं और उनका वाक्यों में प्रयोग करें—

आ+भृ	(ल्युट्)
शक्	(यत्)
पा	(ल्युट्)
प्राप्	(यत्)
कृष्	(ल्युट्)

5. ਪ੍ਰਕਿਰਤੀ ਪ੍ਰਤੇ ਨੂੰ ਵੱਖ ਵੱਖ ਕਰੋ—
प्रकृति-प्रत्यय-विभाजन करें—
करणम्, नेयम्, भ्रमणम्, जन्यम्, दूषणम्, लभ्यम्।

6. ਧਾਤੂ ਨਾਲ ਯੋਗ ਹੋਣ ਦੀ ਬਾਅਦ ਲਯੁਟ ਅਤੇ ਯੱਤ ਪ੍ਰਤੇਆਂ ਦਾ ਕੀ ਬਾਕੀ ਬਚਦਾ ਹੈ, ਉਦਾਹਰਣ ਦੇ ਕੇ ਦੱਸੋ।
धातु में योग होने के पश्चात् ल्युट् तथा यत् प्रत्यय का क्या अवशेष रहता है, सोदाहरण बताएँ।

7. ਸਹੀ ਸ਼ਬਦ ਤੇ ਠੀਕ (✓) ਦਾ ਨਿਸ਼ਾਨ ਲਗਾਓ—
उपयुक्त शब्द पर सही (✓) का चिह्न लगायें—

सृ + ल्युट्	=	(सरणम् / सारणम्)
शप् + यत्	=	(शाप्यम् / शप्यम्)
अव–दा + ल्युट्	=	(अवदाणम्/अवदानम्)
यम् + यत्	=	(याम्यम् / यम्यम्)
परि–मा + ल्युट्	=	(परिमाणम्/परिमानम्)

8. 'ਕ' ਕਾਲਮ ਵਿੱਚ ਦਿੱਤੇ ਸ਼ਬਦਾਂ ਨੂੰ 'ਖ' ਕਾਲਮ ਵਿੱਚ ਦਿੱਤੇ ਸਹੀ ਪ੍ਰਤੇਆਂ ਨਾਲ ਜੋੜੋ—

'क' स्तम्भ में प्रदत्त शब्द को 'ख' स्तम्भ में प्रदत्त उपयुक्त प्रत्यय के साथ जोड़िये—

क	ख
गत्वा	ण्वुल्
हारकः	ल्युट्
स्मरणम्	क्त्वा
दाता	यत्
धन्यः	तृच्
पेयम्	यत्

9. ਆਪਣੀ ਭਾਸ਼ਾ ਵਿੱਚ ਅਨੁਵਾਦ ਕਰੋ—

अपनी मातृभाषा में अनुवाद करें—

अस्माकं भारतवर्षे शासनं बहुभिः शासकैः कृतम् ।

सीताम् अन्विषन् रामः पथि तस्या आभूषणानि प्राप्तवान् ।

सत्संगत्या दुर्जनानां दूषणं दूरीभवति ।

विद्यारूपं धनं सुखलभ्यं न भवति ।

संसारेऽस्मिन् न कोऽपि जीवो वध्यो भवति ।

10. ਸੰਸਕ੍ਰਿਤ ਵਿੱਚ ਅਨੁਵਾਦ ਕਰੋ—

ਔਰਤਾਂ ਦਾ ਗਹਿਣਾ ਸ਼ਰਮ ਹੈ ।

ਬੁਰੇ ਲੋਕਾਂ ਦਾ ਵਰਤਾਉ ਸਹਿਨ ਜੋਗ ਨਹੀਂ ਹੁੰਦਾ ਹੈ ।

ਇਹ ਕੰਮ ਇਕ ਮਹੀਨੇ ਵਿੱਚ ਕਰਨ ਜੋਗ ਹੈ ।

ਭਗਵਾਨ ਸਾਰੇ ਸੰਸਾਰ ਦਾ ਪਾਲਣ
ਕਰਦਾ ਹੈ।

ਮੇਰੀ ਨਜ਼ਰ ਵਿੱਚ ਇਹ ਰਸਤਾ ਜਾਣ
ਜੋਗ ਨਹੀਂ ਹੈ।

संस्कृत में अनुवाद करें—

स्त्रियों का भूषण लज्जा है।

दुष्ट जनों का व्यवहार सहने योग्य
नहीं होता है।

यह कार्य एक मास में करणीय है।

ईश्वर पूरे विश्व का पालन
करता है।

मेरी दृष्टि से यह मार्ग जाने योग्य
नहीं है।

हस्तस्य भूषणं दानं, सत्यं कण्ठस्य भूषणम्।
श्रोत्रस्य भूषणं शास्त्रं, भूषणैः किं प्रयोजनम्?

देयं भोः! अधने धनं सुकृतिभिः नो संचितं सर्वदा।
श्रीकर्णस्य बलेश्च विक्रमपतेरद्यापि कीर्तिः स्थिता॥

षष्टितमः पाठः

ਵਾਚ-ਕਰਤਰੀ ਵਾਚ, ਕਰਮਵਾਚ ਅਤੇ ਭਾਵਵਾਚ ।

वाच्य—कर्तृवाच्य, कर्मवाच्य तथा भाववाच्य ।

अल्पाक्षरां रमणीयां च वाचं यः कथयति निश्चितं सः बुद्धिमान् ।

अगच्छन् वैनतेयोऽपि पदमेकमपि गन्तुं न शक्नोति ।

यथा पुरुषाणां ज्ञानमन्तरा समुन्नतिः दुर्लभा तथैव स्त्रीणामपि ।

जीवने कणशः क्षणशश्चैव विद्यामर्थञ्च चिन्तयेत ।

अनासाद्य वैदुष्यं स्त्रीभिः स्वीयं उत्तरदायित्वं सम्यक् नैव वोढुं शक्यते ।

येन स्वपुत्राः न पाठिताः, सा माता वैरिणी पिता च शत्रुः ।

को न जानाति यत् तिलकगान्धिप्रभृतिभिः देशभक्तैः स्वमातृभूमिः स्वतन्त्रीकृता ।

संसर्गजाः दोषगुणाः भवन्ति, अत एव अस्माभिः सत्संगतिः कार्या ।

भूलोके परमेश्वरेण समस्तमपि भूतजातं उद्योगनिरतं निर्मितम् ।

अस्माभिः अहिंसायाः पालनं मनसा, वाचा, कर्मणा च कर्त्तव्यम् ।

सर्वैः अपि भारतीयैः स्वदेशस्य उन्नत्यै संलग्नैः भवितव्यम् ।

अनुद्योगः मानवस्य बलीयान् रिपुः, अतोऽस्माभिः उद्योगपरैः भवितव्यम् ।

उत्तमस्वास्थ्यलाभाय अस्माभिः हसितव्यम् ।

छात्रैः अध्ययनाय प्रातः शीघ्रम् उत्थातव्यम् ।

परीक्षानन्तरम् अद्य चिन्तारहितेन मया सुखेन सुप्यते ।

ਸ਼ਬਦਕੋਸ਼ (शब्दकोशः)—

अल्पाक्षर	कम शब्द	ਘੱਟ ਸ਼ਬਦ
वैनतेय	गरुड़	ਗਰੁੜ
अन्तरा	बिना	ਬਗੈਰ
कणशः	प्रत्येक कण	ਹਰੇਕ ਕਨ
क्षणशः	प्रत्येक क्षण	ਹਰੇਕ ਪਲ
अनासाद्य	न प्राप्त करके	ਪ੍ਰਾਪਤੀ ਤੋਂ ਬਗੈਰ
वोढुं (वह्–तुमुन्)	वहन करना	ਸਹਿਨ ਕਰਨਾ
संसर्गज	संसर्ग से उत्पन्न	ਸੰਗਤੀ ਤੋਂ ਪੈਦਾ ਹੋਇਆ
भूतजातम्	समस्त प्राणी	ਸਾਰੇ ਲੋਕ

ਨਿਰਦੇਸ਼ (निर्देशः)—

(ਸਤਾਰ੍ਹਵੇਂ ਪਾਠ ਵਿੱਚ ਵਿਸਤਾਰ ਨਾਲ ਤਿੰਨਾਂ ਵਾਚਾਂ ਦੀ ਜਾਣਕਾਰੀ ਦਿੱਤੀ ਗਈ ਹੈ)

(सप्तदश पाठ में तीनों वाच्यों के विषय में विस्तृत जानकारी दी गई है।)

1. ਕਰਮਵਾਚ ਅਤੇ ਭਾਵਵਾਚ ਵਿੱਚ ਲਟ, ਲੋਟ, ਲਙ ਅਤੇ ਵਿਧਿ ਲਿੰਙ ਵਿੱਚ ਧਾਤੂ ਅਤੇ ਪ੍ਰਤੇ ਦੇ ਦਰਮਿਆਨ 'ਯ' ਜੋੜ ਦਿੱਤਾ ਜਾਂਦਾ ਹੈ। ਲਰਿਟ ਲਕਾਰ ਵਿੱਚ 'ਯ' ਨਹੀਂ ਜੋੜਿਆ ਜਾਂਦਾ ਹੈ।
कर्मवाच्य और भाववाच्य में लट्, लोट्, लङ् तथा विधिलिङ् में धातु और प्रत्यय के बीच में 'य' जोड़ दिया जाता है। लृट् लकार में 'य' नहीं जोड़ा जाता है।

2. ਕਰਮਵਾਚ ਅਤੇ ਭਾਵਵਾਚ ਵਿੱਚ ਧਾਤੂ ਦੇ ਰੂਪ ਹਮੇਸ਼ਾ ਆਤਮਨੇ ਪਦ ਵਿੱਚ ਚਲਦੇ ਹਨ। ਜਿਵੇਂ—

कर्मवाच्य तथा भाववाच्य में धातु का रूप सदा आत्मने पद में चलता है। जैसे—

गम् + य + ते = गम्यते।
हस् + य + ते = हस्यते।
खाद् + य + ते = खाद्यते।
भू + य + ते = भूयते।

3. ਭਾਵਵਾਚ ਹਮੇਸ਼ਾ ਅਕਰਮਕ ਧਾਤੂ ਵਿੱਚ ਹੁੰਦਾ ਹੈ।
भाववाच्य सदा अकर्मक धातु में ही होता है।

ਵਿਆਕਰਣ (व्याकरणम्)—

ਵਾਚ ਬਦਲਣਾ—

ਕਰਤਰੀਵਾਚ ਦੀ ਕ੍ਰਿਆ ਜੇਕਰ ਸਕਰਮਕ ਹੋਵੇ ਤਾਂ ਕਰਮਵਾਚ, ਜੇਕਰ ਅਕਰਮਕ ਹੋਵੇ ਤਾਂ ਭਾਵਵਾਚ ਵਿੱਚ ਬਦਲੀ ਜਾਂਦੀ ਹੈ। ਇਸੇ ਤਰ੍ਹਾਂ ਕਰਮਵਾਚ ਅਤੇ ਭਾਵਵਾਚ ਦੀਆਂ ਕ੍ਰਿਆਂਵਾਂ ਕਰਤਰੀਵਾਚ ਵਿੱਚ ਕਦਲੀਆਂ ਜਾਂਦੀਆਂ ਹਨ। ਜਿਵੇਂ—

ਕਰਤਰੀਵਾਚ ਤੋਂ ਕਰਮਵਾਚ ਵਿੱਚ ਬਦਲਣਾ—

ਬਾਂਦਰ ਫਲ ਖਾਂਦਾ ਹੈ।
ਬਾਂਦਰ ਵੱਲੋਂ ਫਲ ਖਾਇਆ ਜਾਂਦਾ ਹੈ।

ਕਰਤਰੀਵਾਚ ਤੋਂ ਭਾਵਵਾਚ ਵਿੱਚ ਬਦਲਣਾ—

ਉਹ ਸੌਂਦਾ ਹੈ।
ਉਸਕੇ ਦੁਆਰਾ ਸੁੱਤਾ ਜਾਂਦਾ ਹੈ।

ਕਰਮਵਾਚ ਤੋਂ ਕਰਤਰੀਵਾਚ ਵਿੱਚ ਬਦਲਣਾ—

ਉਸਦੇ ਦੁਆਰਾ ਗਾਂਵ ਜਾਇਆ ਜਾਂਦਾ ਹੈ।
ਉਹ ਗਾਂਵ੍ਹ ਜਾਂਦਾ ਹੈ।

वाच्य-परिवर्त्तन—

कर्तृवाच्य की क्रिया यदि सकर्मक हो तो कर्मवाच्य में, और यदि अकर्मक हो, तो भाववाच्च में बदली जाती है। इसी प्रकार कर्म तथा भाववाच्य की क्रियायें कर्तृवाच्य में वदलो जाती हैं। जैसे—

कर्तृवाच्य से कर्मवाच्य में परिवर्त्तन—

कर्तृ० वा०—वानरः फलं खादति (वानर फल खाता है)।
कर्म० वा०—वानरेण फलं खाद्यते (वानर के द्वारा फल खाया जाता है)।

कर्तृवाच्य से भाववाच्य में परिवर्त्तन

कर्तृ० वा०—सः स्वपिति (वह सोता है)।
भाव० वा०—तेन सुप्यते (उसके द्वारा सोया जाता है)।

कर्मवाच्य से कर्तृवाच्य में परिवर्त्तन—

कर्म० वा०—तेन ग्रामः गम्यते (उसके द्वारा गाँव जाया जाता है)।
कर्तृ० वा०—सः ग्रामं गच्छति (वह जाता है)।

ਅਭਿਆਸ (अभ्यासः)—

1. ਹੇਠ ਲਿਖੇ ਵਾਕਾਂ ਦਾ ਵਾਚ ਦੱਸੋ—
निम्नलिखित वाक्यों का वाच्य बताएँ—

अस्माभिः वेदाः पठनीयाः।
पुत्रः पितरं प्रणमेत्।
बालकाः उद्याने क्रीडन्ति।
राजा दरिद्रेभ्यः धनं ददाति।
युष्माभिः गुरवः पूजनीयाः।
प्रसन्नचित्तेन शिशुना हस्यते।

2. ਹੇਠ ਲਿਖੇ ਵਾਕਾਂ ਨੂੰ ਕਰਮਵਾਚ ਵਿੱਚ ਬਦਲੋ—
निम्नलिखित वाक्यों को कर्मवाच्य में वदलें—

शिशुः हस्ताभ्यां चन्द्रम् आह्वयति ।
सूर्यषष्ठ्यां जनाः अस्ताचलं गच्छन्तं सूर्यं पूजयन्ति ।
श्यामः भ्रातरं पत्रं लिखति ।
वृक्षे उपविष्टाः पक्षिणः कूजन्ति ।
वयं कालिपूजां द्रष्टुं कलकत्तानगरं गमिष्यामः ।

3. ਹੇਠ ਲਿਖੇ ਵਾਕਾਂ ਨੂੰ ਕਰਤਰੀ ਵਾਚ ਵਿੱਚ ਬਦਲੋ—
निम्नलिखित वाक्यों को कर्तृवाच्य में वदलें—

क्लान्तैः पथिकैः सुप्यते ।
हरिणा नक्राद् गजः त्रातः ।
असहायेन शिशुना रुद्यते ।
विजेतृप्रतिभागिभिः पुरस्काराणि गृह्यन्ते ।
वैदेशिकैः पर्यटकैः ताजमहलः प्रशंसितः ।

4. ਹੇਠ ਲਿਖੇ ਵਾਕਾਂ ਨੂੰ ਭਾਵਵਾਚ ਵਿੱਚ ਬਦਲੋ—
निम्नलिखित वाक्यों को भाववाच्य में वदलें—

किमर्थं हरिः हसति ?
वयम् अद्य गृहे तिष्ठेम ।
कोऽत्र स्वपिति ?
अतिथयः अतिथि-गृहे तिष्ठन्ति ।
पुत्रकष्टं दृष्ट्वा माता रोदिति ।

5. ਸ਼ੁੱਧ ਕਰੋ—
संशोधन करें—

अस्माभिः चन्द्रः पश्यति ।

बालकैः ग्रामः गच्छति ।

गुरुणा छात्राः उपदिशति ।

पिता पुत्रं पृच्छयते ।

भक्तैः देवः पूजयन्ति ।

6. ਵਾਚ ਬਦਲੋ—
वाच्य में परिवर्त्तन करें—

कुम्भकारः घटं करोति ।

चक्रवर्त्ती राजा शत्रून् जयति ।

कुसङ्गः सर्वैः परिहर्तव्यः ।

राज्ञा अमात्यः पृष्टः ।

ईषत् हसति रथस्थः कृष्णः ।

7. ਭਾਵਵਾਚ ਅਤੇ ਕਰਮਵਾਚ ਵਿੱਚ ਕੀ ਫਰਕ ਹੈ ? ਦੱਸੋ ।
भाववाच्य और कर्मवाच्य में क्या भेद है ? बताएँ ।

8. 'ਕ' ਕਾਲਮ ਵਿੱਚ ਦਿੱਤੇ ਵਾਕਾਂ ਨੂੰ 'ਖ' ਕਾਲਮ ਵਿੱਚ ਦੱਸੇ ਸਹੀ ਵਾਕ ਨਾਲ ਜੋੜੋ—
'क' स्तम्भ में प्रदत्त वाक्यों को 'ख' स्तम्भ में प्रदर्शित वाच्य के साथ जोड़ें—

क	ख
त्वया विश्रामः कार्यः	भाव
ऋषिः नद्यां स्नाति	कर्म

	क	ख
सैन्यैः विजयो लब्धः		कर्तृ
बुभुक्षितेन बालकेन रुद्यते		कर्म
धनिकः भिक्षुकाय धनम् अददात्		भाव

9. ਆਪਣੀ ਭਾਸ਼ਾ ਵਿੱਚ ਅਨੁਵਾਦ ਕਰੋ—

अपनी भाषा में अनुवाद करें—

तृषार्त्तेन चातकेन मेघात् जलं याच्यते ।

माघसप्तम्यां प्रातः कोणार्कसमीपस्थे चन्द्रभागानद्याः तटे भक्ताः उदीयमानं सूर्यं पश्यन्ति ।

भारतस्य बहवः सुपुत्राः मातृभूमेः रक्षायै प्राणान् त्यक्तवन्तः ।

प्रतिद्वारं गत्वा भिक्षुकेन भिक्षा संगृह्यते ।

पञ्चवर्षात् मया अस्मिन् नगरे स्थीयते ।

10. ਸੰਸਕ੍ਰਿਤ ਵਿੱਚ ਅਨੁਵਾਦ ਕਰੋ—

ਚਿਤਰਕੂਟ ਵਿੱਚ ਪ੍ਰਕਿਰਤਕ ਖ਼ੂਬਸੂਰਤੀ ਹੈ ।

ਬ੍ਰਾਹਮਣਾ ਵੱਲੋਂ ਸਾਮਵੇਦ ਗਾਇਆ ਜਾ ਰਿਹਾ ਹੈ ।

ਮਿਹਨਤ ਦਾ ਫਲ ਮਿੱਠਾ ਹੁੰਦਾ ਹੈ ।

ਰਾਮਲੀਲਾ ਮੰਡਪ ਵਿੱਚ ਅਭਿਨੇਤਾਵਾਂ ਵੱਲੋਂ ਰਾਮਾਇਣ ਦਾ ਨਾਟਕ ਖੇਡਿਆ ਜਾ ਰਿਹਾ ਹੈ ।

ਫਿਲਮ ਵਿੱਚ ਮਸਖਰੇ ਅਭਿਨੇਤਾ ਨੂੰ ਵੇਖ ਕੇ ਬੱਚਿਆਂ ਵੱਲੋਂ ਜੋਰ ਨਾਲ ਹੱਸਿਆ ਜਾ ਰਿਹਾ ਹੈ ।

संस्कृत में अनुवाद करें—

चित्रकूट में प्राकृतिक सौन्दर्य दीखता है।

ब्राह्मणों के द्वारा सामवेद गाया जा रहा है।

परिश्रम का फल मीठा होता है।

रामलीला मण्डप में अभिनेताओं के द्वारा रामायण का मञ्चन किया जा रहा है।

चलचित्र में हास्य अभिनेता को देखकर बच्चों के द्वारा जोर से हँसा जा रहा है।

सत्येन रक्ष्यते धर्मो विद्या योगेन रक्ष्यते।
मृजया रक्ष्यते रूपं कुलं वृत्तेन रक्ष्यते।।

मणिर्लुठति पादेषु काचः शिरसा धार्यते।
यथैवास्ते तथैवास्तां काचः काचो मणिर्मणिः ।

एकषष्टितमः पाठः

दॆवचन ।

द्विवचनम् ।

जगतः पितरौ पार्वतीपरमेश्वरौ सर्वेषां वन्दनीयौ ।

श्रीकृष्णार्जुनौ गीतायाः नायकौ स्तः ।

भोः शिष्याः ! गृहं प्रतिनिवृत्य प्रथमं मातापितरौ प्रणमत ।

महात्मागान्धिनः त्रिषु वानरेषु एकः कर्णौ द्वितीयो नेत्रे तृतीयश्च मुखं पिदधाति ।

सीतारामाभ्यां सह लक्ष्मणोऽपि वनं गतवान् ।

महाभारतस्य युद्धे सहायतायै अर्जुनदुर्योधनाभ्याम् उभाभ्यां श्रीकृष्णः प्रार्थितः ।

वालितः स्वरक्षार्थं सुग्रीवः रामलक्ष्मणाभ्यां न्यवेदयत् ।

मातापितृभ्यां जलम् आनेतुं श्रवणकुमारः सरयूनदीमगच्छत् ।

सम्प्रति लतापादपयोः जीर्णानि पत्राणि भूमौ निपतन्ति ।

मन्दिरे वानरात् भीतायाः बालिकायाः हस्ताभ्यां पूजासंभाराः भूमौ विकीर्णाः ।

प्रयागे गंगायमुनयोः मेलनस्थलमेव 'सङ्गम' इति नाम्ना अभिधीयते ।

व्याधः काममोहितयोः क्रौञ्चपक्षिणोः एकम् अवधीत् ।

विभीषणः रावणस्य पादयोः पतित्वा सीतां प्रत्यावर्तयितुं प्रार्थयत् ।

भक्तानां मनसि राधाकृष्णयोः कृते समाना श्रद्धास्ति ।

हे ! रामकृष्णौ ! अस्मान् अस्याः विपदः सद्यः त्रायेथाम् ।

भोः ऋषिपुत्रौ ! अस्मान् सम्पूर्णं रामायणं श्रावयताम् ।

ਸ਼ਬਦਕੋਸ਼ (शब्दकोशः)—

प्रतिनिवृत्य	लौटकर	ਮੁੜ ਕੇ
पि–धा	बन्द करना	ਬੰਦ ਕਰਨਾ
उभौ	दोनों	ਦੋਵੇਂ
संभार	सामग्री	ਸਮੱਗਰੀ
विकीर्ण	बिखरना	ਵਿਖਰਣਾ
क्रौञ्च	जलमुर्गी (एक प्रकार का जल के समीप रहने वाला पक्षी)	ਜਲ ਮੁਰਗੀ
प्रत्यावर्तयितुं	लौटाने के लिये	ਵਾਪਿਸ ਕਰਨ ਲਈ
सद्यः	तुरंत, शीघ्र	ਜਲਦੀ

ਨਿਰਦੇਸ਼ (निर्देशः)—

1. ਇਕ ਬਚਨ ਤੇ ਬਹੁਬਚਨ ਦੇ ਬਾਰੇ ਵਿੱਚ ਹੁਣ ਤਕ ਕਾਫੀ ਜਾਣਕਾਰੀ ਦਿੱਤੀ ਜਾ ਚੁੱਕੀ ਹੈ। ਦੋ ਵਚਨ ਦਾ ਪ੍ਰਯੋਗ ਸਿਰਫ ਸੰਸਕ੍ਰਿਤ ਭਾਸ਼ਾ ਵਿੱਚ ਹੀ ਹੁੰਦਾ ਹੈ।
   एकवचन तथा बहुवचन के विषय में अब तक पर्याप्त जानकारी दी जा चुकी है। द्विवचन का प्रयोग केवल संस्कृत भाषा में ही होता है।

2. ਦੋ ਚੀਜਾਂ ਦੀ ਜਾਣਕਾਰੀ ਕਰਵਾਉਣ ਲਈ ਦੋਵਚਨ ਦਾ ਪ੍ਰਯੋਗ ਹੁੰਦਾ ਹੈ।
   दो वस्तुओं का बोध कराने के लिये द्विवचन का प्रयोग होता है।

3. ਦਵੈ, ਯੁਗਲ, ਮਿਥੁਨ, ਯੁਗ, ਅਤੇ ਦਵੰਦਵ ਵਗੈਰਾ ਸ਼ਬਦ ਦੋ ਸੰਖਿਆ ਦੀ ਜਾਣਕਾਰੀ ਕਰਾਉਂਦੇ ਹਨ। ਇਨ੍ਹਾਂ ਦਾ ਵਾਕ ਵਿੱਚ ਪ੍ਰਯੋਗ ਕਰਨ

ਵੇਲੇ ਕ੍ਰਿਆ ਇੱਕਵਚਨ ਦੀ ਹੀ ਹੁੰਦੀ ਹੈ। ਦਵੇ ਸ਼ਬਦ ਦਾ ਪ੍ਰਯੋਗ ਨਪੁੰਸਕ ਲਿੰਗ ਵਿੱਚ ਹੀ ਹੁੰਦਾ ਹੈ। ਜਿਵੇਂ—'बालकद्वयं गच्छति' (ਦੋ ਬਾਲਕ ਜਾਂਦੇ ਹਨ)।

द्वय, युगल, मिथुन, युग तथा द्वन्द्व आदि शब्द दो संख्या का बोध कराते हैं। इनका वाक्य में प्रयोग करने पर क्रिया एकवचन की ही होती है। 'द्वय' शब्द का प्रयोग नपुंसक लिङ्ग में ही होता है। जैसे—बालकद्वयं गच्छति (दो बालक जाते हैं)।

4. ਵਾਚ ਪਰਿਵਰਤਨ ਕਰਦੇ ਸਮੇਂ ਜੋ ਨਿਯਮ ਇੱਕ ਵਚਨ ਅਤੇ ਬਹੁਵਚਨ ਵਿੱਚ ਹੁੰਦਾ ਹੈ ਉਹੀ ਨਿਯਮ ਦੋ ਵਚਨ ਦੇ ਨਾਲ ਵੀ ਹੁੰਦਾ ਹੈ।
वाच्य-परिवर्तन करते समय, जो नियम एकवचन तथा बहुवचन में होता है, वही नियम द्विवचन के साथ भी होता है।

ਵਿਆਕਰਨ (व्याकरणम्)—

1. ਤਿੰਨਾ ਲਿੰਗਾਂ ਵਿੱਚ ਦੋ ਵਚਨ ਸ਼ਬਦ ਰੂਪ—
तीनों लिङ्गों में द्विवचन का शब्द-रूप—

	बालक—पुं०	लता—स्त्री०	फल—नपुं०
प्र०	बालकौ	लते	फले
द्वि०	,,	,,	,,
तृ०	बालकाभ्याम्	लताभ्याम्	फलाभ्याम्
च०	,,	,,	,,
प०	,,	,,	,,
ष०	बालकयो:	लतयो:	फलयो:
स०	,,	,,	,,
सं०	हे बालकौ !	हे लते !	हे फले !

2. ਦੋ ਵਚਨ ਵਿੱਚ ਧਾਤੂ ਰੂਪ (ਲਟ, ਲੋਟ, ਲਙ ਵਿਧੀ ਲਿੰਙ ਅਤੇ ਲਰਿਟ ਲਕਾਰ)।

द्विवचन में धातुरूप (लट्, लोट्, लङ्, विधिलिङ् तथा लृट् लकार)।

'पठ्' धातु—

	लट्	लोट्	लङ्
प्र० पु०	पठतः	पठताम्	अपठताम्
म० पु०	पठथः	पठतम्	अपठतम्
उ० पु०	पठावः	पठाव	अपठाव

	विधिलिङ्	लृट्
प्र० पु०	पठेताम्	पठिष्यतः
म० पु०	पठेतम्	पठिष्यथः
उ० पु०	पठेव	पठिष्यावः

3. ਦੋ ਵਚਨ ਵਿੱਚ ਆਤਮਨੇਪਦ ਦਾ ਸ਼ਬਦ ਰੂਪ (ਲਟ, ਲੋਟ, ਲਙ, ਵਿਧਿਲਿਙ ਅਤੇ ਲਰਿਟ ਲਕਾਰ ਵਿੱਚ)।

द्विवचन में आत्मनेपदी का शब्दरूप (लट्, लोट्, लङ्, विधिलिङ् तथा लृट् लकार में)।

ਸ਼ੁਭ ਧਾਤੂ (ਸ਼ੋਭਿਤ ਹੋਣਾ)—

'शुभ्' धातु (शोभित होना)—

	लट्	लोट्	लङ्
प्र० पु०	शोभेते	शोभेताम्	अशोभेयाताम्
म० पु०	शोभेथे	शोभेथाम्	अशोभेथाम्
उ० पु०	शोभावहे	शोभावहै	अशोभावहि

	विधिलिङ्	लृट्
प्र० पु०	शोभेयाताम्	शोभिष्येते
म० पु०	शोभेयथाम्	शोभिष्येथे
उ० पु०	शोभेवहि	शोभिष्यावहे

ਅਭਿਆਸ (अभ्यासः)—

1. ਹੇਠ ਲਿਖੇ ਸ਼ਬਦਾਂ ਦਾ ਪਹਿਲੀ ਤੇ ਦੂਜੀ ਵਿਵਕਤੀ ਵਿੱਚ ਦੋ ਵਚਨ ਦਾ ਰੂਪ ਲਿਖੋ—
निम्नलिखित शब्दों का प्रथमा तथा द्वितीया विभक्ति में द्विवचन का रूप लिखें—

हस्त, पाद, भुजा, श्रोत्र, कर्ण।

2. ਹੇਠ ਲਿਖੇ ਦੋ ਵਚਨਾ ਵਾਲੇ ਰੂਪ ਦਾ ਮੂਲ ਸ਼ਬਦ ਅਤੇ ਵਿਵਕਤੀ ਪਛਾਣੋ—
निम्नलिखित द्विवचनान्त रूप का मूलशब्द तथा विभक्ति पहचानें—

नयनयोः, श्रोत्राभ्यां, रामकृष्णौ, प्रिये, लतयोः।

3. ਹੇਠ ਲਿਖੇ ਪਦਾਂ ਵਿੱਚੋਂ ਦੋ ਵਚਨ ਵਾਲੇ ਪਦਾਂ ਨੂੰ ਵੱਖ-ਵੱਖ ਕਰੋ—
निम्नलिखित पदों से द्विवचनान्त पदों को पृथक् करें—

वृक्षाः, पुष्पे, सहोदरयोः, पाणिपादौ,
हतस्य, धवखदिरौ, रामकृष्णौ, नेत्रद्वयस्य।

4. ਹੇਠ ਲਿਖੇ ਬਹੁਵਚਨਾਂ ਵਾਲੇ ਪਦਾਂ ਨੂੰ ਦੋ ਵਚਨ ਵਾਲੇ ਪਦਾਂ ਵਿੱਚ ਬਦਲੋ—
निम्नलिखित वहुवचनान्त पदों को द्विवचनान्त पदों में बदलें—
पितरः, अश्वाः, भ्रातृणां, गजेभ्यः, निशासु।

5. ਜੋਗ ਪਦ ਬਣਾ ਕੇ ਖਾਲੀ ਸਥਾਨ ਭਰੋ—
उचित पद बनाकर रिक्तस्थान भरें—

पित्राज्ञया ··· ··· ··· ··· वनम् अगच्छताम् (रामलक्ष्मण)।
नकुलसहदेवौ माद्रेः ··· ··· ···· आस्ताम् (पुत्र)।
एते उभे मम ··· ··· ··· ··· ··· ··· स्तः (मित्र)।

वनात् प्रतिनिवृत्य रामः मातृणां ... ... अवन्दत् (चरण) ।
द्वयोः ... ... मध्ये अयं कनिष्ठः (भ्रातृ) ।

6. ਸ਼ੁੱਧ ਕਰੋ—
संशोधन करें—

भीमार्जुनौ पाण्डोः पुत्रः आस्ताम् ।
कक्षायाम् उपस्थितेषु छात्रेषु हरीकृष्णौ अपि पठति ।
अस्मिन् वृक्षे द्वौ खगौ उपविष्टा ।
चण्डीगढ़ः हरियाणापंजाबयोः राजधानी स्तः ।
मम द्वौ पुत्रौ अस्ति ।

7. ਹੇਠ ਲਿਖੇ ਸ਼ਬਦਾਂ ਦਾ ਸੰਸਕ੍ਰਿਤ ਵਾਕਾਂ ਵਿੱਚ ਪ੍ਰਯੋਗ ਕਰੋ—
निम्नलिखित शब्दों का संस्कृत वाक्यों में प्रयोग करें—

दम्पती, युग, पितापुत्र, पतिपत्नी,
पुत्रपुत्री, भ्राताभगिनी ।

8. ਹੇਠ ਲਿਖੇ ਪਦਾਂ ਵਿੱਚੋਂ ਸਹੀ ਪਦ ਤੇ ਠੀਕ (✓) ਦਾ ਨਿਸ਼ਾਨ ਲਗਾਓ—
नीचे लिखे पदों में से सही पद पर (✓) चिह्न लगायें—

मातरौ / मातारौ, कमलौ / कमले ।
वृक्षौ / वृक्षे, भ्रात्रोः / भ्रातरोः ।
पदयुगं / पदयुगा, दम्पतिः / दम्पती ।

9. ਆਪਣੀ ਭਾਸ਼ਾ ਵਿੱਚ ਅਨੁਵਾਦ ਕਰੋ—
अपनी भाषा में अनुवाद करें—

भोजनात् पूर्वं हस्तौ पादौ च प्रक्षालयेत् ।
यानदुर्घटनायां तस्य चरणौ नष्टौ ।
अद्य मे उभौ बाहू स्फुरतः इति महदाश्चर्यम् ।

'मोतियाविन्द' इति रोगात् तस्य नेत्रयोः ज्योतिर्गता ।
सत्यपि अर्थाभावे इमौ दम्पती सुखेन जीवन-यापनं कुरुतः ।

10. ਸੰਸਕ੍ਰਿਤ ਵਿੱਚ ਅਨੁਵਾਦ ਕਰੋ—

ਸੀਤਾ ਦੇ ਦੋਨੋਂ ਪੁੱਤਰ ਬਾਲਮੀਕਿ ਦੇ ਆਸ਼ਰਮ ਵਿੱਚ ਥੱਡੇ ਹੋਏ ।
ਜਿਲਾਧੀਸ਼ ਦੀਆਂ ਦੋਨੋਂ ਧੀਆਂ ਮੇਰੇ ਸਕੂਲ ਵਿੱਚ ਪੜ੍ਹਦੀਆਂ ਹਨ ।
ਪੰਜਾਬ ਕੇ ਦੋ ਦੇਸ਼ਭਗਤ ਸ਼ਹੀਦਾਂ ਦੇ ਨਾਂ ਲਿਖੋ ।
ਮੈਂ ਨੂੰ ਇਸ ਸਾਲ ਕਲਿਆਣ ਕੇ ਦੋ ਵਿਸ਼ੇਸ਼ ਅੰਕ ਇਕ ਸਮੇਂ ਨਾਲ ਹੀ ਪ੍ਰਾਪਤ ਹੋਏ ।
ਦੋ ਵਿਅਕਤੀਆਂ ਕੇ ਝਗੜੇ ਵਿੱਚ ਤੀਜੇ ਵਿਅਕਤੀ ਦਾ ਲਾਭ ਹੁੰਦਾ ਹੈ ।

संस्कृत में अनुवाद करें—

सीता के दोनों पुत्र बालमीकि के आश्रम में बड़े हुए ।
जिलाधीश की दोनों लड़कियाँ मेरे स्कूल में पढ़ती हैं ।
पञ्जाब के दो देशभक्त शहीदों के नाम लिखो ।
मुझे इस वर्ष कल्याण के दो विशेषाङ्क एक साथ ही प्राप्त हुये ।
दो व्यक्तियों के विवाद में तीसरे व्यक्ति का लाभ होता है ।

द्वाविमौ पुरुषौ लोके स्वर्गस्योपरि तिष्ठतः ।
प्रभुश्च क्षमया युक्तो दरिद्रश्चैव दानवान् ।।

द्विषष्टितमः पाठः

ਤੱਧਿਤ ਪ੍ਰਤੇ (ਕੁੱਝ ਪ੍ਰਸਿੱਧ ਰੂਪ)।

तद्धित प्रत्यय (कुछ प्रचलित रूप)।

भारतवर्षे अधिकतरजनाः शैवाः, वैष्णवाः शाक्ताश्च भवन्ति।

दैवायत्तं कुले जन्म मदायत्तं च पौरुषम् इति महाकवेर्भासस्य-उक्तिरस्ति।

दाशरथिः श्रीमतः रामचन्द्रस्य नामान्तरमेवास्ति।

महर्षिः व्यासः महारथी कर्णश्च कानीनौ आस्ताम्।

पक्षिराजः वैनतेयः श्रीमन्नारायणस्य वाहनतया शोभते।

विशाखया नक्षत्रेण युक्तः मासः 'वैशाख' इति नाम्नाऽभिधीयते।

अङ्गुष्ठमात्रं पुरुषं शरीराद् यमः बलाद् आकर्षति।

अस्मिन् प्रेक्षागृहे कतिसंख्यकाः जनाः नाटकं पश्यन्ति?

श्रीरामः सीतायाः हिरण्मयीं मूर्त्तिं निर्माय यज्ञम् अकरोत्।

नरत्वं दुर्लभं लोके विद्या तत्र सुदुर्लभा।

भवतः सुजनता दिक्षु विदिक्षु च स्वतः प्रसरति।

गुणवन्तः नराः सर्वत्र आदरं सम्मानञ्च लभन्ते।

नदीवति देशे बहुनि सुसस्यानि भवन्ति।

पञ्जाबप्रदेशस्य कृषकाः अन्यप्रदेशस्य कृषकेभ्यः धनिनः भवन्ति।

तारकितः आकाशः शरच्चन्द्रमसा अतिशयं राजते।

चक्रव्यूहे अभिमन्युः कौरवयोद्धृभिः चतुः पार्श्वतः आक्रान्तः आसीत्।

यदा यदा हि धर्मस्य ग्लानिर्भवति, तदा अहम् आत्मानं सृजामि।

ਸ਼ਬਦਕੋਸ਼ (शब्दकोशः)—

मदायत्त	स्वाधीन	ਆਪਣੇ ਅਧੀਨ (ਖੁਦ ਕਰਨ ਜੋਗ)
नामान्तर	दूसरा नाम	ਦੂਜਾ ਨਾਂ
कानीन	कन्या का पुत्र	ਕੁੜੀ ਦਾ ਪੁੱਤਰ
अङ्गुष्ठमात्र	अंगूठे के बराबर	ਅੰਗੂਠੇ ਜਿੰਨਾ
प्र–सृ	फैलना	ਫੈਲਣਾ
तारकित	तारों से युक्त	ਤਾਰਿਆਂ ਨਾਲ ਜੜਿਆ ਹੋਇਆ
राजृ + तिप्–ते	शोभित होना	ਚੰਗਾ ਲੱਗਣਾ
आ–क्रम्	आक्रमण करना	ਹਮਲਾ ਕਰਨਾ
सृज्	उत्पन्न करना	ਪੈਦਾ ਕਰਨਾ

ਨਿਰਦੇਸ਼ (निर्देशः)—

1. ਸੰਗਿਆ, ਸਰਵਨਾਮ, ਵਿਸ਼ੇਸ਼ਣ ਆਦਿ ਪ੍ਰਾਤਿਪਦਿਕਾਂ ਵਿੱਚ ਜਿਹੜਾ ਪ੍ਰਤੇ ਜੋੜਿਆ ਜਾਂਦਾ ਹੈ ਉਸਨੂੰ ਤੱਧਿਤ ਪ੍ਰਤੇ ਕਹਿੰਦੇ ਹਨ। ਉਸ ਤੋਂ ਬਣੇ ਰੂਪ ਨੂੰ ਤੱਧਿਤ ਆਖਿਆ ਜਾਂਦਾ ਹੈ।

   संज्ञा, सर्वनाम आदि प्रातिपदिकों में जो प्रत्यय जोड़ा जाता है उसे तद्धित प्रत्यय कहते हैं, और निष्पन्न शब्द तद्धित कहलाता है।

2. ਇਨ੍ਹਾਂ ਪ੍ਰਤੇਆਂ ਦਾ ਪ੍ਰਯੋਗ ਅਨੇਕਾਂ ਅਰਥਾਂ ਵਿੱਚ ਹੁੰਦਾ ਹੈ। ਕਦੇ-ਕਦੇ ਇਕ ਹੀ ਪ੍ਰਤੇ ਦਾ ਪ੍ਰਯੋਗ ਅਲੱਗ-ਅਲੱਗ ਅਰਥਾਂ ਨੂੰ ਦੱਸਿਆਂ ਜਾਂਦਾ ਹੈ। ਜਿਵੇਂ—'अण्' ਇਸਦਾ ਪ੍ਰਯੋਗ ਔਲਾਦ ਦੇ ਅਰਥ, ਸੰਬੰਧ ਦੇ ਅਰਥ, ਵਿਕਾਰ ਦੇ ਅਰਥ ਅਤੇ ਹੋਰ ਕਈ ਅਰਥਾਂ ਵਿੱਚ ਦੇਖਣ ਨੂੰ ਮਿਲਦਾ ਹੈ।

   इन प्रत्ययों का प्रयोग अनेक अर्थों में होता है। कभी-कभी एक ही प्रत्यय का प्रयोग विभिन्न अर्थों में देखा जाता है। जैसे—'अण्'। इसका प्रयोग अपत्यार्थ, सम्बन्धार्थ, विकारार्थ तथा अन्य अर्थों में देखने को मिलता है।

3. ਅਰਥ ਦੇ ਹਿਸਾਬ ਨਾਲ ਤੱਧਿਤ ਪ੍ਰਤੇਆਂ ਦੀ ਮੋਟੀ ਵੰਡ ਹੇਠ ਲਿਖੇ ਅਨੁਸਾਰ ਹੋ ਸਕਦੀ ਹੈ—

अर्थ की दृष्टि से तद्धित-प्रत्ययों का एक स्थूल वर्गीकरण किया जा सकता है—

(ਕ) ਔਲਾਦ ਦੇ ਅਰਖ—
अपत्यार्थ—अण्, इञ्, ण्य, ढक् आदि ।

(ਖ) ਮਤਵਰਥ—
मत्वर्थ—मतुप्, इन्, इतच् आदि ।

(ਗ) ਭਾਵਾਰਥ ਅਤੇ ਕਰਮਾਰਥ—
भावार्थ तथा कर्मार्थ—त्व, तल्, इमनिच्, ष्यञ् आदि ।

(ਘ) ਸਮੂਹ ਦੇ ਅਰਥ ਵਿੱਚ—
समूहार्थ—अण्, तल् आदि ।

(ਙ) ਸੰਬੰਧ ਅਤੇ ਵਿਕਾਰ ਦੇ ਅਰਥ ਵਿੱਚ—
सम्बन्धार्थ व विकारार्थ—अण्, ठक्, अञ्, मय आदि ।

(ਚ) ਪਰਿਮਾਣ ਅਤੇ ਸੰਖਿਆ ਦੇ ਅਰਥ ਵਿੱਚ—
परिमाणार्थ तथा संख्यार्थ—मात्रच्, डति आदि ।

(ਛ) ਹਿਤ ਦੇ ਅਰਥ ਵਿੱਚ—
हितार्थ—छ, यत् आदि ।

(ਜ) ਕ੍ਰਿਆ ਵਿਸ਼ੇਸ਼ਣ ਵਿੱਚ—
क्रियाविशेषणार्थ—त्रसिल्, त्रल्, दा, दानीम्, थाल्, कृत्वसुच् आदि ।

(ਝ) ਸ਼ੇਸ਼ਿਕ—
शैषिक—अण्, खञ्, यत्, ठञ्, देशीयर्, क्विप् आदि ।

4. ਅਗਰ ਕਿਸੇ ਪ੍ਰਤੇ ਦੇ ਆਖੀਰ ਵਿੱਚ 'ਞ' 'ਣ' ਜਾ 'ਕ' ਹੋਵੇ ਤਾਂ ਉਸ ਸ਼ਬਦ ਦੇ ਪਹਿਲੇ ਸਵਰ ਨੂੰ ਵਰਿਧਿ ਹੋ ਜਾਵੇਗੀ। ਜਿਵੇਂ—
यदि किसी प्रत्यय के अन्त में में 'ञ्', 'ण्' या 'क्' हो तो उस शब्द के प्रथम स्वर की वृद्धि होगी। यथा—शैव = शिव + अण्।

5. ਤੱਧਿਤ ਪ੍ਰਤੇਆਂ ਵਿੱਚ 'ਠ' ਨੂੰ ਇਕ, 'ਛ' ਨੂੰ ਈਜ 'ਖ' ਨੂੰ ਈਨ, ਅਤੇ, ਢ ਨੂੰ ਏਜ ਆਦੇਸ਼ ਹੋ ਜਾਂਦਾ ਹੈ।
तद्धित प्रत्ययों में 'ठ' का इक 'छ' का ईय, 'ख' का ईन तथा 'ढ' का एय आदेश होता है।

देह + ठ < इक = दैहिकः,
पारावार + ख < ईन = पारावारीणः,
बङ्ग + छ < ईय = वङ्गीयः।
गङ्गा + ढ < एय = गाङ्गेयः।

ਅਭਿਆਸ (अभ्यासः)—

1. ਹੇਠ ਲਿਖੇ ਤੱਧਿਤ ਪਦਾਂ ਦਾ ਪ੍ਰਤੇ ਲਿਖੋ—
निम्नलिखित पदों का प्रत्यय निर्देश करें—
दाक्षिः, भागिनेयः, गोत्वम्, बन्धुता, दैवः।

2. ਹੇਠ ਲਿਖੇ ਪ੍ਰਤੇਆਂ ਨੂੰ ਸ਼ਬਦਾਂ ਨਾਲ ਜੋੜ ਕੇ ਤੱਧਿਤ ਪਦ ਬਣਾਓ—
निम्नलिखित प्रत्ययों को प्रातिपादिकों से जोड़कर तद्धित-पद बनायें—
डति, तसिल्, थाल्, अण्, इतच्, मय।

3. ਹੇਠ ਲਿਖੇ ਤੱਧਿਤ ਪਦਾਂ ਦਾ ਅਰਥ ਦੱਸੋ—
निम्नलिखित तद्धित-पदों का अर्थ-निर्देश करें—
आत्रेयः, पिपासितः, जनता, पैप्पलः, तदानीम्।

4. ਹੇਠ ਲਿਖੇ ਤੱਧਿਤ ਪਦਾਂ ਨੂੰ ਵਾਕਾਂ ਵਿੱਚ ਪ੍ਰਯੋਗ ਕਰੋ—

निम्नलिखित तद्धित-पदों को वाक्यों में प्रयोग करें—

पञ्चकृत्वः, चाक्षुषम्, एकदा, सुवर्णमयम्, गुणवान् ।

5. ਹੇਠ ਲਿਖੇ ਵਿਗ੍ਰਹਾਂ ਨਾਲ ਕੀ-ਕੀ ਤੱਧਿਤ ਰੂਪ ਬਣਦਾ ਹੈ ? ਲਿਖੋ—

निम्नलिखित विग्रहों से क्या-क्या तद्धित-रूप बनता है ? लिखें—

दितेः अपत्यम् =

गावः अस्य सन्तीति =

गजानां समूहः =

श्रवणे यः श्रूयते =

मृदः, विकारः अवयवो वा =

6. ਹੇਠ ਲਿਖੇ ਤੱਧਿਤਾਂ ਦਾ ਵਿਗ੍ਰਹਿ ਦੱਸੋ—

निम्नलिखित तद्धितों का विग्रह बतायें—

पाशुपतम्, ग्रामता, शिशुत्वम्, विद्यावान्, काषायम् ।

7. ਸਹੀ ਤੱਧਿਤ ਪਦਾਂ ਤੇ ਠੀਕ (✓) ਦਾ ਨਿਸ਼ਾਨ ਲਗਾਓ—

शुद्ध तद्धित-पद पर सही (✓) का चिह्न लगायें—

गोमान् / गोवान्, वार्षिकः / वर्षिकः ।

दन्त्यः / दान्त्यः, मामकीनः / ममकीनः ।

भस्मीभवति/भस्माभवति, पायसम् / पयसम् ।

8. 'ਕ' ਕਾਲਮ ਵਿੱਚ ਦਿੱਤੇ ਤੱਧਿਤ ਪਦਾਂ ਨੂੰ 'ਖ' ਕਾਲਮ ਵਿੱਚ ਸਹੀ ਪ੍ਰਤੇਆਂ ਨਾਲ ਜੋੜੋ—

8. 'क' स्तम्भ में प्रदत्त तद्धित-पदों को 'ख' स्तम्भोक्त उपयुक्त प्रत्ययों के साथ जोड़ें—

क	ख
इदानीम्	त्र
पुत्रकल्पः	इतच्
बहुत्र	अण्
पुष्पितम्	कल्पप्
बाकम्	दानीम्

9. ਆਪਣੀ ਭਾਸ਼ਾ ਵਿੱਚ ਅਨੁਵਾਦ ਕਰੋ—

अपनी भाषा में अनुवाद करें—

सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामयाः।
उत्कलप्रदेशस्य शैवाः, वैष्णवाः, शाक्ताश्च सूर्योपासकाः भवन्ति।
गुरवः पितृवत् पूज्याः भवन्ति।
पार्वतीः हिमालयस्य पुत्री आसीत्।
ये धर्मं चरन्ति ते धार्मिकाः इति कथ्यन्ते।

10. ਸੰਸਕ੍ਰਿਤ ਵਿੱਚ ਅਨੁਵਾਦ ਕਰੋ—

ਗੰਗਾ ਦੇ ਪੁੱਤਰ ਨੇ ਕੁੰਤੀ ਦੇ ਪੁੱਤਰ ਨਾਲ ਯੁੱਧ ਕੀਤਾ।
ਜਿਸਕੇ ਕੋਲ ਧਨ ਹੈ ਉਸ ਤੋਂ ਸਭ ਡਰਦੇ ਹਨ।
ਆਮਤੋਰ ਤੇ ਪੇਂਡੂ ਆਦਮੀ ਸਿੱਧੇ ਸੁਭਾਵਾ ਦੇ ਹੁੰਦੇ ਹਨ।
ਦੂਜਿਆਂ ਦੀ ਵਹੁਟੀ ਮਾਂ ਬਰਾਬਰ ਹੁੰਦੀ ਹੈ।
ਨਿਆਯਸ਼ਾਸਤਰ ਪੜ੍ਹਨ ਵਾਲਿਆਂ ਨੂੰ ਨੈਯਾਯਿਕ ਕਿਹਾ ਜਾਂਦਾਂ ਹੈ।

संस्कृत में अनुवाद करें—

गङ्गा के पुत्र ने कुन्ती के पुत्र के साथ युद्ध किया।

जिसके पास धन है उससे सभी डरते हैं।

प्रायः ग्रामीण सरल स्वभाव के होते हैं।

दूसरों की पत्नी माँ के समान होती है।

न्यायशास्त्र पढ़नेवालों को नैयायिक कहा जाता है।

यं शैवाः समुपासते शिव इति ब्रह्मेति वेदान्तिनो,
बौद्धा बुद्ध इति प्रमाणपटवः कर्तेति नैयायिकाः।
अर्हन्नित्यथ जैनशासनरताः कर्मेति मीमांसकाः,
सोऽयं वो विदधातु वाञ्छितफलं त्रैलोक्यनाथो हरिः।।

परिशिष्ट

श्लोकानुक्रमणिका

प्रथमो भागः

पाठ संख्या	सुभाषितपद्यानि	पृ० सं०
8	सा भार्या या प्रियं ब्रूते, सः पुत्रो यत्र निर्वृतिः । तन्मित्रं यत्र विश्वासः, स देशो यत्र जीव्यते ।।	52
9	नैनं छिन्दन्ति शस्त्राणि, नैनं दहति पावकः । न चैनं क्लेदयन्त्यापो, न शोषयति मारुतः ।।	58
10	आचारः कुलमाख्याति, देशमाख्याति भाषणम् । सम्भ्रमः स्नेहमाख्याति, वपुराख्याति भोजनम् ।।	64
11	अकृत्वा परसन्तापम्, अगत्वा खलमन्दिरम् । अनुल्लंघ्य सतां मार्गं, यत् स्वल्पमपि तद् बहु ।।	68
12	उपकर्तुं प्रियं वक्तुं, कर्तुं स्नेहमकृत्रिमम् । सज्जनानां स्वभावोऽयं, केनेन्दुः शिशिरीकृतः ।।	72
13	प्राप्य चलानधिकारान्, शत्रुषु मित्रेषु चाथ विद्वत्सु । नापकृतं नोपकृतं, न सत्कृतं किं कृतं तेन ।।	78
14	इदमेव हि पाण्डित्यं, इयमेव विदग्धता । अयमेव परो धर्मो, यदायात् नाधिको व्ययः ।।	83
15	अपठत् योऽखिलाः विद्याः, कलाः सर्वा अशिक्षत । अजानात् सकलं वेद्यं, स वै योग्यतमो नरः ।।	88
16	काव्यशास्त्रविनोदेन कालो गच्छति धीमताम् । व्यसनेन च मूर्खाणां, निद्रया कलहेन वा ।।	95
17	जिता सभा वस्त्रवता, मिष्टाशा गोमता जिता । अध्वा जितो यानवता, सर्वं शीलवता जितम् ।।	103
18	भुक्तवान् पीतवान् कामं, सानन्दं नीतवान् वयः । लब्धवान् नो यशः शुभ्रं, तदा किं कृतवान् नरः ।।	108
19	विषादप्यमृतं ग्राह्यम्, अमेध्यादपि काञ्चनम् । नीचादप्युत्तमा विद्या, स्त्रीरत्नं दुष्कुलादपि ।।	114

पाठ संख्या	सुभाषितपद्यानि	पृ० सं०
20	नरस्याभरणं रूपं रूपस्याभरणं गुणः । गुणस्याभरणं ज्ञानं, ज्ञानस्याभरणं क्षमा ।। स्वयं महेशः श्वसुरो नगेशः, सखा धनेशस्तनयो गणेशः । तथापि भिक्षाटनमेव शम्भोः, बलीयसी केवलमीश्वरेच्छा ।।	120
21	परोपदेशे पाण्डित्यं, सर्वेषां सुकरं नृणाम । धर्मे स्वीयमनुष्ठानं, कस्यचित्तु महात्मनः ।।	126
22	निन्दन्तु नीतिनिपुणाः यदि वा स्तुवन्तु, लक्ष्मीः समाविशतु गच्छतु वा यथेच्छम् । अद्येव वा मरणमस्तु युगान्तरे वा, न्याय्यात् पथः प्रविचलन्ति पदं न धीराः ।।	131
23	रामो राजमणिः सदा विजयते, रामं रमेशं भजे, रामेणाभिहता निशाचरचमूः रामाय तस्मै नमः । रामात् नास्ति परायणं परातरं, रामस्य दासोऽस्म्यहम्, रामे चित्तलयः सदा भवतु मे, हे राम ! मामुद्धर ।।	138
24	दधि मधुरं मधु मधुरं, द्राक्षा सिताऽपि मधुरैव । तस्य तदेव हि मधुरं, यस्य मनो यत्र संलगति ।।	143
25	स्पृशन्नपि गजो हन्ति, जिघ्रन्नपि भुजङ्गमः । हसन्नपि नृपो हन्ति, मानयन्नपि दुर्जनः ।।	148
26	सत्यानुसारिणी लक्ष्मीः, कीर्तिस्त्यागानुसारिणी । अभ्याससारिणी विद्या, बुद्धिः कर्मानुसारिणी ।।	153
27	यथा चित्तं तथा वाणी, यथा वाणी तथा क्रिया । चित्ते वाचि क्रियायां च, साधूनामेकरूपता ।।	157
28	नमस्त्रिभुवनोत्पत्ति - स्थिति - संहार - हेतवे । विष्णवेऽपार - संसार - पारोत्तरण - सेतवे ।।	162

द्वितीयो भागः

पाठ संख्या	सुभाषितपद्यानि	पृ० सं०
38	लालयेत् पञ्चवर्षाणि दशवर्षाणि ताडयेत् । प्राप्ते तु षोडशे वर्षे पुत्रे मित्रवदाचरेत् ॥	41
39	दातव्यं भोक्तव्यं सति विभवे सञ्चयो न कर्तव्यः । पश्येह मधुकरीणां सञ्चितमर्थं हरन्त्यन्ये ॥	47
40	न जातु दुःखं गणनीयं, न च निजसौख्यं मननीयम् । कार्यक्षेत्रे च त्वरणीयं, लोकहितं मम करणीयम् ॥	
	महानुभावसंसर्गः कस्य नोन्नतिकारकः । रथ्याम्बु जाह्नवीसंगात् त्रिदशैरपि वन्द्यते ॥	53
41	एकोऽहमसहायोऽहं कृशोऽहमपरिच्छदः । स्वप्नेऽप्येवंविधा चिन्ता मृगेन्द्रस्य न जायते ॥	59
42	सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामयाः । सर्वे भद्राणि पश्यन्तु मा कश्चिद् दुःखभाग् भवेत् ॥	65
43	दानेन भूतानि वशीभवन्ति, दानेन वैराण्यपि यान्ति नाशम् । परोऽपि बन्धुत्वमुपैति दानैर्दानं हि सर्वव्यसनानि हन्ति ॥	71
44	जाड्यं धियो हरति सिञ्चति वाचि सत्यम् मानोन्नतिं दिशति पापमपाकरोति । चेतः प्रसादयति दिक्षु तनोति कीर्तिम् सत्सङ्गतिः कथय किं न करोति पुंसाम् ॥	78
45	उद्योगिनं पुरुषसिंहमुपैति लक्ष्मीः दैवेन देयमिति कापुरुषाः वदन्ति । दैवं निहत्य कुरु पौरुषमात्मशक्त्या यत्ने कृते यदि न सिद्ध्यति कोऽत्र दोषः ॥	85
46	गते शोको न कर्त्तव्यो भविष्यं नैव चिन्तयेत् । वर्तमानेन कालेन वर्तयन्ति विचक्षणाः ॥	92

पाठ संख्या	सुभाषितपद्यानि	पृ० सं०
47	वसुमतीपतिना नु सरस्वती बलयता रिपुणापि न नीयते । समविभागहरैर्न विभज्यते विबुधबोधवुधैरपि सेव्यते ॥ यो यमर्थं प्रार्थयते तदर्थं घटतेऽपि च । अवश्यं तदवाप्नोति न चेच्छ्रान्तो निवर्तते ॥	98
48	गुणार्जने क्लेशमपार्थकं त्यज प्रगल्भतामाश्रय जीव्यते यया । गतः स काल सह साधुचेष्टितैरकृत्रिमैर्यत्र गुणैरजृम्भ्यत ॥	103
49	एकः स्वादु न भुञ्जीत एकश्चार्थान् न चिन्तयेत् । एको न गच्छेदध्वानं नैकः सुप्तेषु जागृयात् ॥	109
50	वरं मौनेन नीयन्ते कोकिलैरिव वासराः । यावत् सर्वजनानन्ददायिनी गीः प्रवर्तते ॥	114
51	प्राच्छादयति दुरात्मा सुजनः प्रकटयति काले परगुणान् । तिरयति भुवनानि तमस्तान्येव रविः प्रकाशयति ॥	120
52	परगुणपरमाणून् पर्वतीकृत्य नित्यम् । निजहृदि विलसन्तः सन्ति सन्तः कियन्तः ॥	128
53	तन्वी विग्रहिणी कलंकरहिता मुक्ताफलालंकृता सद्वंशा गजगामिनी पुलकिता दन्तप्रभाभासिता । श्यामा चारुपयोधरा सुरुचिरा पुंसां मनोहारिणी कामं वक्षसि ते पतन्त्वहरहः खड्गाग्रधारा रिपोः ॥	134
54	तास्तु वाचः समायोज्या याश्चित्ताकर्षणक्षमाः । स्वेषां परेषां विदुषां द्विषामविदुषामपि ॥ छिन्नोऽपि रोहति वृक्षश्चन्द्रः क्षीणोऽपि वर्धते । इति विमृशन्तः सन्तः सन्तप्यन्ते न लोकेऽस्मिन् ॥	143
55	बुद्धिर्या सत्त्वरहिता स्त्रीत्वं तत् केवलं मतम् । सत्त्वं चानयसंपन्नं तत्पुंशुत्वं न पौरुषम् ॥ उपभोगकातराणां पुरुषाणामर्थसंचयराणाम् । कन्यारत्नमिव गृहे तिष्ठन्त्यर्थाः परस्यार्थे ॥	152

पाठ संख्या	सुभाषितपद्यानि	पृ० सं०
56	किं वाससस्तत्र विचारणीयं वासः प्रधानं खलु योग्यतायाः । पीताम्बरं वीक्ष्य ददौ स्वकन्यां दिगम्बरं वीक्ष्य विषं समुद्रः ॥ वागर्थाविव सम्पृक्तौ वागर्थप्रतिपत्तये । जगतः पितरौ वन्दे पार्वतीपरमेश्वरौ ॥	159
57	गुरुर्ब्रह्मा गुरुर्विष्णुः गुरुर्देवो महेश्वरः । गुरुः साक्षात् परं ब्रह्म तस्मै श्रीगुरवे नमः ॥	166
58	तृणाल्लघुतरं तूलं तूलादपि च याचकः । वायुना न नीयतेऽसौ मामयं याचयिष्यति ॥	172
59	हस्तस्य भूषणं दानं, सत्यं कण्ठस्य भूषणम् । श्रोत्रस्य भूषणं शास्त्रं, भूषणैः किं प्रयोजनम् ॥ देयं भोः ! अधने धनं सुकृतिभिः नो संचितं सर्वदा । श्रीकर्णस्य बलेश्च विक्रमपतेरद्यापि कीर्तिः स्थिता ॥	179
60	सत्येन रक्ष्यते धर्मो विद्यायोगेन रक्ष्यते । मृजया रक्ष्यते रूपं कुलं वृत्तेन रक्ष्यते ॥ मणिर्लुठति पादेषु काचः शिरसा धार्यते । यथैवास्ते तथैवास्तां काचः काचो मणिर्मणिः ॥	187
61	द्वाविमौ पुरुषौ लोके स्वर्गस्योपरि तिष्ठतः । प्रभुश्च क्षमया युक्तो दरिद्रश्चैव दानवान् ॥	194
62	यं शैवाः समुपासते शिव इति ब्रह्मेति वेदान्तिनो बौद्धा बुद्ध इति प्रमाणपटवः कर्तेति नैयायिकाः । अर्हन्नित्यथ जैनशासनरताः कर्मेति मीमांसकाः, सोऽयं वो विदधातु वाञ्छितफलं त्रैलोक्यनाथो हरिः ॥	201